

विताउते जिलिन्स्काइते
रोबट
और निल्ली



Books Donated by:
Mrs. Purwa Bharadwaj and Mrs. Anupama Jha

विताउते जिलिन्स्काइते

रोबट और निनकी

कथाएं



रादुगा प्रकाशन
मास्को



पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई. रानी भासी रोड, नई दिल्ली-११००४५



राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-३०२००१

चित्र: अल्ला ब्लासोवा अनुवादक: संगमसाल मालवीय

Витауте Жилинскайте
РОБОТ И БАБОЧКА

На языке хинди

Vytaute Žilinskaite
THE ROBOT AND THE MOTH

Tales

In Hindi

©हिंदी अनुवाद • चित्र • संकलन • रादुगा प्रकाशन • मास्को • १९८८

©वागा • विलनियूस प्रकाशन • १९८४

सोवियत संघ में प्रकाशित

ISBN 5-05-002107-3

अनुक्रम

परीकथाएं: पुरानी और नई	6
जब नटखट हिमिका पिघली नहीं	10
जिज्ञासु केंचुआ	18
तारा मछली की कहानी	29
हास्य सम्मेलन	34
विजेता की पराजय	45
ज़िन्दादिल टिड्डा	52
छत पर फंस गया बिल्ला	59
बछेड़े का बदला	68
रोबट और तितली	76

परीकथाएं: पुरानी और नई

नन्हे पाठको ! क्या आपको परीकथाएं पसन्द हैं ? निस्सन्देह हैं । तभी तो यह पुस्तक आपने खोली है । अन्यथा शायद इसे न पढ़ रहे होते !

किसे कहते हैं परीकथाएं ? अक्सर बच्चे सोचते हैं कि इन कथाओं में खूबसूरत परियों का होना आवश्यक है । आखिर इनका नाम 'परीकथा' है न ! लेकिन नहीं । 'परीकथा' में 'परी' शब्द व्यापक अर्थ में लिया गया है : अनहोनी ! यह सच है कि पशु-पक्षी और जीव-जन्तु मनुष्यों की तरह बोल नहीं सकते, लेकिन परीकथाओं में वे हमारी तरह बोलते हैं, गीत सुनाते हैं और बायलिन भी बजाते हैं । इसी तरह परीकथाओं में बड़े-बड़े जादूगर, मायावी दैत्य और अलौकिक गुणों के सूरमा भी हो सकते हैं । तो क्या ये ऐसी

कहानियां हैं, जो कभी न थीं और न रही होंगी? यानी कल्पना की उड़ान? कोरी गप्प? लेकिन ऐसा नहीं! उनमें प्रेरक नसीहतें होती हैं। प्रायः परीकथाएं सुनते समय हम उनके रोचक पात्रों के साहसिक कारनामों पर ठहाके लगाते हैं, खुश होते हैं, भय से कांपने लगते हैं और कभी-कभी तो रो भी पड़ते हैं। पर कुछ भी हो उसे अन्त तक सुनकर ही हम चैन ले पाते हैं। और उन कथाओं के बारे में ज़रा सोचें, जो आपको बहुत प्रिय होती हैं। उन्हें तो आप बार-बार सुनना चाहते हैं। लेकिन जब पढ़ना सीख जाते हैं, तब उन्हें कई-कई बार रुचि से पढ़ते हैं। और कालान्तर में उनकी नसीहतें आपको रास्ता दिखलाती हैं।

परीकथाओं का रचयिता कौन है? किसलिए और किसके लिए इनका सृजन किया गया? पुराने ज़माने में जब किताबें नहीं थीं, कागज़ का आविष्कार न हुआ था, लोग लिखना-पढ़ना न जानते थे और वर्णमाला की खोज तक न हुई थी, तभी से परीकथाओं का सृजन हो रहा है।

स्पष्ट है कि उस ज़माने में स्कूल न थे। परीकथाएं ही ज्ञान-दीक्षा का माध्यम थीं जिनसे लोगों को साहस, सहृदयता, मेहनत, सजगता और ईमानदारी की शिक्षा दी जाती थी। ये कथाएं मनुष्य को कठिन परिस्थितियों से जूझना ही नहीं सिखातीं, बल्कि अत्याचारी का मुकाबला, कमज़ोर की रक्षा, गरीब की सहायता और कंजूस को सबक देने का काम भी बखूबी करती थीं। बच्चों में वे आत्मबल और मानवोचित स्वाभिमान को भी जगाती थीं! यही कथाएं उनकी स्मृतियों में आजीवन रच-बस जाती थीं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती थीं। मसलन नन्ही-मुन्नी बिटिया दादी-मां बनने के बाद ये परीकथाएं अपने नाती-पोतों को सुनाती थीं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह सिलसिला जारी रहता था। इस तरह हर कथावाचक इन्हें सुनाते समय अपने निजी अनुभवों को भी न्यूनाधिक रूप से इन कथाओं के साथ जोड़ता जाता था। और ये परीकथाएं मनुष्य के जिज्ञासु मन की नई-नई खोजों से निरन्तर समृद्ध होती रहती थीं। यह सिलसिला अतीत से वर्तमान तक चलता रहा है।

वास्तव में सबसे पहली परीकथा का सृजन किसी ने किया ही होगा। यह भूले-बिसरे ज़माने की हजारों साल पुरानी बात है। इसलिए उस आदि कथासर्जक का नाम अब तक अज्ञात है! वे कथाएं जिनके रचनाकारों के नाम अज्ञात हैं, लोककथाएं कहलाती हैं। हर देश में अपनी लोककथाओं का समृद्ध भण्डार है। लेकिन हम आज ऐसे अनेक प्रसिद्ध कथाकारों से परिचित हैं, जिन्हें परीकथा-जगत में बड़े आदर से याद किया जाता है: हान्स क्रिश्चियान आंडेर्सन, चार्ल्स पेराउत, ग्रिम-बंधु, अलेक्सान्द्र पुश्किन, विल्हेल्म हाउफ़, रुडयार्ड किपलिंग, सेल्मा लागरलेफ़, एन्टोनी पोगोरेल्स्की, लुइस कैरोल और एलान मिलने। इन कथाकारों की कृतियां विश्व के तमाम देशों में बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं। आज परीकथाएं बड़ी तीव्रता से विश्व-भ्रमण करती हैं। अब इन्हें सिर्फ़ दादियां या नानियां ही नहीं सुनातीं, बल्कि इन्हें किताबों में भी पढ़ा जा सकता है, टेलीविजन, सिनेमा और थियेटर के रंगमंच पर देखा जा सकता है। इस युग में हरेक जानता है कि किताबें कौन लिखता है। लेखक! और आज हर देश में अपने कथाकार होते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक की लेखिका विताउते जिलिन्स्काइते लिथुआनिया जनतंत्र की राजधानी विलनियूस

में रहती हैं। यह जनतंत्र सोवियत संघ के पश्चिमी भाग में बाल्टिक सागर के तट पर स्थित है। लिथुआनियाई लोगों का इतिहास बहुत पुराना है, उनके द्वारा अपने बहुसंख्य गीतों, गीति-कथाओं और लोककथाओं का संरक्षण प्रशंसनीय है। लिथुआनिया के विद्वानों द्वारा तीन लाख लोकगीतों का संकलन किया जाना कोई साधारण बात नहीं है। लिथुआनिया के इन गीतों को डायना कहते हैं। ज़रा कल्पना कीजिये! तीन लाख डायनाएं! इन सभी गीतों को प्रकाशित करने के लिए करीब एक हजार किताबें छापनी पड़ेंगी। लोकगीतों, गीति-कथाओं और परीकथाओं को आज भी लिथुआनियाई परिवारों में पर्वों और उत्सवों के दौरान सुना जा सकता है। यहां के लोग अपनी प्राचीन धरोहर — लोकसाहित्य — को कितना प्यार करते हैं, शायद इसका प्रमाण देने की जरूरत नहीं है। वहां के नगरों और कस्बों में परीकथाओं के नायक-नायिकाओं के नाम पर बने स्मारक हमें उनकी अद्भुत सुरुचि सम्पन्नता का परिचय देते हैं। मसलन दयालु वीरांगना नेरिंगा, एगले — सर्पों की रानी, सागर सम्राज्ञी युराते आदि के स्मारक उल्लेखनीय हैं। और अब नया युग आया — नई परीकथाएं लिखी जाने लगीं। इस तरह लिथुआनिया के बच्चे युगों पुरानी परीकथाओं के साथ-साथ आधुनिक परीकथाओं को भी बड़े चाव से पढ़ते हैं। इन में वे परीकथाएं भी हैं जिन्हें कथा-लेखिका विताउते जिलिन्स्काइते ने लिखा है। आधुनिक परीकथाओं में वे उन वस्तुओं के बारे में पढ़ते हैं, जो प्राचीन कथाओं में कतई नहीं मिलतीं। क्योंकि तब उनका आविष्कार ही नहीं हुआ था। यथा: टेलीविजन, रोबोट और सड़कों पर दौड़ते हुए विशाल रेफ्रिजरेटर ट्रक वगैरह!

शायद आप इस पुस्तक की लेखिका विताउते जिलिन्स्काइते के बारे में कुछ और जानना चाहेंगे। शायद वह आपकी कल्पना में कोई श्वेतकेशिनी दादी-मां की तरह हों पर वह सिर्फ़ किस्से सुनाने वाली दादी-मां नहीं हैं बल्कि वह एक सफल लेखिका भी हैं और साथ ही आधुनिक विचारों की एक हाज़िर-जवाब महिला। कार अपनी खुद ड्राइव करती हैं, घूमने की शौकीन हैं और ये कथाएं इलेक्ट्रिक टाइपराइटर पर टाइप करती हैं। कविता और कथा दोनों पर उनका समान अधिकार है। वह हास्य कथाएं, गम्भीर उपन्यास और थियेटर के लिए ड्रामे भी लिखती हैं। अब तक जिलिन्स्काइते की बहुत-सी किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। उन्हें लिथुआनिया और सोवियत संघ के अलावा विदेश में भी बड़ी रुचि के साथ पढ़ा जाता है।

जिलिन्स्काइते के पुत्र मर्यूस को मैं बचपन से जानता हूं। वह अब जीवविज्ञान का छात्र है। मर्यूस बचपन से ही तरह-तरह के बीटलों, तितलियों और जीव-जन्तुओं में रुचि लेता रहा है। इस पुस्तक को पढ़ते समय ऐसा लगेगा कि जीव-जन्तुओं के प्रति उसकी स्वाभाविक जिज्ञासा ने ही लेखिका को प्रभावित किया होगा। या इसका विपरीत प्रभाव रहा हो। संभव है कि मां की इन कहानियों ने ही मर्यूस में जीव-जगत के प्रति इतनी रुचि, इतना उत्साह पैदा किया हो। तरह-तरह के कीड़े, बीटल, पतंगे और तितलियां जिलिन्स्काइते की बहुत-सी कहानियों के नायक हैं।

जिलिन्स्काइते के कथा नायक फूलों की सेज पर नहीं सोते — वे दुख-दर्द की बारीकियों को समझते हैं। यह जीवन सिर्फ़ खुशियों का खज़ाना तो नहीं है न! कथा-लेखिका का ख्याल है कि बाल पाठकों से मानवीय पीड़ा, शोक और दुर्भाग्य को छिपाना नहीं चाहिए, बल्कि जीवन के कटु सत्य से उन्हें परिचित कराना चाहिए

और उसे भरसक समझाना चाहिए। उन्हें यह भी ज्ञात होना चाहिए कि धरती पर उनके आसपास कौन रहता है — उसे भी उनकी ही तरह जीने और चैन से रहने का हक है।

पुस्तक की इस भूमिका के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ। आशा है कि आपको ये कहानियाँ पसन्द आएंगी।

गेओरगी गेरासीमोव

जब नटखट हिमिका पिघली नहीं

एक हिमिका धीरे-धीरे चक्कर खाते हुए आसमान से नीचे उतरती आ रही थी। बसन्त का मौसम करीब था, धरती तपकर गरम हो चुकी थी। शायद वर्ष का यह आखिरी हिमपात था। इस हलके हिमपात में हिमकणों और हिमिकाओं की संख्या बहुत थोड़ी थी, पर वे आकार में बड़े और खूबसूरत थे। लेकिन वह हिमिका तो सबसे बड़ी और सबसे ज्यादा गोरी-चिट्ठी थी।

“ओह,” हिमिका ने नीचे की ओर देखा और फुसफुसाते हुए कहा: “कितनी विशाल है यह धरती, कैसा सुहाना है यहां का जीवन। बादल बाबा के पास रहते-रहते जी ऊबने लगा था।... लेकिन यह माजरा क्या है? आखिर वहां पर हो क्या रहा है?” हिमिका ने ज़रा चौकसी से देखा कि उसके अपने भाई-बन्धु धरती पर उतरते ही पिघल-पिघलकर नष्ट होते जा रहे हैं, जैसे कभी उनका अस्तित्व ही न रहा हो! सिर्फ भीगा हुआ गहरा धब्बा वहां पर झलकता रहता था, जहां उजले हिमकण गिरकर गायब हो जाते थे। यह धब्बा भी देखते ही देखते सूख जाता।

“तो क्या मैं भी पिघलने और नष्ट होने के लिए जन्मी हूँ?” हिमिका भय से कांप उठी। “तो क्या मैं भी मिट जाऊंगी? लेकिन मैं मरना नहीं चाहती। मैं इस लुभावनी धरती पर जीना चाहती हूँ। मैंने तो इसे पहली बार ही देखा है! आह, यह भाग्य कितना निर्मम है!”

इस तरह वह हिमिका रोते, आंसू बहाते, किस्मत पर पछताते और मायूसी से अपने उजले हाथ मलते धरती पर उतरती आ रही थी। आखिर वह कर ही क्या सकती थी?

ऊपर से बादल बाबा अपनी लाड़ली बेटी को रोता हुआ देख रहे थे, उसकी दुखभरी बातें सुन रहे थे, उनका जी भर आया।

“अच्छा, तो ठीक है,” बादल बाबा ने अपनी बेटी से कहा, जो बस धरती को छूने ही जा रही थी। “तुम्हारे अरमान पूरे हों। जाओ, तुम अब कभी पिघलोगी नहीं। हमेशा गोरी-चिट्टी और खूबसूरत बनी रहोगी। लेकिन आज के बाद फिर कभी मत रोना।”

“नहीं, अब मैं कभी नहीं रोऊंगी।” आंसू पोंछते हुए हिमिका ने बादल बाबा से वायदा किया।

वह धीरे से बसन्तकालीन गर्म धरती पर उतर आई। और सब से बड़ा आश्चर्य तो यह हुआ कि वह हिमिका पिघली ही नहीं। गोरी-चिट्टी बैसे नर्तकी-सी रूपवती हिमिका अपने सुडौल पैरों पर खड़ी थी। उसने चारों तरफ नज़र दौड़ाई, खुशी से फूली न समाई और फिर चरागाहों के आरपार बर्फ के नन्हे-नन्हे जूते खटखटाते हुए दौड़ गई।

इस बीच बादल बाबा बहुत दूर उत्तर की ओर उड़ गए। हिमपात थम गया। नीले आकाश पर अपना किरणजाल फैलाता हुआ सूरज चमकने लगा। जल्द ही हिमकणों और हिमिकाओं का नामोनिशान तक न रहा। चरागाह में जगह-जगह नन्ही-नन्ही कोपलें फूट रही थीं, डैंडेलियन के सुनहरे दीप जगमगाने लगे थे और नई घास हवा में सरसरा रही थी। अचानक एक गाय वहां आ पहुंची। जाड़े भर वह तंग गोशाला में बन्द रही। अब ज़रा राहत मिली तो नन्हे बछड़े की तरह खुशी से कूदती-फांदती और रंभाती हुई खुश हो रही थी। अचानक उसने उजली हिमिका को देखा:

“अरे, यह क्या बला है? या फिर इसमें कोई भला है?” वह आंखें फाड़कर जोर से चिल्लाई। “बाप रे, हिमिका? लेकिन यह पिघली क्यों नहीं?”

हिमिका ज़रा चालाकी से मुस्कराई। वह सहमी हुई थी। उसने गाय को तो कभी देखा न था।

गाय ने रंभाते हुए कहा: “लो, फिर आ गया जाड़ा। हिमपात जो सिर्फ जाड़े में होता है। हिमिकाएं भी तभी पाई जाती हैं। तो क्या अभी चरागाह में जाड़ा जमा बैठा है? हाय रे, मुझे तो सर्दी लग जाएगी। आफ़त है, आफ़त!” और वह भट से मवेशीखाने में वापस भाग गई।

हिमिका ने डरपोक गाय को एक तीखी, व्यंग्यभरी नज़र से देखा और आगे बढ़ चली। शीघ्र ही वह एक चौड़े राजमार्ग पर पहुंची। इस पक्की सड़क पर वह रात-दिन चलती रही। लेकिन सड़क थी भी इतनी लम्बी कि चुकने का नाम ही न ले। एक दिन हिमिका ने तेज़ी से दौड़ती हुई एक मोटरसाइकिल देखी। उसने आव देखा न ताव, उछलकर मोटरसाइकिल पर सवार हो गई और मजे से शहर चली आई!

शहर में लोग गर्मी के हलके कपड़े पहनकर घूम रहे थे। बच्चे आइसक्रीम खा रहे थे। हिमिका शहरी

सड़कों पर घूमती, अठखेलियां करती एक पार्क में पहुंची। पेड़-पौधों पर नई-नई चटक हरी पत्तियां दिखाई पड़ रही थीं और क्यारियों में रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। नन्हे-मुन्ने बच्चोंवाली गाड़ियों में सो रहे थे, जरा बड़े बच्चे तिनपहिया साइकिलें चला रहे थे। कबूतर चारा चुग रहे थे। चंचल हिमिका को यह सब बड़ा अच्छा लगा। वह सुखद आश्चर्य से देख रही थी। “कितनी भाग्यशाली हूं मैं कि बादल बाबा ने मेरी विनती सुन ली और मुझे पिघलने से बचा लिया।” हिमिका ने खुश होकर सोचा। “क्या यह दुख की बात न होती, अगर मुझे ऐसी प्यारी-प्यारी, सुन्दर-सुन्दर चीजें देखने को न मिलतीं!”

“भाइयो, वो देखो। वह रही हिमिका।” एक कबूतर ने अपने दोस्तों से चिल्लाकर कहा।

“सचमुच!” दूसरे कबूतरों ने हैरानी से कहा। “अरे हां, यह तो हिमिका है! न जाने क्यों पिघली ही नहीं। है भी तो कितनी खूबसूरत!”

बच्चे दौड़कर आ पहुंचे और उसे घेरकर उकड़ूं बैठ गए। वे उसे आश्चर्य से देखे जा रहे थे।

“शायद यह सफ़ेद प्लास्टिक की है!” उन्होंने आपस में कहा। “या हो सकता है कि कांच की बनी हो? लेकिन यह तो न प्लास्टिक की है, न कांच की। यह तो सचमुच एक हिमिका है। शायद जल्द ही पिघल जाए।...”

लेकिन शोख हिमिका सिर्फ मुस्कराई। उसे बड़ा अच्छा लगा कि सभी उसे ध्यान से देखते हैं, उसमें रुचि लेते हैं और पलक-पांवड़े बिछाए उसके पीछे-पीछे चलते हैं। उसने बच्चों से घिरे गोल घेरे के बीचोंबीच जमीन पर धीरे से पैर मारा, भट से अपनी बांहें फैला दीं और बर्फ़िले तूफ़ानवाला फुर्तीला नृत्य करने लगी। और कमाल यह कि उसके नन्हे-नन्हे पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। अब वह गोरी-चिट्ठी बूले नर्तकी की तरह लम्बे-चौड़े पार्क में थिरकती-सी उड़ रही थी। और उसके पीछे-पीछे बच्चे, यहां तक कि बड़े-बूढ़े भी प्रशंसा करते चल रहे थे:

“कितनी प्यारी है यह हिमिका! अद्भुत है! सचमुच प्रकृति का चमत्कार है!”

शाम हो चली थी। सड़क पर धुंधलका छा गया था और हिमिका के प्रशंसकों की भीड़ गायब हो चुकी थी। कबूतर अपने रैन-बसेरों में छिप चुके थे। बच्चे घर की राह पर थे। उनके सोने का समय हो चुका था। अकेली हिमिका ही वहां रह गई थी। वह बेतहाशा थकी हुई थी और उसका नन्हा हृदय जोर-जोर से धड़क रहा था। आखिर उस बेचारी को भी आराम की जरूरत थी! लेकिन अब वह रात कहां पर गुजारे? थोड़ी दूर पर एक क्यारी में ट्यूलिप के फूल खिले थे। हिमिका ने भट से फैसला किया और एक बड़े से फूल के अन्दर उछलकर जा पहुंची। फूल नरम और आरामदायक था। हिमिका मजे से पैर फैलाकर एक मखमली पंखुड़ी पर सो गई।

“आह!” ट्यूलिप सिहर उठा। “तुम कितनी ठण्डी हो! देखो, मैं सदीं से कांप रहा हूं!”

“घबड़ाओ नहीं, मैं जरा आराम करके चली जाऊंगी।” हिमिका ने वायदा किया।

“नहीं! नहीं!” ट्यूलिप ने जोरदार विरोध किया। “मुझ से यह सहा नहीं जाएगा। ऐसे तो मैं ठण्ड से अकड़ जाऊंगा! चलो, यहां दफ़ा हो जाओ!”

ट्यूलिप का फूल उसे ऐसा जोरदार भटका मारने लगा कि हिमिका के सामने निकल भागने और कोई नई जगह तलाशने के अलावा कोई और चारा न था।

निराश हिमिका एक लम्बी घास से चिपक गई।

“यह कौन-सी बला है?” घास ने गुस्से में आई। “सारे दिन मैं धूप खाती रही और अब इस बर्फीली ठण्ड में जमने की नौबत आ गई। ऐसे तो मैं पीली पड़कर मुर्झा जाऊंगी। अच्छा, तो तुम हिमिका हो। अरे बाबा, मेरी जान छोड़ दो। जाओ, भागो यहां से!”

हिमिका डरकर वहां से भाग निकली और सड़क के किनारे-किनारे चल पड़ी। वह बहुत थक चुकी थी और बड़ी मुश्किल से पैर घिसटती हुई चल रही थी। सब तरफ रात का सन्नाटा था। अन्धेरा ही अन्धेरा था। बस सड़क की फीकी बत्तियां जल रही थीं।

आकस्मात् हिमिका ने किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनी। वह ज़रा ठहरकर आहट लेने लगी। यह आवाज किसी खिड़की से आ रही थी। हिमिका ने एक झरोखे से अन्दर झांककर देखा और भट से कमरे में पहुंच गई।

एक बच्चा पलंग पर बैठा, सुबकियां ले-लेकर अपने चारों ओर नज़रें दौड़ा रहा था। लेकिन उसके मां-बाप शायद गहरी नींद में सो रहे थे और बेटे की आवाज नहीं सुन पा रहे थे। बच्चे को रोता देखकर हिमिका को बड़ा अफ़सोस हुआ। वह भट से पलंग पर चढ़कर फुर्ती से कलाबाजियां खाने लगी। वह इतनी जल्दी-जल्दी और खुशी-खुशी उसे बहला रही थी कि थोड़ी देर में ही बच्चा खिलखिलाकर हंसने लगा। उसके आंसू गायब हो गए।

“ला-ला-ला!” बच्चा गाने लगा। उसने अपनी नन्ही, गरम, गुलाबी हथेली हिमिका की तरफ बढ़ा दी। वह उसकी हथेली पर कूद गई। बच्चा उसे गाल पर मलने, गेंद की तरह उछालने लगा। और फिर उसे चखा भी। वह नींद आने तक हिमिका के साथ खेलता रहा। हिमिका को भी नींद आने लगी। वह बच्चे की छाती से सटकर सो गई और खुश थी कि गरम सुरक्षित जगह पर आराम कर रही है।

अचानक खांसने की आवाज सुनकर वह जाग गई। बच्चा इतनी जोर-जोर से खांस रहा था कि उसकी मां की नींद खुल गई। उसने आकर बेटे का माथा छुआ।

“अरे, बदन तो तप रहा है!” उसने थर्मामीटर लगाया और देखा। बुखार ४० डिग्री सेन्टीग्रेड था।

मां ने डाक्टर को फ़ोन किया। थोड़ी ही देर में एम्बुलेन्स गाड़ी पर डाक्टर आ पहुंचा।

“इसे निमोनिया है!” डाक्टर ने बच्चे की जांच-परख के बाद कहा।

“मालूम नहीं इसे ठण्ड कैसे लग गई,” परेशानी से मां ने कहा। “कमरा तो गरम है, कहीं से हवा नहीं आ रही है। शाम को जब मैं उसे सुला रही थी, वह बिल्कुल ठीक था।”

“उसे अभी अस्पताल ले जाना होगा।” डाक्टर ने कहा।

बच्चे को स्ट्रेचर पर लिटाकर एम्बुलेन्स गाड़ी तक ले जाया गया। उसकी पलंग खाली हो गई। हिमिका कम्बल के नीचे से निकली और खिड़की में से होकर बाहर उड़ गई। हिमिका को बड़ा अफ़सोस था — तो क्या उसके ही कारण बच्चा बीमार पड़ गया?

शहर में सभी गहरी नींद में सो रहे थे। सिर्फ एक खिड़की से, बाल्कनी की मुंडेर से होकर रोशनी आ रही थी। मेज़ पर एक लैम्प जल रहा था और इसके प्रकाश में हिमिका ने देखा कि पके बालवाला कोई व्यक्ति किताब पर सिर झुकाए बैठा है। वह रोशनदान के जरिए कमरे में जा पहुंची। बूढ़ा आदमी मेज़ के सामने बैठा बुदबुदा रहा था।

“मेरी ज़िन्दगी के अब ज्यादा दिन शेष नहीं रहे। मेरा जीवन व्यर्थ नहीं गया। मैंने विश्व ज्ञान के बारे में बहुत-सी किताबें लिखी हैं, यह भी लिखा है कि संसार में कुछ भी चिरजीवी नहीं, सब कुछ परिवर्तनशील है: हर फूल मुरझा जाता है, तारे बुझ जाते हैं, रात के बाद सुबह होती है। और बसन्त आते ही सूर्य की तेज़ किरणों से जाड़े की बर्फ पिघलती है... लेकिन यह तो क्या?”

बूढ़े विद्वान ने देखा कि एक बड़ी-सी हिमिका मेज़ पर उतर आई है।

“क्या सचमुच मेरी आंखें धोखा दे रही हैं?” बूढ़े आदमी ने आंखें मलकर ऐनक लगाई और फिर एक बार उसे गौर से देखा: सचमुच जाड़े की एक बड़ी-सी उजली हिमिका उसकी एक मोटी किताब पर जमी बैठी थी। बूढ़े आदमी ने उसे अपनी उंगलियों से छूकर देखा — वह तो बर्फ की तरह ठण्डी थी।

“यह कैसी विचित्र घटना है!” वह जोर से चिल्लाया। “यह तो अजूबों में एक अजूबा है... मेरी समझ से बाहर है... मुमकिन है कि मौसम बदल गया हो और उत्तरी हवाओं के कारण हिमपात होने लगा हो?”

वह व्यक्ति बाल्कनी पर निकल आया और अपने चारों तरफ गौर से देखने लगा। बाहर तो गरम और सूखा मौसम है और न उत्तरी हवाएं ही चल रही थीं, न हिमपात ही हो रहा था। वह व्यक्ति अपने अध्ययन कक्ष में फिर लौट आया, जहां पर तपते हुए लैम्प के ठीक नीचे एक खूब ठण्डी हिमिका चमक रही थी।

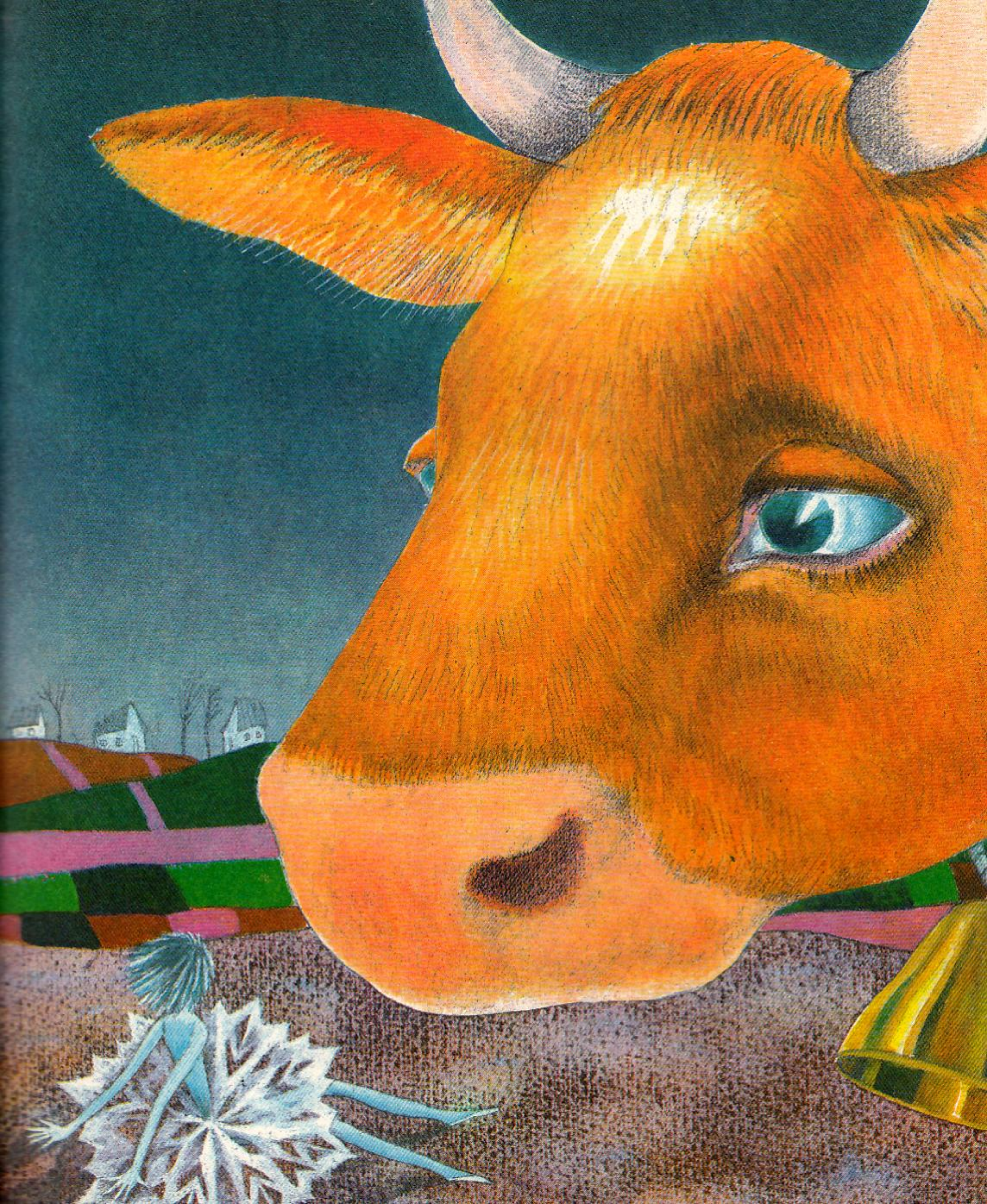
“कतई विश्वास नहीं होता।” विद्वान बुजुर्ग ने ठण्डी सांस लेकर कहा। “लगता है कि न पिघलने-वाली हिमिकाएं भी होती हैं जिनके ऊपर गर्मी का असर नहीं पड़ता। और उन पर प्रकृति के नियम लागू नहीं होते। तो मैं अब तक अपनी सभी किताबों में गलत बातें लिखता रहा। क्या मेरे जीवन भर की मेहनत बेकार हो गई? क्या मुझे यह कोसते हुए मरना होगा कि मैंने अपने अज्ञान से दूसरों को गुमराह किया है?” बूढ़े ने अपने भुर्रीदार हाथों से चेहरे को छिपा लिया। उसके स्वर में निराशा और पश्चाताप की एक ऐसी झलक थी कि हिमिका का दिल दुख से दहल उठा। उसे शर्म आई। वह मेज़ पर से उठी और रोशनदान से उड़कर बाहर निकल गई।

“तो मैं दूसरों की परेशानियां ही बढ़ाती हूं, उन्हें दुखी करती हूं। आखिर क्यों है ऐसा?” उसने मन ही मन खुद से पूछा।

हिमिका ज़मीन पर उतरकर एक घर के तहखाने में पहुंची और एक गहरे अन्धेरे सूराख में घुस गई।

“मैं अब यहीं रहकर अगले जाड़े का इन्तज़ार कर लूंगी। अकारण किसी का जी दुखाने से क्या फ़ायदा? और इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता न है।”

सूराख में अन्धेरा ही अन्धेरा था, वहां सीलन और फफूंदी की दुर्गन्ध आ रही थी। कभी-कभी एक कीड़ा या मकड़ी इसमें रेंगती हुई चढ़ आता, लेकिन हिमिका की बर्फ़ीली सांस को महसूस करते ही वहां



से रफूचक्कर हो जाती। आखिरकार उसे एकान्त अन्धेरे से इतनी नफरत हो उठी कि वह उकताकर सूराख से बाहर निकल भागी।

शहर में खूब गर्मी पड़ रही थी। एक आइसक्रीमवाला अपनी ठेला-गाड़ी के पास जोर-जोर से आवाज लगाकर तरह-तरह की आइसक्रीम बेच रहा था :

“जायकेदार ठण्डी आइसक्रीम! चाकलेट, साफ्टी और क्रीमवाली आइसक्रीम!”

हिमिका आइसक्रीमवाले के पास जा पहुंची और आइसक्रीमवाले की नजर बचाकर ठेला-गाड़ी में घुस गई। भीतर तरह-तरह की आइसक्रीमों के ढेर लगे हुए थे। अचानक अपने भाई-बिरादर — बर्फ के बड़े-बड़े टुकड़े — को देखकर हिमिका फूली न समाई।

“भाइयो! मुझे बड़ी खुशी है कि आप भी मेरी ही तरह न पिघलनेवाले बिरादरी के हैं। क्या आप कभी नहीं पिघलेंगे? अहा, यह तो बड़ी अच्छी बात है। अब मैं अकेली नहीं हूँ।” और वह पास ही रखे एक बर्फ के टुकड़े की तरफ बढ़कर उसे गले लगाने लगी।

पर इसे हो क्या रहा है? अजीब धुआं-सा उठ रहा था और वह क्षण-प्रतिक्षण दुबला होता जा रहा था। लेकिन अभी गलकर पानी नहीं बन पाई थी। हिमिका ने उसे खूब ध्यान से देखा और वह समझ गई कि यह बर्फ उसकी तरह असली नहीं है। यह तो कारखाने की नकली बर्फ है, गैस से बनी है!

वह बुरी तरह निराश होकर आइसक्रीमवाली ठेला-गाड़ी से निकल भागी। बाहर सूरज से उसकी आंखें चौंधिया गईं। सड़क पर धूल धूसरित कारें दौड़ रही थीं। धूप से बेहाल गौरैयां पानी के एक छोटे डबरे के किनारे प्यास बुझा रही थीं। अपने-अपने थैलों में खरीद-फरोस्त का सामान संभाले हुए राहगीरों की बेशुमार भीड़ जल्दी-जल्दी कहीं बढ़ी जा रही थी। हर आदमी व्यस्त नजर आ रहा था। सिर्फ हिमिका के ही पास कोई काम न था और न उसे कहीं जाने की जल्दी ही थी। धूप से भरी, भीड़-भाड़वाली सड़क पर वह बेचारी खुद को अकेला महसूस कर रही थी। ऐसी उलझन तो उसे तहखानेवाले अन्धेरे सूराख में भी नहीं हुई थी। इसी क्षण उसे अपने गौरवर्णी भाई-बहनों का ख्याल आया। उसे ईर्ष्या होने लगी कि वे ज़मीन पर उतरते ही पिघले और हमेशा के लिए गायब हो गए। उन्हें क्या पता कि अपने भाई-बहनों से दूर यह अकेलापन कितना खलता है? और न वे किसी के दुख का कारण ही बने। सिर्फ वही एक ऐसी अभागिन थी, जो भुलसती धूप में अपनी दर खोजते हुए छटपटा रही थी, प्रकृति के नियम तोड़ती सभी को हैरान कर रही थी। हिमिका ने भारी मन से एक ठण्डी सांस ली और बिजली के खम्भे से टिककर खड़ी हो गई। बेचारी, अब करे भी तो क्या? अचानक उसने खूब ऊपर आकाश की ओर देखा और एक रास्ता ढूँढ़ ही निकाला। वह बिजली के खम्भे पर चढ़ गई और अपनी बांहें आकाश की ओर फैला दी:

“बादल बाबा!” वह जोर से चिल्लाई। “प्यारे बादल बाबा! मैं पिघलना चाहती हूँ। पिघलकर मिटना चाहती हूँ। सुन रहे हो, बादल बाबा? मैं अकेली ऊब गई हूँ। मुझे यहां से बुला लो न।”

लेकिन आसमान पर अब दूसरे बादल तैर रहे थे। उन्हें भला न पिघलनेवाली उस हिमिका के बारे में क्या पता? वे नीले आकाश में अपनी राह चले जा रहे थे। और उनके ठीक पीछे नए अजनबी बादल उड़ते आ रहे थे। वे भी बहरे ही थे। बेचारी हिमिका का अनुरोध अनसुना रह गया।

कोई भी उत्तर न पाकर हिमिका नीचे उतर आई और फिर से सड़क पर चलने लगी। निरुद्देश्य और एकाकी जीवन से दुखी हिमिका दर-दर भटकने लगी।

अन्त में वह एक बड़े बगीचे में आ पहुंची और गर्मी से मुरझाए हुए डेजी के पौधे के करीब बैठ गई। वह डेजी की टहनी से चिपटी और फूट-फूटकर रोने लगी। आंसू बह निकले और तब उसने महसूस किया कि वह पिघल रही है। उसका स्वरूप पारदर्शी जल की एक बड़ी-सी बूंद में बदल रहा है। अब पता चला कि बादल बाबा ने उसे क्यों चेतावनी दी थी: “देखो, आज के बाद फिर कभी मत रोना।”

“धन्यवाद दोस्त!” हिमिका को पिघलते समय डेजी की आवाज सुनाई दी। “तुमने मुझे नया जीवन दिया है, जब मैं प्यास से मर रहा था।...”

जिज्ञासु केंचुआ

सुबह-सुबह एक मछलीमार भील की ओर चल दिया। कई बंसियों के अलावा वह एक कुदाली भी लिए था। भील के किनारे पहुंचकर वह बरसाती केंचुओं की तलाश में ज़मीन खोदने लगा।

ज़मीन के नीचे केंचुओं की बस्ती में भीषण हाहाकार मच गया। जान का खतरा महसूस करते ही केंचुए पत्थरों से टकराती कुदाली से जान बचाकर गहराई में घुसने और दूर भागने लगे। सभी बेतहाशा भाग रहे थे। लेकिन एक नौजवान केंचुआ इस हंगामे से न तो भयभीत था और न उसने भागने की कोई कोशिश ही की। वह अन्धेरे भूगर्भ के जीवन से बहुत ऊब चुका था। वह अक्सर नई दुनिया की सैर करने के और कुछ कर दिखाने के सपने देखता था। अभी नौजवान जो था। काश! इस हाहाकार के बीच उसे वह परिवर्तन मिल पाता जिसका वह सपना देखता रहा है! लेकिन यह अवसर मत चूको! और जब उसके सभी

भाई-बन्धु सिर पर पांव रखकर भाग रहे थे, तब यह साहसी नौजवान भनभनाती कुदाली की ओर निर्भीक बढ़ता जा रहा था।

“अरे, तू क्या पागल हो गया है?” एक बूढ़े केंचुए ने उसे रोकना चाहा। “कहां जा रहा है? लौट आ, अभी वक्त है।”

लेकिन उस साहसी नौजवान ने इस चेतावनी की परवाह न की। वह सीधे उस ओर रेंगता चला जा रहा था, जहां से कुदाली चलने की आवाज आ रही थी।

“भाइयो, बचाओ!” उसे एक महीन आवाज सुनाई दी। “मैं डर से जकड़ गया हूं। हिल-डुल नहीं सकता!”

“हाय, हाय, हाय!” दूसरे केंचुए चीखे-चिल्लाए, जो कुदाली से बचकर भाग न पाये थे, “हमारी मौत आ गई है! मौत!”

लेकिन वह हिम्मती केंचुआ तब तक रेंगता रहा, जब तक कि कुदाली तक न पहुंच गया। और अचानक लगा कि उसे उजाले की ओर खींचकर निकाला जा रहा है। फिर तम्बाकू की गन्धवाली दो मोटी उंगलियों ने उसे पकड़ा और एक डिब्बे में डाल दिया, जहां पहले से ही सैकड़ों केंचुए कुलबुला रहे थे। वे सभी ऐसे बिलबिला रहे थे, जैसे उन्हें किसी गरम कड़ाही में डाल दिया गया हो। वे रोते-चीखते, शिकायतें करते, बचाओ-बचाओ का कोहराम मचाते छटपटा रहे थे। लेकिन उनकी मदद करता भी तो कौन!

अब शुरू हुआ एक सबसे भयानक दौर: मोटी उंगलियां डिब्बे के अन्दर से एक के बाद एक केंचुए को बाहर निकालती जातीं और उन्हें कंटिया चुभोती जातीं। फिर भील की सतह पर छपाक की आवाज के साथ उनकी अन्तिम चीख भी गायब हो जाती। और इससे अधिक न तो किसी ने कुछ देखा था, न कुछ सुना।

देखते ही देखते इस कहानी के जिज्ञासु नायक की बारी आ पहुंची। मोटी उंगलियों ने इस केंचुए को भी पकड़कर बाहर निकाला और पैनी कंटिया को उसकी पीठ में चुभो दिया। लेकिन वह न तो चीखा, न चिल्लाया। वह तो उस गहन पीड़ा को सहने के लिए तैयार ही था। इस क्षण भी, भले ही उसे बहुत कष्ट था, वह साहसिक यात्राओं के सपने देखना न भूला था।

हवा में पतली डोरी सनसनाते हुए लहराई, जल की सतह पर वह केंचुआ जा टकराया। छीटे उड़े और डोरी से बंधे भार से खिंचता हुआ वह रहस्यमय जललोक में धीरे-धीरे उतरते हुए जा पहुंचा।

अपरिचित शोरगुल और तरह-तरह की अनजानी गन्ध से वह मदहोश हुआ जा रहा था। जल की शीतल, स्नेहिल उंगलियों ने उसके घाव को धीरे से छुआ, सहलाया और देखते ही देखते उसका दर्द गायब हो गया। उसके आसपास पतली लम्बी जल-घास लहराती हुई कभी-कभी उसे छू जाती थी। और नीचे शायद भील के तल पर एक सीपी मस्ती से कोई गीत गुनगुनाती चली जा रही थी।

“लो, शुरू हो गया चिरप्रतीक्षित परिवर्तन,” केंचुए ने खुद को बधाई दी, पर एक भील निवासिनी

से शिष्टाचार निभाना नहीं भूला, "सुप्रभात मैडम!"

लेकिन किसी ने उत्तर न दिया। सिर्फ बुलबुले ऊपर उठने लगे। यह थी सीपी, जो जल्दी से अपना कपाट बन्द करती हुई एक तरफ लुढ़क गई थी। वह ऐसे शिष्टाचार की अभ्यस्त न थी और केंचुए की बन्दगी से चौंकर डगमगा गयी थी।

"मैं इस जगह पहली बार आया हूँ," केंचुए ने अपनी बात आगे बढ़ाई। यद्यपि उसको मालूम न था कि कोई उसकी बात सुन भी रहा है। "पहले कभी भी आपके यहां आने का अवसर न मिला था। मैं तो परदेशी हूँ। शायद आप में से कोई हमारे यहां आया हो?"

एक नौजवान मछली, जो शायद केंचुए की तरह निर्भीक और बहादुर थी, जरा करीब आने का साहस करके पूछने लगी:

"भाई, तुम किस जगह की बात कर रहे हो? आखिर तुम्हारा घर कहां है?"

"आप से मिलकर खुशी हुई!" उसकी आवाज सुनते ही केंचुए ने उत्साहित होकर कहा, "आपकी इस रुचि के लिए धन्यवाद। मेरा घर जमीन के नीचे है। हम लोग वहां गहरे अन्धकार में कंकड़ों, पेड़-पौधों की जड़ों और नन्हे-नन्हे कीड़े-मकोड़ों के बीच रेंगते रहते हैं।"

देखते ही देखते, वहां तरह-तरह की मछलियों की भीड़ इकट्ठा हो गई। वे उसकी बातें ध्यान से सुनने लगीं।

"कैसा विचित्र कीड़ा है?" उन्होंने आपस में कहा, "कहीं यह हमें कंटिये में फंसाना न चाहता हो?"

"आप लोग मुझे इतना घटिया समझकर मेरी भावना को ठेस पहुंचा रहे हैं," केंचुए ने तपाक से कहा। "मुझे खुद को इस कंटिया पर लटका दिया गया है। मेरे जानी दुश्मन को भी यह नसीब न हो। फिर आप लोगों को मैं इस कष्टदायक फन्दे में क्यों फंसाऊंगा? खैर भाग करना, मैं तो इन बातों में उलझकर नमस्ते करना ही भूल गया।"

"नमस्ते भाई," इस बार मछलियों ने मित्रवत उत्तर दिया।

बेचारी सीपी जो सहमकर एक ओर लुढ़क गई थी और जिसने अपने कपाट बन्द कर दिए थे, अब जरा करीब तैर आई। केकड़ा अपनी उलटी चाल से आ पहुंचा। बड़े आकार की ब्रीम मछली भी पीछे न रही। फुर्तीली लोच मछली, जो देखने में केंचुए जैसी थी, कीचड़ के अन्दर से निकल आई।

"तुम इस ढुक पर लटके हो, न चीखते हो, न किकियाते हो। मुझे तो हैरानी होती है कि तुम किकियाते तक नहीं," लोच मछली ने केंचुए से कहा।

"आखिर मैं किसलिए किकियाऊं?" केंचुए ने आश्चर्य से पूछा।

"इसलिए कि तुम्हारी बिरादरी के सभी लोग यहां आते ही जोर-जोर से चीखने-किकियाने लगते हैं। किसी की आह, तो किसी की ओह ही सुनते हैं।"

"या फिर वे डर के मारे होश ही खो बैठते हैं," ब्रीम मछली ने जरा वजनदारी से बात आगे बढ़ाई।

“हमारे यहां एक कहावत प्रचलित है,” फुर्तीली मछली ने कहा, “पानी में केंचुए की तरह छटपटाना।”

“अब देखिये न,” केंचुए ने स्वजनों का पक्ष लेते हुए कहा, “वे बेचारे तो डर जाते हैं। जब कि हम लोग ऐसी बातें बड़ी-बड़ी हिंसक मछलियों के बारे में सुनते हैं कि...”

अभी वह बात पूरी न कर पाया कि अधीर मछलीमार ने ऊबकर उस निश्चल बंसी को ऊपर खींचा और केंचुए को बाहर निकाला। फिर धागे में बंधी कंटिया को खूब दूर फेंक दिया। केंचुए के लिए यह अच्छा ही हुआ। कम से कम उसे खुली हवा में सांस लेकर ज़रा राहत ही मिल गई। भील में तो उसका दम ही घुटा जा रहा था।

“तो लीजिये मैं फिर आ गया!” वह वापस लौटते हुए खुश था। “मैं आप से एक सवाल पूछना चाहता हूं—क्या आपको हर समय पानी में तैरते हुए बोरियत नहीं होती? यहां तो सांस लेने भर की हवा नहीं आती?”

“सचमुच हमें भी ऊब होती है,” फुर्तीली मछली ने उत्तर दिया। “अरे भाई, नई-नई जगह की सैर के लिए मैंने तो अपना सब कुछ लुटा दिया होता। मैं एक बार उछलकर भील के किनारे पहुंची भी थी। लेकिन वहां मेरा दम घुटने लगा और बाल बाल बचकर भील में लौट आई।”

“हमारे विचार तो आपस में काफ़ी मिलते-जुलते हैं,” केंचुआ खुशी से चिल्लाया। “मैं भी जान-बूझकर मछलीमार के चंगुल में चला आया, ताकि रोशनी की दुनिया में कुछ देखा-समझा जा सके। लेकिन मैं यहां आकर थोड़ा दुखी हूं। मैं यहां सांस नहीं ले सकता,” केंचुए ने अनिच्छा से कहा।

यह सुनते ही लोच मछली भट से ऊपर गई, उसने पानी के बाहर सिर निकाला, अपने गलफड़ों में ताज़ी हवा को भरा और वापस लौट आई। उसने ताज़ी हवा के बुलबुले केंचुए के आसपास बिखेर दिए।

“ओह, धन्यवाद। जान में जान आ गई,” केंचुए ने ज़रा राहत की सांस ली। “सचमुच आप सब कितने अच्छे हैं! हार्दिक धन्यवाद।”

अब तक उसके पास भील के निवासियों की अच्छी-खासी भीड़ जमा हो गई। भीड़ में अनेक पर्च मछलियां, सैकड़ों सीपियां, रोच और लोच मछलियां तथा दर्जनों कीड़े-मकोड़े शामिल थे। वे आपसी झगड़ों को भुलाकर पृथ्वीवासी की बातें बड़े ध्यान से सुनते रहे।

“मेरे बाप-दादे, उनके बाप-दादों के बाप-दादे और फिर उनके बाप-दादों के बाप-दादे, ज़रा संक्षेप में कहें तो हमारे पूर्वज,” केंचुआ अपने खानदान का इतिहास बताने लगा, “बेचारे न जाने कब से ज़मीन खोदते चले आ रहे हैं। लेकिन हमारे पूर्वज पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह बतलाते रहे हैं कि किसी ज़माने में केंचुए जलचर थे। सिर्फ़ भूख और तरह-तरह के खतरों से बचने के लिए वे सूखी ज़मीन की ओर भाग आए और तब से ज़मीन के नीचे रहने लगे। आप सोचते होंगे कि ज़मीन खोदने का काम बड़ा दिलचस्प होगा? मैं तो कहता हूं बड़ा घिनौना काम है। पर है तो एक उपयोगी कार्य। जैसे ही हम ज़मीन में सुराख

करते जाते हैं, खाने की चीजें मिलती जाती हैं। मिट्टी के साथ इन्हें खाकर गुजारा करते हैं। इस तरह भूख से जूझते हैं।”

“बाप रे बाप, कण भर खाना और इत्ती ढेर-सी मेहनत!” फुर्तीली मछली ने सहानुभूति प्रदर्शित की।

“इतने से ही छुटकारा मिले तब न! हमारे लिए सबसे बड़ा खतरा है छछूंदरों का! ज़रा इस दानवाकार जानवर की कल्पना तो कीजिये। यह अन्धा-सा, मोटा, भुक्खड़ जानवर होता है। ये शैतान हमारी आधी नसल ही हड़प गए। एक बार मैं खुद उनकी चपेट में आते-आते ...”

और अभी केंचुए की बात पूरी न हो पाई थी कि फिर उस मछियारे ने बंसी को खींचा, केंचुए को बाहर निकालकर देखा, कोई गड़बड़ी न थी। उसने फिर से उसे पानी में फेंक दिया।

“दोस्तों के पास लौट आया — कितनी खुशी की बात है!” गहरे तल की ओर धीरे-धीरे डूबते हुए वह बुदबुदाया। भले ही पहले की तरह उसने इस बार भी वह चोट सह ली जो उसे पानी की सतह पर टकराने से लगी थी।

भील के तल पर उसका पहले से इन्तज़ार किया जा रहा था। केकड़ों ने वहां ताज़ी गाद खोदकर केंचुए के लिए नरम-नरम बिछौना-सा बना दिया था।

“भाई, यह तुम्हारे लिए है, ताकि आराम से सांस ले सको,” परिचित केकड़े ने समझाया। “यह भील की गाद है, इस तलछट में प्राणवायु अधिक होती है। यह तुम्हें दम घुटने से बचा-एगी।”

थके-मांदे केंचुए ने महसूस किया कि जीवनदायी आक्सीजन के बुलबुलों ने उसके अन्दर एक नई शक्ति भर दी है।

“बहुत-बहुत धन्यवाद, मेरे दोस्तो,” रूंधी आवाज़ में केंचुए ने आभार प्रगट किया, “काश, मैं आपके इस उपकार का बदला चुका पाता!”

“हां, तो भाई, छछूंदरवाली बात तो अब तक अधूरी ही रह गई,” अधैर्य से जिज्ञासु सीपी ने याद दिलाई।

“खैर, उसे तो गोली मारो!” केंचुए ने हिचकिचाते हुए कहा। “पर दुश्मन तो और भी हैं। मसलन चिड़ियों के बारे में क्या कहेंगे आप? वर्षा के बाद हम लोग ज़मीन के नीचे सांस नहीं ले पाते। दम घुटने लगता है। चारों तरफ पानी ही पानी रहता है, तब हम लोग रेंगकर ऊपर चले आते हैं। और चिड़ियां हमारी घात में बैठी रहती हैं। हम पर हमले करती हैं।”

“चिड़ियां तो हमारी भी दुश्मन हैं। खासकर बत्तखें और दूसरे जल पक्षी। ...” मछलियों ने ठण्डी सांसें लीं।

अचानक सन्नाटा छा गया और सारे जीव भट से इधर-उधर हो गए: केंचुए की तरफ एक भारी-भरकम काली पाइक मछली बढ़ती चली आ रही थी जो लम्बे टारपीडो-सी दिखाई पड़ रही थी। यह भील की रानी थी। अक्सर वह इस समय भील के गहरे सोते में मजे से सोया करती है। लेकिन आज उसकी नींद बीच

में ही खुल गई है। शायद वह केंचुए के पास एकत्रित भीड़ के शोर-शराबे से जाग गई हो। भील की रानी क्रोध से तमतमाई हुई थी।

“बताओ, यहां क्या हो रहा है?” हिंसक पाइक मछली ने गुराकर, पैंने दांतोंवाला खूब बड़ा-सा मुंह खोल दिया। “मेरी आज्ञा के बिना यहां सभा करते हो?”

किसी ने उसका उत्तर न दिया: जो भाग न पाए थे, उनकी घिग्घी बंध गई।

“कृपया माफ़ कीजिएगा। गुनहगार तो मैं हूं। यह सब मेरी वजह से हुआ है,” केंचुए ने हिम्मत से काम लिया। “नमस्ते, महोदया।”

“नमस्ते,” अनचाहे ही भील की रानी ने उत्तर दिया।

“मैं यहां पर आपके मित्रों को मोटे, कमीने छछूंदरों के बारे में बता रहा था। वे अब तक हमारे बहुत-से रिश्तेदारों को खा चुके हैं,” केंचुए ने सौजन्यता से कहा, “फिर मैंने चिड़ियों के बारे में बताना शुरू किया। मेरे ख्याल से हमारे दुश्मन एक ही जैसे जल पक्षी...”

“वे मेरे दुश्मन तो नहीं हैं,” पाइक ने घमण्ड से कहा, “बत्तख को ही लें, उसकी टांग पकड़ी और... उसे समूचा ही निगल लिया।...” उसने यह कह कर अपने घड़ियाली जबड़े खोल दिए। फिर एक चटखारा लेकर मुंह बन्द कर लिया। “कैसा स्वादिष्ट आहार होता है बत्तखों का?”

“मैडम, आप भी कमाल करती हैं? एक बार मैं समूची बत्तख निगल सकती हूँ? कितनी बहादुर और शक्तिशाली हैं आप,” केंचुआ प्रशंसा करते हुए खुशी से उछल पड़ा। “मेरे भाई-बन्धु तो इसे सुनकर दंग ही रह जाएंगे। वापस लौटने पर मैं आपके बारे में उन्हें जरूर बताऊंगा। अफ़सोस है कि मेरे आंखें नहीं हैं। काश, मैं आपको देख भी सकता! कितनी शक्तिशाली और निर्भय हैं आप।”

यह सुनते ही पाइक मछली का गुस्सा ठण्डा पड़ गया, यहां तक कि वह धीरे-से मुस्करा दी। भील के इतिहास में यह एक अनहोनी घटना थी।

“तुम एक अच्छे नौजवान लगते हो!” मछली ने केंचुए से कहा। “तुम इस हुक पर चुपचाप लटके हो, न दहाड़े मारकर रोते हो, न शिकायतें करते हो, और न दया की भीख ही मांगते... और तो और, सभी में रुचि लेते हो।...”

केंचुए ने पाइक मछली के प्रति आभार प्रगट करना चाहा। उसने मुंह खोला ही था कि अपनी बात कह न पाया और उसे ऊपर खींच लिया गया। लेकिन शीघ्र ही वह पहलेवाली जगह से थोड़ा दूर चला आया। केकड़े के एक समूह ने भट से “आक्सीजन की तकिया” उसके सिर के नीचे लगा दी। यह भील की गाद का एक नन्हा-सा ढेर था।

“सच कहूं तो ऐसी उठा-पटक मेरे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक नहीं!” उसने जरा दुखी मन से कहा। “खैर, सह लेंगे! इससे भी बुरी हालत हो सकती थी।”

“लेकिन केंचुए कभी मन-बहलाव भी करते हैं? कभी उन्हें नींद भी आती है, या रात-दिन जमीन ही खोदते रहते हैं?” पाइक ने पूछा।

“जी नहीं, वक्त पर आराम भी करते हैं। रातों में वयोवृद्ध केंचुए भूगर्भ से बाहर निकलकर नरम





धरती पर भूकियां लेते हैं। और मुझ जैसे नौजवान फुर्ती से रेंगकर दौड़ते व प्रतियोगिता में हिस्सा लेते हैं, समूह में भूमर नाचते हैं।”

“और हम लोग भी भूमर नाचते हैं,” छोटी मछलियों ने खुशी से चिल्लाकर कहा, “अगर चाहते हो तो नाचकर दिखा भी सकते हैं?”

“बेशक खुशी होगी। मैं देख नहीं सकता, पर महसूस तो कर ही सकता हूं!”

कई ब्रीम मछलियां एक बड़े पत्थर की ओर गईं, जहां पालिथिन के थैले में एक ट्रान्जिस्टर रखा था। एक मछियारे ने कभी संयोग से उसे भील में गिरा दिया था। बाद में यह डूबा हुआ ट्रान्जिस्टर भील के निवासियों की सामूहिक सम्पत्ति बन गया। चतुर केकड़ों ने ट्रान्जिस्टर का स्विच घुमाया और मधुर संगीत गूँजने लगा। नन्ही मछलियां संगीत की धुन पर भूमर नाचने लगीं। देखते ही देखते कुछ बड़ी मछलियां भी नृत्य में शामिल हो गईं। यहां तक कि पाइक मछली ने भी अपने गलफड़े और दुम को धीरे-धीरे लहराना शुरू कर दिया। भील के तल पर सीपियां तालियों की तरह अपने कपाट बजाने लगीं। और केकड़े अपने पंजे ठकठकाने लगे। पर लोच मछलियों के क्या कहने! वे कभी गेंद की तरह गोल हो जातीं, कभी एक दूसरे का पीछा करतीं और महीन आवाज में कोई गीत गाती जा रही थीं। ... भील में सभी खुशी से नाच उठे। जल-वनस्पतियां तक थिरकने लगीं, भील की तलछट भी तरंगित होकर लहराने लगी। सचमुच यह एक जल-महोत्सव जो था। अचानक पाइक मछली गायब हो गई। शायद नाराज हो गई है? या सोने चली गई है? लेकिन नहीं, वह फिर दिखलाई दी। मछलियों ने देखा कि वह अपने मुंह में कोई चमकीली चीज दबाए है। मछलियों ने उसका रास्ता साफ किया, वे तितर-बितर हो गईं। पाइक मछली ने केंचुए के पास आकर गम्भीर स्वर में कहा:

“ओ, जिज्ञासु केंचुए! शिष्ट और सौम्य केंचुए! तेरा आचरण सराहनीय है। तेरी बहादुरी श्रेष्ठ है। हम तेरे साहस की प्रशंसा करते हैं और पुरस्कारस्वरूप तुझे यह कीमती तमगा भेंट करते हैं।” यह कहकर उसने केंचुए के बगल में हुक पर वह तमगा लटका दिया। यह तांबे का एक गोल तमगा था जिसके बीच में सूरख बना हुआ था।

“लेकिन यह मिला कहां था?” मछलियां आपस में फुसफुसाने लगीं।

“यह हमारा कुल-चिन्ह है,” रानी मछली ने गर्व से कहा। “यह मेरी परदादी को भील के तल पर मिला था और तब उन्होंने इसे संभालकर रख दिया था। आज से सैकड़ों वर्ष पहले जाड़ों के समय इस भील के किनारे एक भीषण युद्ध हुआ था। रूसी सेनाओं ने आक्रमणकारियों को बर्फ से जमी भील पर खदेड़ दिया था। वे लोहे के भारी-भारी कवचों में जकड़े हुए थे। उनका भार बर्फ बर्दाश्त न कर पाई और वह धंस गई। वे सब के सब भील में समा गए।...”

“ज़रा सोचो तो हमारी भील कितनी गौरवशाली है,” मछलियां आपस में फुसफुसाने लगीं। “बेशक केंचुए को बधाई देनी चाहिए जिसके कारण हम इतनी सारी बातें जान पाए।”

“उस पुराने ज़माने से रेत और कीचड़ की मोटी तहों के नीचे आक्रमणकारियों के जंग खाए लौह कवच दबे पड़े हैं। यह तमगा हमारा कुल-चिन्ह है। इसे मैं अपने बचपन से देखती आ रही हूं। इस नन्हे बहादुर

केंचुए ने मेरा हृदय जीत लिया है। ... वही इस तमगे का वास्तविक अधिकारी है। उसने भय और मुसीबतों पर विजय पाई है। हुर्रा! हिम्मती केंचुए को हमारी बधाई।”

“हुर्रा, हुर्रा!” सभी एक साथ जोर से चिल्लाए, “शाबाश, बहादुर!”

पुरस्कार पाने की खुशी और जलजीवों के असीम उत्साह को देखकर उस नन्हे केंचुए का जी भर आया। उसने अत्यन्त आदर से सिर झुकाया और सभी के प्रति अपना आभार प्रगट करते हुए कहा:

“प्रिय दोस्तो, आप सभी का मैं हृदय से बहुत आभारी हूँ। घर लौटने पर मैं इस कीमती उपहार को यानि कि पुरस्कार में मिले इस अद्भुत तमगे को बालू से चमकाकर अपनी सुखद स्मृति के बहुमूल्य खजाने में सहेजकर रख लूंगा। पुनः आप सबके प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।”

और उधर मानो जान-बूझकर ट्रान्जिस्टर पर हर्ष-उल्लास से भरपूर संगीत गूँजने लगा। फिर से नई शक्ति और उत्साह से सारे जलचर थिरक उठे। वे इस तरह भूमर नाचने लगे कि उस तूफानी दौर में भीषण हलचल मच गई। सारी भील खौलने-सी लगी। बुजुर्ग पाइक मछली ने तो हृद ही कर दी, उसने ऊपर उछलकर अपनी दुम से इतना तेज छपाका मारा कि भील के किनारे मोटी जलधागा बह निकली।

तट पर ऊँघता हुआ मछलीमार चौंक पड़ा और जो भी उसने सामने देखा, उस पर उसे विश्वास न हुआ: तिरेन्दे के चारों ओर भील का पानी खलबलाता हुआ ऊपर उछल रहा था, नन्ही-नन्ही मछलियाँ उन्मत्त होकर तेजी से चक्कर खा रही थीं। और एक पाइक मछली अपनी दुम की थपकियाँ दे रही थी। इतनी बड़ी मछली तो उसने जीवन में पहली बार देखी थी। आखिर भील में हो क्या रहा है? उसने बंसी को भील से बाहर निकाला। लेकिन हुक पर अर्द्धमरे केंचुए के साथ एक मैला-सा तांबे का टुकड़ा लटका हुआ है।

“आखिर माजरा क्या है? यह तो मेरी समझ से बाहर है,” मछलीमार हक्का-बक्का रह गया। “शायद यह कोई जादुई केंचुआ है, तभी तो कोई मछली इसे मुँह नहीं मारती।”

उसने हुक से केंचुए और तांबे के गोल टुकड़े को गुस्से से निकाल फेंका। फिर उसने एक दूसरे पछताते और दहाड़े मारते हुए केंचुए को कंटिये में फंसा दिया।

और इस कहानी का साहसी नायक अपने घर के करीब नर्म, भीगी हुई जमीन पर आ गिरा। वहीं उसके शौर्य और सम्मान का प्रतीक तमगा भी ठीक बगल में पड़ा हुआ था। उसे अपने घर की गंध महसूस हुई और आराम से नर्म, गर्म धरती पर पसरकर उसने सूरज से यह प्रार्थना की कि वह उसके भीगे शरीर और गहरे घाव को जल्दी से सुखा दे। ...

पास ही टीन में पड़े उसके कायर भाई-बन्धुओं के फूट-फूटकर रोने, चीखने की आवाजें सुनाई दे रही थीं:

“हाय रे, कैसी बेरहम है दुनिया! कैसा अन्याय है हमारे साथ! और कैसे अभागे हैं हम लोग! ...

हमारा सर्वनाश हो रहा है, हमें तबाह किया जा रहा है!”

“नहीं!” साहसी कथा नायक ने सिर हिलाकर दृढ़ता से कहा। “तुम जो भी कहो, कितना ही इस दुनिया को कोस लो, पर यह दुनिया तो निस्सन्देह सुन्दर और अनुपम है।”

तारा मछली की कहानी

उस रात समुद्र का पानी अत्यन्त पारदर्शी था। और आसमान इस तरह चमचमा रहा था कि गरम खाड़ी में प्रवाल-चट्टान के पास रेत में लेटी नन्ही तारा मछली को एक चमकता हुआ तारा साफ़-साफ़ दिख रहा था।

“वह क्या है?” सागर-बाला को आश्चर्य हुआ। “अरे, वह तो मेरे सदृश है। हां, मैं जानती हूं उसे। यह एक तारा है! खूब दूर ऊंचे आसमान पर चमकता है। निस्सीम गगन में मनचाही यात्राएं करता है, सब उसे देखते हैं, उसकी प्रशंसा करते हैं।... और हां, मैं भी तारा हूं। पर न तो कोई मुझे यहां देख सकता है और न मेरी प्रशंसा ही करता है। मेरे नसीब में तो यह तुच्छ जीवन ही लिखा है।... आखिर क्यों? यह कैसा न्याय है?”

इस तरह तारा मछली आत्म-ग्लानि और डाह से ऐसी दुखी हुई, कि उसकी आंखों से आंसू बह निकले, थमने का नाम तक न लेते थे। उससे समुद्र का पानी और खारा हो गया।

उसे फूट-फूटकर रोता हुआ देखकर उसकी एक सहेली समुद्री साहिन उसके पास आई।

“अरी, तुम रो क्यों रही हो?” समुद्री साहिन ने हमदर्दी जताई। “क्या किसी ने तुम्हें ठेस पहुंचाई है? अच्छा तो सुनो, मैं तुम्हें एक मजेदार किस्सा सुनाती हूं कि मैंने बालरस के होंठ पर चिकोटी कैसे काटी? सुनोगी इस किस्से को? हंसते-हंसते तुम्हारा पेट ही फूल जाएगा।”

लेकिन उस दिन तारा मछली हंसने का तो नाम ही न लेती थी।

“मुझे अकेला छोड़ दो!” उसने नाराज होकर समुद्री साहिन से कहा। “तुम्हारी बेवकूफी के इन बालरसवाले किस्सों से ऊब चुकी हूं।”

नाराज होकर समुद्री साहिन वहां से दूर चली गई और तारा मछली प्रवाल-चट्टान पर चढ़ने लगी। वह लगातार रेंगते हुए चट्टान की चोटी पर जा पहुंची, जो जल की सतह पर एक नन्हे टापू-सी दिखाई देती थी। यहां से उसने आकाश पर चमकते तारे की ओर फिर से देखा। वह पहले से कहीं अधिक सुन्दर और चमकीला दिखाई पड़ रहा था। तारा मछली के नन्हे-से दिल में तूफान उठा, ईर्ष्या का सैलाब आया और आंख से भर-भर आंसू गिरने लगे।

नन्हे पाठको, मैंने आपको शुरू में ही बताया था कि वह रात एक जगमग रात थी। ऐसी स्वच्छ रात कि आकाश में चमकता हुआ एक तारा उस नन्हे प्रवाल-द्वीप को भी आसानी से देख सकता था। इसीलिए उस तारे ने रोती हुई तारा मछली को भी देख लिया।

“मछली रानी, कहो, क्या बात है?” तारे ने आकुलता से पूछा। “क्या ऐसी दहाड़ें मारना अच्छी बात है? यहां आकाश में भी सुनाई पड़ रहा है।”

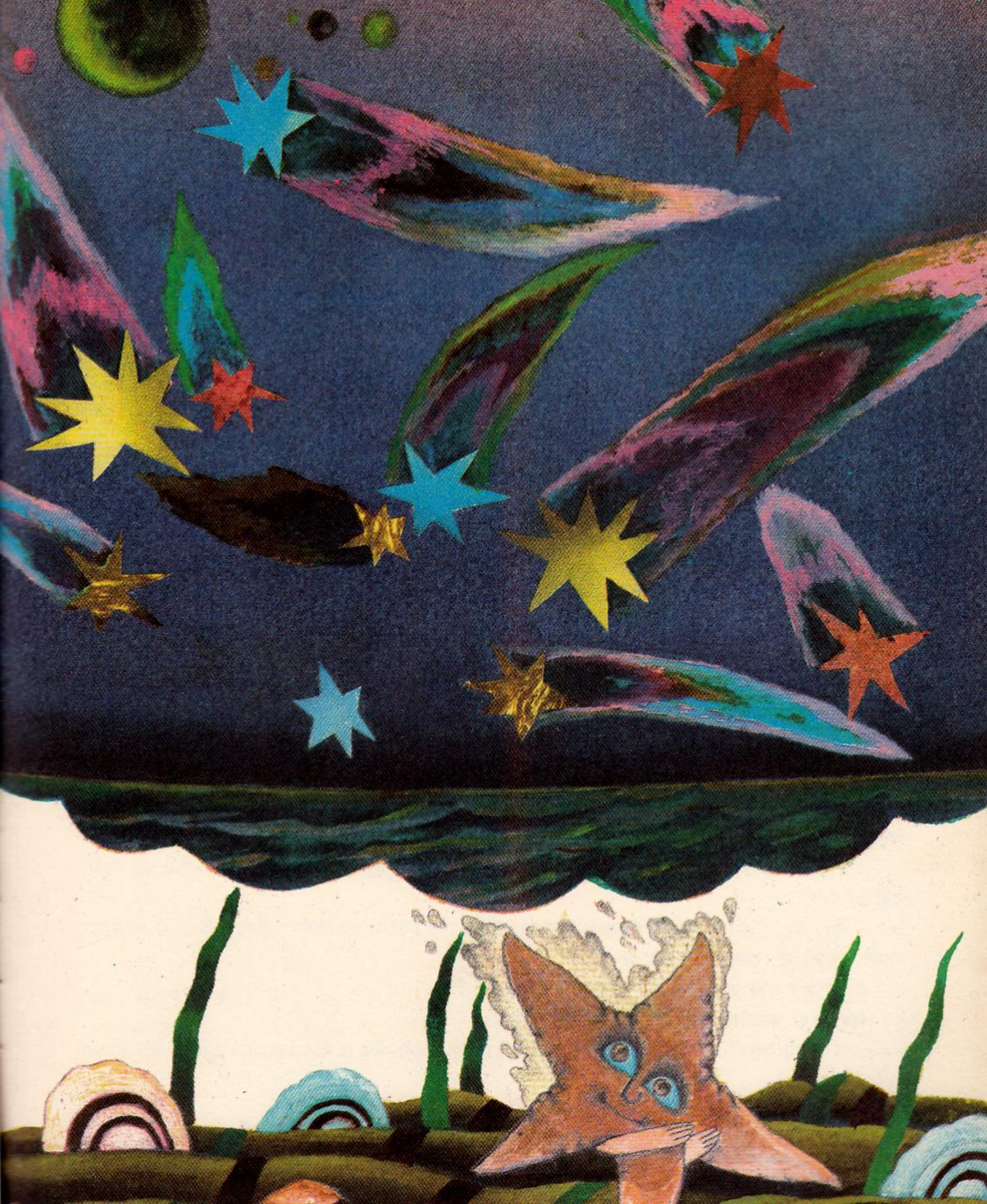
“तारे भैया, बताओ, आखिर मैं क्यों न रोऊं? मैं तो इस जिन्दगी से ही तंग आ गई हूं। बड़ा घिसा-पिटा जीवन है अपना — बस खाड़ी के तल पर पड़ी रेंगती रहो। और मूर्ख साहिन की गप्पें सुनती रहो, हमारा तो जी भर गया है। सच कहो तो मैं तुम्हारी तरह जीना चाहती हूं, शान से ऊंचे आसमान में चमकना चाहती हूं ताकि सब मुझे देखकर खुश हों और मेरी प्रशंसा करें।”

“तो तुम आकाश में टिमटिमाना चाहती हो?” तारे ने कुछ सोचते हुए पूछा। “तो तुम यहां ऊपर आओगी?”

यह कहते ही उस तारे ने नील-किरण की डोरी नीचे प्रवाल-द्वीप की ओर लटका दी। किरण-डोरी ने तारा मछली को अच्छी तरह लपेटा और ऊपर उठा लिया। पलक झपकते ही नन्ही तारा मछली ऊपर नीले विस्तार में, तारों के देश में जा पहुंची।

तारा मछली तत्काल चुप हो गई और धीरे-धीरे मुस्कराने लगी। अहा, ऐसा सौभाग्य किसे मिलता है! कोई विश्वास न करेगा कि यह भी हो सकता है।... पर वह तो खूब लम्बी किरण-डोरी पर मजे से हिचकोले खा रही थी, मानो कोई भूला भूल रही थी। उसका नन्हा-सा दिल गर्व से फटा जा रहा था।

“अहा, कैसा अनोखा है मेरा भाग्य! यूँ तो तारा मछलियां बहुत-सी हैं। पर मेरे जैसा है कौन! आकाशीय



यात्रा का अवसर तो मुझे ही मिला है," उसने मन ही मन इतराते हुए सोचा। "क्या अच्छा होता कि वे मुझे खाड़ी के भीतर से देख रही होतीं? अगर ऐसा है तो वे मुझे यहां देखकर ईर्ष्या से जली-भुनी जा रही होंगी! काश, ऐसा ही होता! हा, हा, हा!"

तारा मछली ने उत्सुकता से चारों तरफ देखा। लो, कहां है शान्त खाड़ी! दूर-दूर तक निस्सीम विस्तार है। जहां भी देखो, असंख्य तारा-मण्डल और रहस्यमय नीहारिकाएं ही हैं। यहां भटकना मुश्किल नहीं।... और जैसे-जैसे हमारी सैलानी नायिका अपने आसपास ध्यान से देखती जाती थी, वैसे-वैसे उसका मन उदास होता जाता था! सचमुच उसे यह निस्सीम आकाश बड़ा डरावना लगा। अभी वह सहज न हो पाई थी कि पत्थर-से कठोर एक क्षुद्र-तारे से टकराते-टकराते बची, फिर सनसनाता हुआ पुच्छलतारा करीब से गुजरा, उसकी तो आंखें भुलसते-भुलसते बचीं। कहीं थोड़ी दूर पर तेज धमाके के साथ दो तारे आपस में टकराए, उनके परस्पर उड़ गए और टुकड़े चारों तरफ बिखर गए।... हमारी गगनचारिणी ने किसी शान्त जगह में छिपना चाहा। लेकिन उसे कहीं भी कोई एकान्त न मिला, जहां वह आराम कर पाती और भयमुक्त हो चैन की सांस ले पाती। वह व्याकुल हो उठी। "ओफ़!" उसने मन ही मन कहा, "मैंने बेकार यहां आने की जिद की। लेकिन मुझे क्या पता था कि आकाश इतना डरावना और दुखदायी होगा? पर अब मैं अच्छी तरह जान चुकी हूं: आसमान में तारा बनकर चमकना कोई ऐसी खुशी की बात नहीं है। यहां तो मुसीबत है, मुसीबत! रात-दिन सिर पर खतरा मंडराता है, चैन तो जैसे है ही नहीं। और सबसे दुखदायी है यहां का अकेलापन, बस अन्तहीन अकेलापन, कि जीना ही दूभर हो जाए!"

तारा मछली को अपनी आरामदायक खाड़ी और प्रवाल-चट्टान की तलहटी में बने अपने प्यारे घर की याद सताई, जिसे वह नादानी में छोड़कर चली आई थी। उसे अपनी सहेली समुद्री साहिन की भी याद आई। "आखिर मैंने उस बेचारी से ऐसा रूखा बरताव क्यों किया?" वह खुद को लानतें देती रही। "आखिर वहां क्या कमी थी? और यह आकाश! मैं तो बाज आई ऐसे निरर्थक आकाशीय जीवन से! कितनी सुखी थी मैं अपने घर में!" यह सोचते-सोचते वह फफक-फफककर रो पड़ी!

इस तरह हमारी नकचढ़ी तारा मछली की हालत बहुत बुरी हो गई, भय और अकेलापन उसकी रग-रग में समा गया था। वह लगातार आंसू बहाते हुए जोर-जोर से चिल्लाने लगी: "बचाओ!" तारा मछली का रोना-कलपना सुनकर चांद से न रहा गया। खूब उजला, चमचमाता हुआ चांद उसके करीब आया।

"यह कैसा हंगामा है?" चांद ने हैरानी से पूछा। "लेकिन तुम तो इतनी छोटी हो --- कैसे आ पहुंची यहां?"

"मैं ... मैं ..." तारा मछली की आवाज अटक गई। "एक दुर्घटना का शिकार हो गई थी ... मैं अपने घर जाना चाहती हूं, सागर की गोद में।..."

"पर तुम यहां आई कैसे?" चांद ने दृढ़ता से कहा।

तब तारा मछली ने झट से एक कहानी गढ़ ली:

"मैं अपनी प्यारी-सी खाड़ी में मजे से रहती थी। जीवन सुख-चैन से कट रहा था। दुनिया की खुशियां

मेरे कदमों पर थीं। अचानक एक चमचमाती रात को आसमान के एक तारे ने मुझे देखा। उसने देखा कि मैं कितनी खुशहाल हूँ। उसे यह देखकर मुझ से ईर्ष्या हुई। उसने अब देखा न ताब, मुझ पर किरण-जाल फेंका और फंसाकर ऊपर घसीट लाया। और इस तरह उसने मुझे यहां इस निर्जन डरावने आसमान पर लाकर मरने के लिए छोड़ दिया।”

“लेकिन क्या तारे कभी इतने तुच्छ हो सकते हैं?” चांद ने शंका प्रगट की। “हमारा आकाशीय तौर-तरीका ऐसा तो नहीं!”

“अगर आपको विश्वास नहीं, तो मेरी सहेली समुद्री साहिन से पूछ लीजिये,” तारा मछली ने चांद को विश्वास दिलाते हुए कहा। “वह आपको बतला देगी कि यह सब सच है। ... आप मेरी मदद कर दीजिये न! मुझे अपने घर तक पहुंचा दीजिये न!” तारा मछली ने गिड़गिड़ाते हुए कहा। और फिर जोर-जोर से रोने लगी।

“अरे, चुप हो जाओ! मैं तुम्हारी सहायता करूंगा। लेकिन पहले रोना बन्द करो!” चांद ने कहा।

तुरंत वह तैरते हुए नील-किरण के पास पहुंचा और उसने अपनी चमचमाती हुई चंद्र-हंसिया से वह किरण-डोरी काट दी जिस पर हिचकोले खाती हुई तारा मछली प्रवाल-चट्टान के ठीक ऊपर भूल रही थी।

तारा मछली यह भूल ही गई कि उसे इस उपकार के लिए सहृदय चांद को धन्यवाद भी देना चाहिए था। वह छपाक से पानी में गिरकर प्रवाल-चट्टान की तलहटी में जा पहुंची, जहां उसका प्यारा घर था। वह अपनी सहेली समुद्री साहिन से लपककर गले मिली, जो यकायक उसके गायब होने और पुनः मिलने से हैरान थी और इसके बाद वह तुरन्त अपने घर में आराम करने लगी, बेचारी थक जो गई थी। आखिर उसने इतना लम्बा और खौफनाक सफ़र तय किया था। और वह रात पहले की तरह अब भी जगमगा रही थी। सोने से पहले तारा मछली ने उस झिलमिलाते तारे को देखा, चांद उसकी ओर तैरता हुआ खिसक रहा था। उसे लगा कि वे दोनों चुपके-चुपके उसके बारे में बातें कर रहे हैं।

तारा मछली को यह देखकर ऐसी शर्म आई कि वह भट से रेत में मुंह छिपाकर गायब हो गई। और इसीलिए शायद उसने यह भी नहीं देखा कि वे चांद-तारे हंस-हंसकर क्या बतिया रहे हैं।

हास्य सम्मेलन

काली-काली चमचमाती पीठवाला गुबरैला सड़े-गले ठूठ के अन्दर बैठा हुआ कुछ खोद रहा था। अचानक उसने भोंपू की एक जोरदार आवाज़ सुनी। वह ठूठ से बाहर आया। उसने देखा कि जंगल के खुले मैदान में झनझनाते हुए भींगुरों का झुण्ड चला आ रहा है। उनमें से कुछ भींगुर पत्तियों के गोल भोंपू को बजा-बजाकर सबको आकर्षित कर रहे थे, जबकि दूसरे साथी गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहे थे:

“सुनो, सुनो! आज शाम को पुराने खुमी की छतरी तले एक विशाल सभा का आयोजन किया गया है। इस समारोह में मशहूर गायिका रइयां पधार रही हैं। सभी से निवेदन है कि समय पर समारोह में पहुंचकर अपना स्थान ग्रहण कर लें। तीसरी घण्टी के बाद सभा कक्ष में प्रवेश वर्जित होगा। कृपया समय का ध्यान रखें।”

गुबरैले ने ठूठ की छाया देखकर अन्दाज़ लगाया। छाया लम्बी नज़र आई। यानि कि शाम हो चली है। चल भाई, झट से तैयार हो जा। कहीं देर न हो जाए! उसने नरम कार्ड के एक नन्हे टुकड़े से अपने पंख

चमकाकर साफ़ किए। वे शीशे की तरह चमचमाने लगे, कोई चाहे तो अपना मुंह तक देख ले। उसका उपनाम — चमकू — शायद अनुचित न था। सोच-समझकर ही रखा गया था।

इस तरह छैल-छबीला, चमकू गुबरैला खुमी की विशाल छतरी तले उस वक्त पहुंचा, जब सभागार खचाखच भर चुका था। सैकड़ों पटकटनियां, बीर-बहूटियां, व्याधपतंग, घुन, छेउकी, कैप्रीकार्न बीटल आदि वहां पहुंच चुके थे। और तो और, कुछेक जलचर भी पासवाली भील से पैर घसीटकर मुश्किल से आ पहुंचे थे। उनकी टांगें तो पानी में तैरने की अभ्यस्त थीं, ज़मीन पर चलने की नहीं। घुन की जमात चीड़ की नुकीली पत्तियां ले आई और छेउकी का भुण्ड डाहलिया फूलों के साथ सभागार में पहुंचा — आखिर उन्हें कार्यक्रम के दौरान कुछ खाना-कुतरना जो था। कई एक मकड़े-मकड़ियां छत के नीचे अपने द्वारा बुने हुए भूले पर भूल रहे थे। एडमिरल मिस्टर तितला मिसेज़ तितली के साथ बलूत की सूखी पत्तियोंवाले एक बड़े-से बाक्स में विराजमान थे। चमकू भाई भला कब पीछे रहते। उसने भी पासवाले बाक्स पर कब्ज़ा कर लिया, जहां पिस्सुओं का परिवार बैठा हुआ था। चमकू ने उन्हें बेदखल करके आराम से अपनी टांगें फैलाई और सीट पर पसरकर स्टेज की ओर देखने लगा।

तीसरी घण्टी — कर्णघण्टिका — घनघना उठी। जुगनुओं ने अपनी जगमगाती हुई बत्तियां बुझा दीं, नौ मकड़-जालों का बुना परदा धीरे से खिसका! उद्घोषिका मिसेज़ ततैया रंगमंच पर हाज़िर हुई। उनकी धारीदार पोशाक कमर से ज़रा ज़्यादा कसकर बंधी थी — मानो सींक सलाई-सी कमर बस अभी कटकर गिर पड़ेगी।

“अब हमारा कार्यक्रम शुरू होने जा रहा है!” मिसेज़ ततैया ने भनभनाते हुए कहा। “चर्चित गायिका मिसेज़ रइयां मंच पर पधार रही हैं। ‘सूर्य का गीत’ उनकी एक अद्भुत रचना है। माननीय अतिथियों से निवेदन है कि वे कार्यक्रम के दौरान कुछ काटें-कुतरें नहीं।”

उधर रंगमंच पर मशहूर गायिका मिसेज़ रइयां ने उड़ते हुए प्रवेश किया। डैण्डेलियन की पंखुड़ियों से बना उनका कीमती परिधान बड़ा भव्य लग रहा था। उनके ठीक पीछे नौजवान रइयों का समूह एक कतार में मौजूद था। क्षणिक शान्ति के बाद मिसेज़ रइयां ने धीरे-धीरे गुनगुनाते हुए अपना गीत प्रस्तुत किया:

“ओ सूरज, हम गीत तुम्हारे गाते हैं!
तुम उगते तो जीवन हम पा जाते हैं।
ओ सूरज, तुम एक अनोखी प्रतिमा हो।
जलकर हमको जीवन देते ऐसे भाग्य विधाता हो।”

और तब कोरस गायकों ने महीन, किन्तु खनकती आवाज़ में सुर मिलाया:

“विधाता हो... विधाता हो... विधाता हो...”

इस बीच चमकू गुबरैले ने अपने बाक्स की रेलिंग पर झुककर आकाश की ओर देखा। सूरज ऊँचे चीड़ वृक्षों के पीछे अन्धेरे में गुम हो चुका था।

कोरस खत्म हुआ तो गायिका मिसेज रइयां ने फिर गाया:

“चमके चमचम किरण तुम्हारी ओ सूरज!
शक्तिपुंज तुम प्यारे-प्यारे ओ सूरज!”

और इसके बाद कोरस गायकों ने स्वर मिलाया:

“ओ सूरज ... ओ सूरज ... ओ सूरज ...”

समूह गायकों का स्वर थमा तो गायिका रइयां ने फिर सुरीली आवाज में गाया:

“रहो चमकते, सूरज प्यारे!
जगत सहारे, प्राण अधारे।
पिता तुम्हीं हो, माता तुम हो!
भगिनी तुम हो, भ्राता तुम हो।
अच्छे-अच्छे, सबके प्यारे!
रहो चमकते, सूरज प्यारे!”

मिसेज रइयां की गीत खत्म होते ही तड़तड़ तालियां बजने लगीं। तालियों की तड़तड़ाहट से खुमी की छतरी जोर-जोर से हिलने लगी और मकड़ियों के जालीदार भूले हवा में लहराने लगे। यूँ कहें सबने खूब तालियां बजाईं। पर चमकू गुबरैला मुंह फुलाए रहा। उसके दिमाग में कोई खास उलझन थी। वह उदास था। समारोह के अन्त में जब सभी हंसते-बतियाते अपने-अपने घर की तरफ चलने लगे, तब चमकू अपने बाक्स से बाहर निकला और लुढ़कते-पुढ़कते गायिका की तलाश में सज्जा-कक्ष की ओर चल पड़ा।

गायिका रइयां के पास चमकू उस वक्त पहुंचा, जब गीत-संगीत का महान प्रेमी टिड्डा गीत सम्राज्ञी रइयां की प्रशंसा करते हुए बड़ी श्रद्धा से उनके हाथ चूम रहा था, उनकी निरन्तर सराहना कर रहा था।

“अहा, कितनी सुरीली है आपकी आवाज! कोई भी मदहोश हो जाए! अद्भुत! सर्वश्रेष्ठ!” टिड्डे ने बड़े उत्साह से अपनी लम्बी-लम्बी मूँछें कंपकंपाई और मिसेज रइयां की गायकी पर निहाल होकर बनफ़शा की पंखुड़ियों से बना एक छोटा-सा पंखा उन्हें ससम्मान भेंट किया।

चमकू गुबरैले ने रुखाई से टिड्डे को धकियाया और आगे बढ़कर भारी आवाज में बोला :

“मैं आपसे एक जरूरी बात करना चाहता हूं। केवल अभी, इसी वक्त।”

“हां, हां! बेशक!” गायिका ने चहकते हुए कहा। और चमकू से बैठने का आग्रह किया।

चमकू गुबरैला रेंगकर शाह-बलूत के खोखलवाली आराम कुर्सी पर बैठ गया। फिर ज़रा शान से बोला :

“अपनी बात कहने से पहले मैं यह स्वीकार करता हूं कि सचमुच आपकी आवाज सन्तोषजनक है,” उसने रोब से कहा। स्पष्टतः उसे अपनी कीमत का अन्दाज़ ज़रूर था।

“धन्यवाद दोस्त,” गायिका ने मुस्कराते, खुद को पंखा झलते हुए कहा।

“वैसे तो मैंने आपसे अच्छे गायकों के गीत सुने हैं,” गुबरैले ने गायिका रइयां की कृतज्ञता को नज़र-अन्दाज़ करते हुए दृढ़ता से कहा। “उदाहरण के लिए: पत्तागोभीवाली उस मक्खी और कपड़ा कुतरनेवाले कीड़े को ही लें। यकीन करें, जब मेरे जन्म-दिन पार्टी में इन दोनों ने मिलकर बधाई-गीत गाया, तो आधे मेहमान उसी क्षण बहरे हो गए और अब तक बहरे ही हैं। क्या खूब! ग़ज़ब की आवाज़ें हैं उनकी!”

गुबरैला आराम कुर्सी में हिला, ज़रा आराम से फैलकर बैठा और विशेषज्ञों की तरह बोला :

“मेरे ख्याल से आपकी स्वर-माधुरी बढ़ती अगर आपने कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण विषयों पर गाया होता।”

“आखिर आप ऐसे किन विषयों की चर्चा कर रहे हैं?” गायिका ने ज़रा हैरानी से पूछा।

“हां, हां, वही तो मैं कहने जा रहा था। मैं उनके बारे में बताना चाहता हूं, जो सचमुच चमकते हैं, रोशनी बिखेरते हैं,” चमकू गुबरैले ने कहा। “अब देखिये न, आपने सूरज की प्रशंसा में इतना अच्छा गीत गाया, उसके प्रति आपने आभार प्रगट किया। लेकिन ज़रा यह तो बताएं कि उस वक्त सूरज क्या कर रहा था? वह चीड़ वृक्षों के पीछे छिप गया और गूंगा-बहरा बना रहा, जब कि उसकी ही प्रशंसा में जोर-शोर से गीत गाया जा रहा था। और उसने एक बार इधर भांका तक नहीं। खैर, छोड़िये इसे! हां, तो अब ज़रा सूरज का कच्चा-चिट्ठा भी सुन लें। आखिर कौन-सी खासियत है सूरज में? सर्द रातों में वह मुंह छिपाए रहता है। लगातार बारिश के दिनों में धोखा दे जाता है, हम उसे मनाते हैं, बुलाते हैं, पर वह बहरा बना रहा है। हम लोग उसकी एक झलक के लिए तरस जाते हैं। और जाड़े के ठिठुरते दिनों में! उन दिनों सूरज महाराज क्या करते हैं?” गुस्से से तमतमाया हुआ चमकू गुबरैला अपनी आराम कुर्सी से उछल पड़ा। उसने फिर अपनी बात आगे बढ़ाई: “सर्दियों में सूरज को हमारी परवाह नहीं रहती। चाहे कोई भूख से मरे या ठण्ड से ठिठुरे। जाड़े भर वह अफ्रीका पर मेहरबान रहता है और हमारी तरफ़ देखता तक नहीं। मुझे तो सारस पक्षी ने कभी बताया था कि वह अफ्रीका में पूरे साल चमकता है, जिसके कारण वहां गर्मी रहती है, हिमपात नहीं होता। अब खुद ही फ़ैसला करें कि यह सूरज कैसा है? और आप जैसी महान गायिका उसके स्वागत-गीत गाती हैं, उसका अभिनन्दन करती हैं।”

मिसेज़ रइयां ने खिड़की से भांककर आसमान की ओर देखा और मुस्कराते हुए बोली :

“अरे, आप चुप क्यों हो गए? कहिये, कहिये। ऐसे मूल्यवान विचार तो मैंने पहली बार सुने हैं।”

“हां, तो मैं क्या कह रहा था?” इस प्रशंसा से खुश होकर गुबरैले ने कहा। “बात यह है कि सूरज कभी चमकता है, तो कभी गुम रहता है। लेकिन मुझ को कहीं ढूँढ़ना नहीं पड़ता। मैं रात-दिन चमकता हूँ, जगमगाता हूँ। न कभी बादलों में छिपता हूँ, न अफ्रीका ही भागता हूँ। हमेशा सबके बीच मौजूद रहता हूँ। ढूँढ़ना या भटकना नहीं पड़ता। खुद ही देख लें, आपके सामने मौजूद हूँ। और ज़रा सूरज को देखिये। शाम हुई कि छिप गए जनाब। लेकिन मैं मुँह नहीं चुराता। हमेशा हर जगह हाज़िरी देता हूँ।”

अपनी बात कहकर गुबरैला चुप हो गया और गायिका मिसेज़ रइयां के उत्तर की प्रतीक्षा में अपना पेट खुजलाने लगा। गायिका ने अपने गले में पड़ी जंगली मिर्च के दानों की माला पर आहिस्ता-आहिस्ता हाथ फेरा और खामोश रही।

“हां, तो आपने इस बारे में क्या सोचा है?” चमकू गुबरैले ने अधीरता से पूछा।

“आपका ख्याल है कि मैंने सूरज के नहीं, आपके गीत गाए होते? कृतज्ञता सूरज के प्रति नहीं, आपके प्रति प्रगट की होती? यही न?” गायिका ने सवाल किया और अपनी व्यंग्यपूर्ण मुस्कान पंखे से छिपा ली।

“बेशक। यही तो मैं कह रहा था!” चमकू गुबरैला जोर से चिल्लाया और खुशी से उछल पड़ा। “मुझे में तमाम ऐसी खूबियां हैं, जो सूरज में नहीं हैं। निस्सन्देह मेरी प्रशंसा के गीत गाए जाने चाहिए, मुझे ही वह आदर मिलना चाहिए।”

“ठीक है,” गायिका ने कहा, “तो वायदा रहा कि कल शाम मैं एक और संगीत समारोह आपके सम्मान में पेश करूंगी।”

चमकू गुबरैला खुशी से थिरक उठता कि फौरन संभला। और सूर्य से प्रतापी हस्ती की तरह गायिका से विदा लेते समय गुबरैले ने रोब से सिर झुकाया और कहा:

“मुझे विश्वास है कि कल आपका सबसे सफल कार्यक्रम होगा। मैं आपको ताजे, खुशबूदार फूलों का एक नायाब गुलदस्ता पेश करूंगा। वे सिर्फ सड़े गोबर के ढेर पर फूलते हैं। अच्छा तो अब मैं चला, कल समारोह में ही मुलाकात होगी!”

अगले दिन चमकू गुबरैले का मन बड़ा बेचैन था। वह बारबार ठूठ से अपनी भूँछें निकालता, बाहर भांकता और अधीरता से इन्तज़ार करता कि कब भोंपू बजे और भींगुरों का भुण्ड प्रगट हो। अन्त में भींगुरों का एक भुण्ड उधर आता दिखाई पड़ा। वे सड़े ठूठ के पास आकर रुक गए। पहले कई भींगुरों ने एक साथ बिगुल बजाए और इसके बाद दूसरे भींगुरों ने जोर-जोर से भनकते हुए कहना शुरू किया:

“सुनो, सुनो! आज शाम खुमी की छतरी तले एक अनोखे समारोह—पहेली सभा—का आयोजन किया गया है। आप सभी से निवेदन है कि इस रोचक समारोह में पहुंचकर कार्यक्रम का आनन्द उठाएं। विशेष सूचना: कृपया कार्यक्रम के दौरान काटना-कुतरना या दांत किटकिटाना स्थगित रखें। ऐसी हरकतें पूर्णतः वर्जित हैं।”

चमकू गुबरैला लुढ़कता हुआ सड़े ठूठ से बाहर आया और भटपट सजने-संवरने लगा। उसने अपने पंखों, पंजों और मूँछों को खूब मल-मलकर चमकाया। आखिर वह इस समारोह का हीरो जो था, सारा आयोजन उसके सम्मान में किया गया था। ... गुबरैले ने खुद को चमकाने में कोई कसर न छोड़ी। बहुत देर तक वह अपने छैल-छबीले स्वरूप को एक डबरे में निहारता रहा, अपने प्रतिबिम्ब पर मुग्ध होता रहा। उसे आज तक अपना स्वरूप इतना प्रभावशाली न लगा था। भले ही उसका नाम चमकू ही क्यों न रहा हो! गुबरैला शान से चमचमा रहा था। ऐसा अद्भुत सौन्दर्य कि वह खुद से ईर्ष्या कर बैठा! अन्त में गुबरैले ने व्याघ्रपतंग के पंखवाली छोटी-सी टाई गले में बांधी और चल पड़ा सभागार की ओर!

गुबरैला अपने पहलेवाले बाक्स में अकड़कर बैठ गया। उसने आज एडमिरल तितला और मिसेज तितली को जैसे देखा ही नहीं। उसने धनकुट्टी का अपमान करते हुए अपनी पीठ उसकी ओर कर दी, जो करीब ही बैठा था। चमकू मंच पर आंखें गड़ाए देख रहा था।

इन्तजार की घड़ियां खत्म हुईं। जुगनुओं ने जगमगाती हुई बत्तियां बुझा दीं, धीरे से मकड़-जाल का परदा खिसका, मंच पर कोरस गायन के लिए नौजवान रइयों का समूह एक कतार में पहले से खड़ा था।

नाजुक कमरवाली उद्घोषिका मिसेज ततैया ने भनभनाते हुए कहा:

“अब हमारी मशहूर गायिका मिसेज रइयां अपना पहेली गीत प्रस्तुत करने जा रही हैं। गीत का शीर्षक है ‘सूरज से चमकीला कौन?’”

गुबरैले ने आत्मसंतुष्टि की सांस ली और नीले आकाश की तरफ देखा। इस बार सूरज चीड़ वृक्षों के पीछे छिपा न था। शायद टोह ले रहा था। आखिर उससे ज्यादा चमकीला कौन हो सकता है?

इस बीच गायिका ने अपना मधुर गीत प्रस्तुत किया:

“सूरज से चमकीला कौन?
सूरज से भड़कीला कौन?
दुनिया में जो चमचम चमके—
ऐसा रहा रंगीला कौन?
सूरज जिससे आंख चुराए—
ऐसा छैल-छबीला कौन?
भट से बोलो—कौन?
राज ये खोलो—कौन?”

और उसके बाद कोरस गायकों ने अपना राग छेड़ दिया:

“चुप मत रह-ये!
कुछ तो कह-ये!

एक पहेली सबके आगे !
भटपट बूझो, आओ आगे !
बोलो : कौन ? कौन ? कौन ? ”

सभी दर्शक अपनी अक्ल के घोड़े दौड़ाने लगे । इस अनोखी पहेली का हल ढूँढ़ने लगे । क्या खूब ? सूरज से चमकीला कौन ? चरागाह के पिस्सू ने उछल-कूद रोक दी । इसी तरह कैप्रीकार्न बीटल ने अपनी मूँछें हिलाना , घुनों ने नाक सुड़सुड़ाना और मकड़ियों ने अपने जाले में भूलना बन्द कर दिया । कौन है आखिर ? कौन ? ...

लेकिन गुबरैले का धैर्य टूट गया । चुप न रह सका । पिछली टांगों के बल ज़रा अकड़कर खड़ा हो गया , ताकि सभी उसे भली प्रकार देखकर उस पहेली का हल ढूँढ़ सकें । लेकिन उसकी ओर किसी ने देखा तक नहीं । सभी कोरस गायकों को चुपचाप सुन रहे थे , पहेली का हल ढूँढ़ने में उलझे हुए थे । सभागार में ये पंक्तियाँ गूँज रही थीं :

“ चुप मत रह-हिये !
कुछ तो कह-हिये !
एक पहेली सबके आगे !
भटपट बूझो, आओ आगे !
बोलो : कौन ? कौन ? कौन ? ”

लेकिन सभी दर्शक चुप थे । किसी को इस कठिन पहेली का कोई हल न सूझ रहा था । चमकू गुबरैला बेचैनी से बाक्स की रेलिंग पर लटक गया और उसने अपनी मूँछें धनकुट्टी को चुभो दीं । फिर उसने देखते ही देखते , मानो अनिच्छा से , मिसेज़ तितली के खूबसूरत पंख पर दुलती भाड़ दी । मिसेज़ एडमिरल को गुस्सा आ गया , उसने भी फूहड़ गुबरैले को ऐसा धक्का दिया कि वह अपने बाक्स से उछलकर बाहर गिर पड़ा । गनीमत यह थी कि उसकी एक टांग बलूत की सूखी पत्ती की किनारी से उलझ गई और गुबरैला सिर के बल हवा में लटक गया — हूबहू एक सोए चमगादड़ की तरह ! गायिका मिसेज़ रइयाँ ने गाया :

“ चुप मत रह-हिये ! ”

कोरस गायकों ने अगली पंक्ति दोहराई :

“ कुछ तो कह-हिये । ”

फिर जवाब नहीं मिला। ऐसा लगा कि पहली अनबूझी ही रह जाएगी।

लेकिन गुबरैले का धैर्य चुक गया था। वह सिर के बल लटका हुआ खूब जोर से चिल्लाया:

“मैं... हूं... मैं! चमकू गुबरैला! सूरज से चमकीला और यशस्वी!”

यह सुनते ही सारे के सारे दर्शक भौचक रह गए। एक साथ सैकड़ों आंखें गुबरैले पर टिक गईं।

फिर वही आवाज गूंज उठी:

“मैं... हूं... मैं! चमकू गुबरैला। सूरज से चमकीला और यशस्वी।”

तब बगलवाले बाक्स में बैठा हुआ धनकुट्टी ठहाके मारकर हंसने लगा:

“क्या खूब? बेहतरीन चुटकुला! यानि कि चुटकुला सभा! हास्य सम्मेलन!”

जलचर ने भी खूब जोर के ठहाके लगाए:

“अरे, ठहाकों से तो पेट फटा जा रहा है। हम तो हंसते-हंसते मर जाएंगे।”

“भाइयो, हमारा भी बुरा हाल है। कहीं हंसी से पेट न फट जाए!” भौरो ने ठहाका लगाते हुए कहा।

“अरे, ठहाका बम है! हंस-हंस के मर जाओ!” चींटियां हंसते-हंसते लोट-पोट होने लगीं।

“सूरज से चमकीला कौन? खूब रही! गोबरवाला! वही गुबरैला! हा, हा, हा!” पटकनियों ने खिल्लियां उड़ाईं।

“अक्ल का दुश्मन कहीं का! उसकी खबर तो बाद में लेंगे!” गुबरैले के निकटतम संबंधियों ने शर्म से सिर झुकाए हुए गुस्से से कहा।

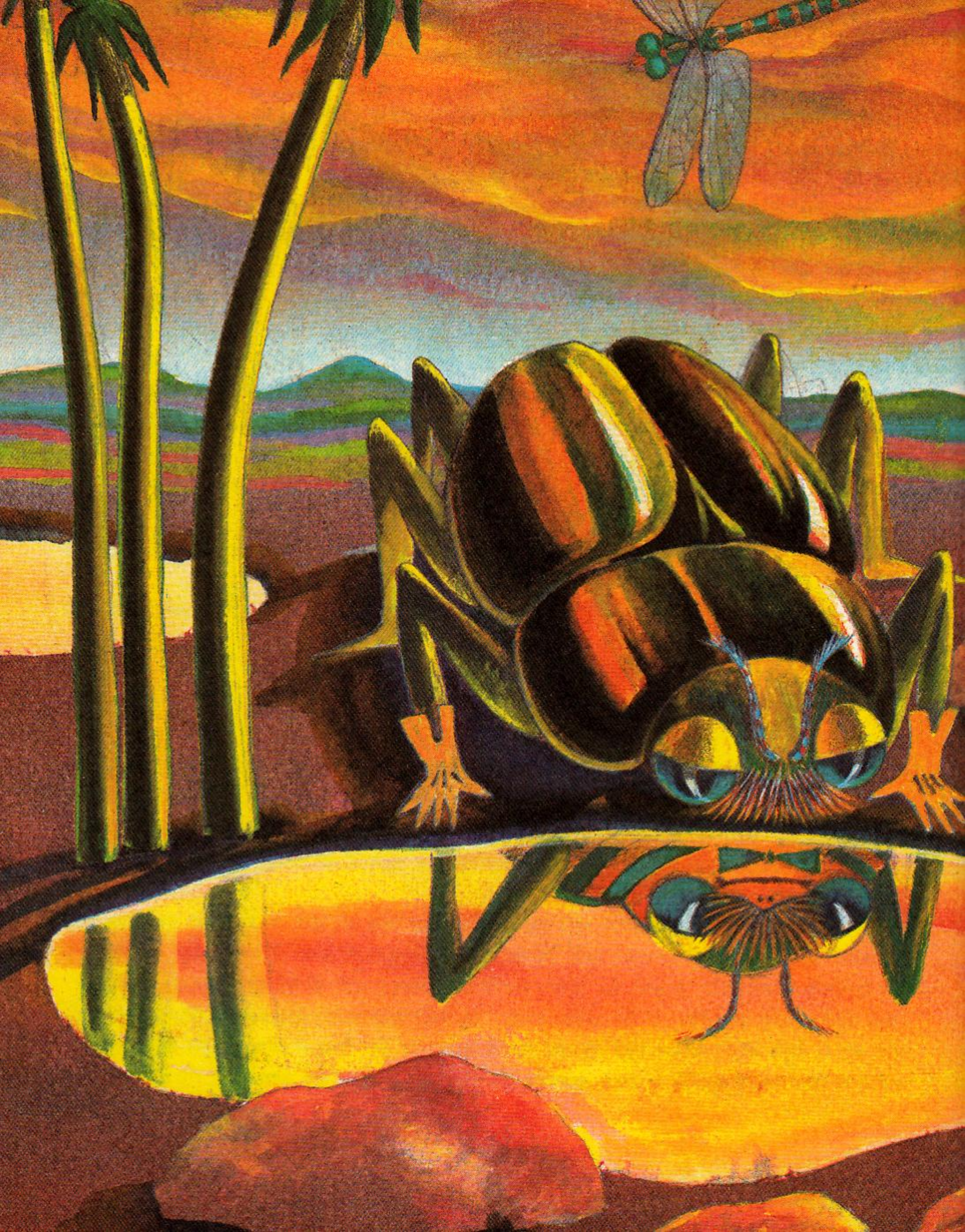
“हो-हो-हो!” नन्हे-मुन्ने घुन भी जोर-जोर से हंस रहे थे।

“ही-ही-ही!” पिस्सुओं की खिलखिलाहट भी सुनाई दी।

यहां तक कि गरु गम्भीर गायिका रइयां ने भी जोरदार ठहाका लगाया।

इसी दौरान एक आकस्मिक घटना ने दृश्य बदल दिया: सभी के जोरदार ठहाकों से खुमी की विशाल छतरी जोर-जोर से हिलने और गिरने लगी। खुमी का पतला-सा नाजुक तना टूट गया। मुलायम पंखोंवाली नरम-नरम तकिये जैसी छतरी ठहाकेबाज दर्शकों के ऊपर गिर पड़ी। जोरदार चीख-पुकार मची, पर कोई घायल न हुआ। और ठहाके की रफ्तार पूर्ववत् बनी रही। यह अट्टहास जंगलों और मैदानों में दूर-दूर तक गूंजता रहा।

हंसी और खिलखिलाहट के कारण घटी उस सुखद दुर्घटना स्थल की ओर मकड़ियों की एक चुस्त टीम सहायतार्थ आई। उन सब ने मिलकर खुमी की छतरी को बड़ी फुर्ती से धागों में लपेटा और उसे चीड़ की एक टहनी से बांधकर धीरे से खड़ा कर दिया। छतरी अभी तनकर खड़ी ही हुई थी कि अन्दर से गुबरैला सबसे पहले निकला और सिर पर पैर रखकर भागा। वह तब तक भागता रहा, जब तक कि जंगल के दूसरे छोर पर न पहुंच गया। लेकिन यहां भी उन ठहाकों ने गुबरैले का पीछा न छोड़ा। गुस्से से तमतमाया, थकान से बेदम चमकू गुबरैले ने ऊपर आसमान की ओर देखा। लेकिन यह क्या? यहां तो सूरज भी उस





पर हंस रहा था—उसके गाल सुर्ख हो चुके थे।...

चमकू गुबरैला क्रोध से कांपने लगा। उसने सूरज को घूंसा दिखाकर धमकाया :

“ठहरो बच्चू, मैं तुम्हें हंसने का मजा चखाऊंगा। तो ये सब तेरी ही करामात थी! मुझसे जलता है। जा, जा, भाग जा!” और बड़बड़ाते हुए चमकू गुबरैला अपने सड़े ठूठवाले सूराख में घुस गया।

विजेता की पराजय

उस दिन लम्बे-चौड़े खड्ड की ढलान पर (जो सचमुच वासंतिक वर्षा के कटाव से बना एक छोटा-सा गड्ढा ही था) खेल प्रेमी कीड़ों का जमघट लग चुका था। तरह-तरह के रंग-बिरंगे कीड़े-मकोड़े वहां मौजूद थे—काले, लाल, सुनहले और रजतवर्णी। कैप्रीकार्न बीटल ने एक ऊंचे पत्थर पर खड़े होकर दर्शकों को सम्बोधित किया:

“अब आपके सामने ऊंची कूद प्रतियोगिता शुरू होने जा रही है। लाल टांगोंवाला धनकुट्टी आकर अपना खेल दिखाए।”

खड्ड में तरह-तरह की भिनभिनाहटें और भनभनाहटें गूंज उठीं। ये खेल प्रेमियों की आवाजें थीं। वह खड्ड मामूली खड्ड न था, बल्कि जीव-जन्तुओं का एक स्टेडियम था। और कैप्रीकार्न बीटल कोई मामूली बीटल न था, बल्कि ऊंची कूद प्रतियोगिता का प्रमुख निर्णायक था। स्टेडियम के बीचोंबीच दो मजबूत डंठल गड़े थे जिन पर मकड़ी का बुना धागा बंधा था। खेल प्रतियोगिता के प्रारम्भिक दौर में सौ से ज्यादा खिलाड़ी

हिस्सा ले रहे थे, लेकिन वह भीड़ फिसड़ी साबित हुई। और अब मैदान में कुल पांच चुस्त खिलाड़ी रह गए थे। वे पांचों ऊंची कूद के श्रेष्ठ खिलाड़ी थे। वे थे धनकुट्टी, छःबन्दवा, रइयां, पिस्सू और हरा टिड्डा।

“धनकुट्टी ऊंची कूद के लिए तैयार हो चुका है। निर्धारित ऊंचाई है कनखजूरे के दो सौ कदम!” रेफरी ने दोहराया।

अरे, अरे! यह क्या? धनकुट्टी डंठलों के पास आकर धागे के ठीक नीचे चित्त लेट गया। उसके नन्हे-नन्हे छहों पैर हवा में लहरा रहे थे।

“किट, किट, किट!” उसकी बिरादरी के सभी धनकुट्टियों ने उसे उत्साहित किया। उन्हें पूरा यकीन था कि ऊंची कूद का चैम्पियन सिर्फ धनकुट्टी ही बन सकता है।

लाल टांगोंवाला धनकुट्टी पहले की तरह पीठ के बल लेटा हुआ था, उसकी छहों टांगें ऊपर को उठी थीं। फिर मानो किन्हीं अदृश्य हाथों ने उसे तेजी से उछाल दिया। धनकुट्टी ने ऊपर छलांग लगाई और हवा में फुर्ती से घूम गया। लेकिन दुर्भाग्य से उसकी एक टांग मकड़ी के धागे से टकराई, वह टूट गया और खिलाड़ी धनकुट्टी रेत पर आ गिरा। वह सफल न हो सका।

धनकुट्टी को अपनी उस टांग पर तेज गुस्सा आया, उसने अपनी शेष पांच टांगों से उस बेचारी को लतियाते हुए चीखकर कहा:

“ठहर जा तू! तेरी वजह से धागा टूट गया! निकम्मी कहीं की! लानत है तुझे। उस्ताद को धोखा दे गई।”

धनकुट्टी को देखकर सभी ठहाके लगा रहे थे। क्रोध से कांपता हुआ धनकुट्टी अपनी टांग की खबर लिए जा रहा था। इस दौरान मकड़ियों ने दूसरा धागा बुना, कनखजूरे ने अपने नन्हे कदमों से ऊंचाई नापी, चींटियों ने डंठलों पर धागा बांधा। और सेक्सटन बीटल ने कायदे से ज़मीन भुरभुरी की, ताकि कूदनेवालों को चोट-चपेट न लगे। रेफरी ने घोषणा की:

“धनकुट्टी आउट! अब आपके सामने छःबन्दवा आ रहा है।”

इस बीच लम्बी टांगों और बड़ी-बड़ी आंखोंवाला छःबन्दवा अपनी टांगों को मल रहा था, उन्हें कसरत करके लचीला बना रहा था। अब वह खेल के मैदान में डंठलों के पास आया, क्षण भर के लिए ठहरा, पेट पर लटकते जादुई तावीज़ को छुआ। यह कोई मामूली तावीज़ न था, मर्मर-पक्षी के छोटे नख का बना था। ज़रूर अपना रंग दिखाएगा, उसे चैम्पियन बनाएगा।

“शाबाश, छःबन्दवा! आगे बढ़ो। बिरादरी का नाम रोशन करो।” स्टेडियम में मौजूद छःबन्दवों ने उसका उत्साह बढ़ाया।

खिलाड़ी छःबन्दवे ने फिर अपने तावीज़ को छुआ, चैम्पियन बनानेवाला मंत्र पढ़ा। उसने पंजों पर थुथकारा और खूब तेजी से दौड़ पड़ा लेकिन... डंठलों के पास पहुंचकर ठिठक गया। शायद वह ठीक से दौड़ न सका था। पीछे लौट पड़ा, फिर उसने तावीज़ को प्यार से सहलाया और दौड़ पड़ा पूरी शक्ति से, बस, अभी ऊंची छलांग लगाएगा। पर तभी वह रास्ते में रुक गया। तीव्र आशा और जोश-खरोश के कारण



उसकी बड़ी-बड़ी आंखें ज़रा ज़्यादा चौड़ी लगने लगीं। हरे रंग का नन्हा-सा पेट धीरे से कांपने लगा, उसके अगले पंजे जादुई तावीज़ को सहलाए जा रहे थे। उसे अपनी तावीज़ पर पूरा भरोसा था, उसका भाग्य ज़रूर चमकेगा। ... एक और कोशिश: छःबन्दवा तेज़ी से दौड़ा, पर इस बार भी ठहरा और पहले की तरह कूद न सका। ...

“अरे, यह क्या तमाशा है?” रेफ़री भी हैरान था। उसने ज़िन्दगी में पहली बार ऐसा फिसड्डी खिलाड़ी देखा था।

“छःबन्दवा हाय-हाय, छःबन्दवा मुर्दाबाद, छःबन्दवा बुज़दिल है!” सारे स्टेडियम में हंगामा मच गया।

“चल कूद! नखरे न दिखा!” दूसरे छःबन्दवों ने चिल्लाकर कहा। “ससुरा, खानदान की नाक कटवा रहा है!”

“अच्छा, इस बार मैं ज़रूर कूद जाऊंगा,” छःबन्दवे ने वायदा किया। आखिरी बार उसने तिलस्मी तावीज़ को छुआ, मंत्र बुदबुदाया और दौड़ पड़ा... लेकिन फिर वही हुआ। छःबन्दवा खौफ़ खाकर डंठलों के सामने रुक गया।

इस तरह जब वह पचासवीं बार दौड़ा और पचासवीं बार भी खौफ़ खाकर छलांग न लगा पाया, तो रेफ़री का पारा गरम हो गया। उसने पैर पटकते हुए कहा:

“ए मिस्टर, बहुत हो चुका। रफूचक्कर हो जाओ! तुम्हें खेल से निकाला जाता है।”

ठहाकों की आवाज़ से सारा स्टेडियम गूँज उठा। डरपोक छःबन्दवा शर्म से पानी-पानी होकर फ़ील्ड छोड़ चुका था, उसने गुस्से से तावीज़ नोचकर फेंक दी। फिर क्या था? उसने भट से भरपूर छलांग लगाई और खड्ड को पार करके चरागाह में जा छिपा।

“बेवकूफ़ कहीं का!” दूसरे छःबन्दवों ने बड़बड़ाते हुए कहा। “भाइयो, अब देख लो, कितना फुर्तीला है! बेवक्त आसमान को चूम सकता है।”

इस बीच रेफ़री ने अगली खिलाड़िन का नाम पुकारा।

खिलाड़िन रइयां तैयार खड़ी थी। वह हवा में उड़ी, धागे तक पहुंची। लेकिन अफ़सोस! वह धागे से टकराई और महीन धागा टूट गया। खिलाड़िन रइयां रेत पर आ गिरी। बेचारी चैम्पियन होते-होते रह गई। वह गुस्से से खीझकर हवा में पंजे लहराने और मायूसी से चिचियाने लगी: “शर्मनाक! बेहद शर्मनाक! अफ़सोस!”

मकड़ियों ने नया धागा बुनकर चींटियों को दे दिया। कनखजूरे ने ऊंचाई नापी, सेक्सटन बीटलों ने रेत को भुरभुरा किया। पर खिलाड़िन रइयां अपने पैर हवा में लहराती खेल के मैदान में ही पड़ी पछताए जा रही थी:

“शर्मनाक! बेहद शर्मनाक!”

“कृपया वक्त बरबाद न करें। अगले खिलाड़ी को मौका दें और मैदान तुरन्त खाली कर दें।” रेफ़री ने ज़रा सख्ती से उससे कहा।

“अफ़सोस!” खिलाड़िन रइयां ने फिर ठण्डी सांस ली।

“अरे, हार गई तो रोती क्यों हो? हट जाओ और दूसरों को खेलने दो।” स्टेडियम में मौजूद दूसरी रइयों ने उसे भिड़कते हुए कहा।

“शर्मनाक! बेहद शर्मनाक!” रइयां वही-वही राग अलापती रही।

“रइयां को मैदान से उठाकर बाहर कर दो।” रेफ़री ने आदेश दिया।

कुछेक घुड़मक्खियां मैदान में आ पहुंचीं। उन्होंने खिलाड़िन रइयां को जबरन उठाया और एक सूखे पत्ते पर डाल दिया। फिर उसे अनाज के बोरे की तरह घसीटते हुए बाहर ले गईं।

“ऊंची कूद के लिए अगला खिलाड़ी पिस्सू है!” रेफ़री ने घोषणा करते हुए कहा।

खिलाड़ी पिस्सू का आकार खसखस के दाने से बड़ा न था, वह ऊंची कूद के लिए धागे के ठीक नीचे लपककर आया। यकायक वह ज़मीन से चिपककर बैठ गया और स्प्रिंग की तरह हवा में तेज़ी से उछला और उस धागे को बड़ी सफ़ाई से पार कर गया। आखिर यह हुई न बात! असली ऊंची कूद का एक नमूना जो था!

क्षण भर के लिए स्टेडियम में सन्नाटा छा गया। सभी अवाक और हैरान थे। किसे पता था कि नन्हा पिस्सू इतनी ऊंची छलांग लगा जाएगा? सबसे पहले खेल प्रेमी पिस्सुओं ने खुशियां प्रगट कीं।

“ई-ई-ई-ई-ई!” वे सभी अपनी महीन आवाज़ में एक साथ चीखे और उत्साह से उछलने-कूदने लगे।
“ई-ई-ई-ई-ई-ई। हुर्रा, नन्हू भाई!”

“शा-बा-श!” सारा स्टेडियम गूंज उठा।

उधर पिस्सू ने खड़े होकर दर्शकों की ओर गर्व से देखा। उसकी मूंछ ऊंची हो गई। उसने दिखा दिया कि ऊंची कूद में अब्बल नम्बर कौन मार सकता है? अब वह चैम्पियन जो हो गया है। सभी उसे भुक-भुककर सलाम करेंगे, उसका रोब खाएंगे।

लेकिन वह वक्त से पहले खुशियां मना रहा था : अभी प्रतियोगिता खत्म न हुई थी। हरा टिड्डा तो अभी मैदान में उतरा न था। यह ख्याल आते ही पिस्सू का चेहरा उतर गया। कितने अरमान हैं अब्बल आने के! अद्भुत, अद्वितीय कहलाने के!

हरा टिड्डा खेल के मैदान में पहुंच चुका था, पिस्सू मियां की हालत पतली हो गई! उसने टिड्डे की पराजय के लिए मंत्र बुदबुदाना शुरू किया:

“अन्तर-मन्तर-जन्तर,
टिड्डे की टांग टूटे, छूमन्तर।”

उधर रेफ़री ने घोषणा की:

“अब अन्तिम खिलाड़ी हरा टिड्डा कूदने जा रहा है।”

अगर सच कहा जाए तो टिट्टे के चैम्पियन बनने में किसी को शक न था। वह बड़ी खूबसूरती से ऊंचाई तक कूद सकता था और उसकी ऐसी लम्बी टांगें। ... खिलाड़ी ने गहरी सांस ली, अपने हरित वस्त्र संभाले, ताकि वे कूदने में उलभें नहीं। वह दौड़ा और सनसनाता हुआ हवा में उछल गया। मकड़ी के धागे से काफ़ी ऊपर तक कूद गया ... लेकिन यह क्या हुआ? अरे-अरे-अरे! उसका हरित परिधान पंजे से छूटकर धागे में उलभ गया और धागा टूट गया ... बैड लक! पराजय!

“ओह-ओह-ओह!” टिट्टे के समर्थक दर्शकों ने अफ़सोस प्रगट किया।

“हुर्रा!” विजेता पिस्सू खुशी से उछल पड़ा। “मैं चैम्पियन बन गया!”

खिलाड़ी टिट्टे ने उठकर धूल झाड़ी। बेशक उसे अपनी पराजय से गहरी ठेस पहुंची थी, फिर भी उसने रेफ़री को नम्रता से धन्यवाद दिया। साथ ही अच्छी व्यवस्था के लिए उसने मकड़ियों, चींटियों, सेक्सटन बीटलों और कनखजूरे के प्रति भी आभार प्रगट किया। उसके बाद वह पिस्सू के पास आया और उसने जीत के लिए पिस्सू को भी हार्दिक बधाई दी! लेकिन मियां पिस्सू यानि कि नए चैम्पियन का दिमाग सातवें आसमान पर था। उसने दोस्ती के लिए बड़े हाथ की उपेक्षा कर दी और सद्भाव को ठुकरा दिया!

इसके बाद टिट्टे ने मुस्कराकर सारे स्टेडियम के प्रति आभार प्रगट किया। और अपना वायलिन लेकर उसे बजाते हुए गाने लगा:

“यारो, आओ, खुशियां मनाओ,
खेल खेल है रोना क्या?
अगर खिलाड़ी खेल में हारे,
बोलो फिर पछताना क्या?”

खिलाड़ी टिट्टे का गीत इतना उत्साहवर्द्धक था कि सारा स्टेडियम उसके सुरीले गीत पर नाचने-थिरकने लगा। खुद रेफ़री और यहां तक कि चैम्पियन पिस्सू के खानदानी भाई-बन्धु तक टिट्टे के साथ मिलकर गीत के बोल दोहराने लगे:

“अगर खिलाड़ी खेल में हारे,
बोलो फिर पछताना क्या?”

उदास पिस्सू ने अपनी मूंछ कुछ नीचे झुकाई और अपने चारों तरफ़ देखा। अरे, यह क्या हो रहा है? अजीब बात है। सभी कीड़े-मकोड़े घमण्डी चैम्पियन का साथ छोड़कर खुशी से नाचते-गाते वायलिन वादक हरे टिट्टे के पीछे-पीछे चले जा रहे थे। खाली स्टेडियम में पिस्सू अकेला रह गया। पर उसे उम्मीद थी कि कम से कम निकट संबंधी तो लौट आएंगे, उसका स्वागत करेंगे, उसकी प्रशंसा के पुल

बांधेंगे और हंसते-खिलखिलाते उसे घर तक विदा करने आएंगे। लेकिन लौटकर वहां कोई न आया।
सिर्फ हवा की लहरों पर तैरते गीत के ये बोल सुनाई पड़ रहे थे :

“अगर खिलाड़ी खेल में हारे,
बोलो फिर पछताना क्या?”

“तुम सब जहन्नुम में जाओ! तुम्हारी टांगें टूट जाएं!” पिस्सू ने कोसते हुए कहा। उसे अकेले
में स्टेडियम छोड़ना पड़ा।

लेकिन उसका कोसना बेकार साबित हुआ। सिर्फ गीत के बोल अभी भी गूंज रहे थे :

“अगर खिलाड़ी खेल में हारे,
बोलो फिर पछताना क्या?”

जिन्दादिल टिड्डा

एक टिड्डा बेचारा, किस्मत का मारा मजे से खा-पीकर डैण्डेलियन की पत्तियों की छाया में बैठा झपकियां ले रहा था कि इसी वक्त एक लड़के ने चुपके-चुपके आकर उसकी एक पिछली टांग को धर दबोचा। अर्धनिद्रा में ही टिड्डे ने अपने आप को एक भरपूर झटका देकर छुड़ाने का प्रयास किया। पर वह आजाद न हो पाया और अपनी एक टांग भी गंवा बैठा। तब उसने भाग निकलने का प्रयास किया, लेकिन छलांग न लगा सका कि उस पर आफत का पहाड़ टूट पड़ा और उसके हरे पंख को मौका पाते ही लड़के ने फिर पकड़ लिया। उसने टिड्डे को घर लाकर कांच की औंधी गिलास से ढंक दिया। उसने गिलास के अन्दर मुलायम घास और रूई की नरम-नरम परत बिछा दी ताकि टिड्डा वहां आराम से सो सके। खाने के लिए डबलरोटी का चूरा भी डाल दिया गया। इस तरह खिड़की के दासे पर टिड्डे भाई को एक जीते-जागते खिलौने की तरह शीशे के घर में बैठा दिया गया।

उस रात टिट्टे को एक स्टेडियम दिखा, जहां आयोजित ऊंची कूद की प्रतियोगिता में वह सौभाग्यशाली रहा और चैम्पियन बन बैठा। उसने न केवल मकड़धारे को ही कूदकर पार किया, बल्कि एक खूब ऊंचे चीड़ वृक्ष को भी फांद गया। लेकिन इस बीच दर्द के कारण उसकी नींद खुल गई, सपना टूट गया — अचानक उसने उस जगह पर तीव्र पीड़ा महसूस की जहां से उसकी टांग टूटकर अलग हो गई थी। (अन्यथा वह चांद की नीली छत तक छलांग लगा गया होता।) तभी उसे याद आया कि वह शीशे के एक जेलखाने में कैद है। ... सुबह हो चुकी थी। वह शीशे की दीवार को अपनी शेष पांच टांगों से ठकठकाता रहा, मूंछों को गिलास की किनारी के नीचे घुसेड़ता रहा, पर कोई फायदा न हुआ बल्कि उसका जख्म और बुरी तरह दुखने लगा। थका और खीभा हुआ टिट्टा अपने बिस्तर पर गिर पड़ा। खिड़की के बाहर प्योनिया की झाड़ी को मायूसी से देखने लगा, जहां बहुत-सी मधुमक्खियां फूलों के बीच भनभना रही थीं और एक इल्ली लम्बे-से मकड़धारे पर पेड़ से उतर रही थी। आह, वे कितने स्वतंत्र और स्वस्थ हैं!...

वह अपनी बेचारगी और मायूसी से खिन्न होकर रो पड़ा होता, लेकिन इसी वक्त एक भारी-भरकम मक्खी शीशे के कैदखाने की बन्द चहारदीवारी पर आ बैठी। मक्खी की तोंद बढ़िया-बढ़िया खाने से फूली हुई थी। उसने धीरे से तोंद पर हाथ फेरा और टिट्टे को गौर से देखा। क्षण भर बाद उसने टिट्टे को एकटक घूरते हुए गिलास का कई बार चक्कर लगाया। यकायक हंसी के कारण उसकी भारी तोंद हिलने लगी।

“अरी, सहेलियो!” उसने मक्खियों को भनभनाते हुए बुलाया। “आओ, आओ, जल्दी आओ। एक अजूबा देखो। हरा वायलिन वादक... कांच की इस जेल में कैद है। हंसते-हंसते पेट फट जाएगा। ज़रा संभलके आना।”

बस, इतना कहते ही गिलास के चारों तरफ छोटी-बड़ी मक्खियों की भीड़ लग गई। धक्का-मुक्की होने लगी। वे सब मिलकर टिट्टे को चिढ़ाते हुए यह राग छेड़ बैठे:

“उछल-कूद करते-करते, फंस गए बच्चू फंदे में।”

पहलेवाली मोटी मक्खी ने अपनी आवाज़ में मिसरी धोलते हुए, टिट्टे को चिढ़ाकर कहा:

“कहिये, कांच का महल आपको कैसा लगा?”

“बहुत अच्छा!” टिट्टे ने हंसकर जवाब दिया। “सच पूछो तो आराम की जगह है। एक तो यहां सर्दी से बचाव है, दूसरे — दुश्मनों का खतरा नहीं। आंधी-पानी और हिमपात सताते नहीं। और हां, यहां से बैठे-बैठे बाहर का जायज़ा भी ले सकता हूं। खाने-पीने की पर्याप्त सुविधा है और सोने के लिए नरम-नरम बिस्तर। मेरे इस शीश-महल में तो राजसी ठाट हैं। और मुझे चाहिए ही क्या?”

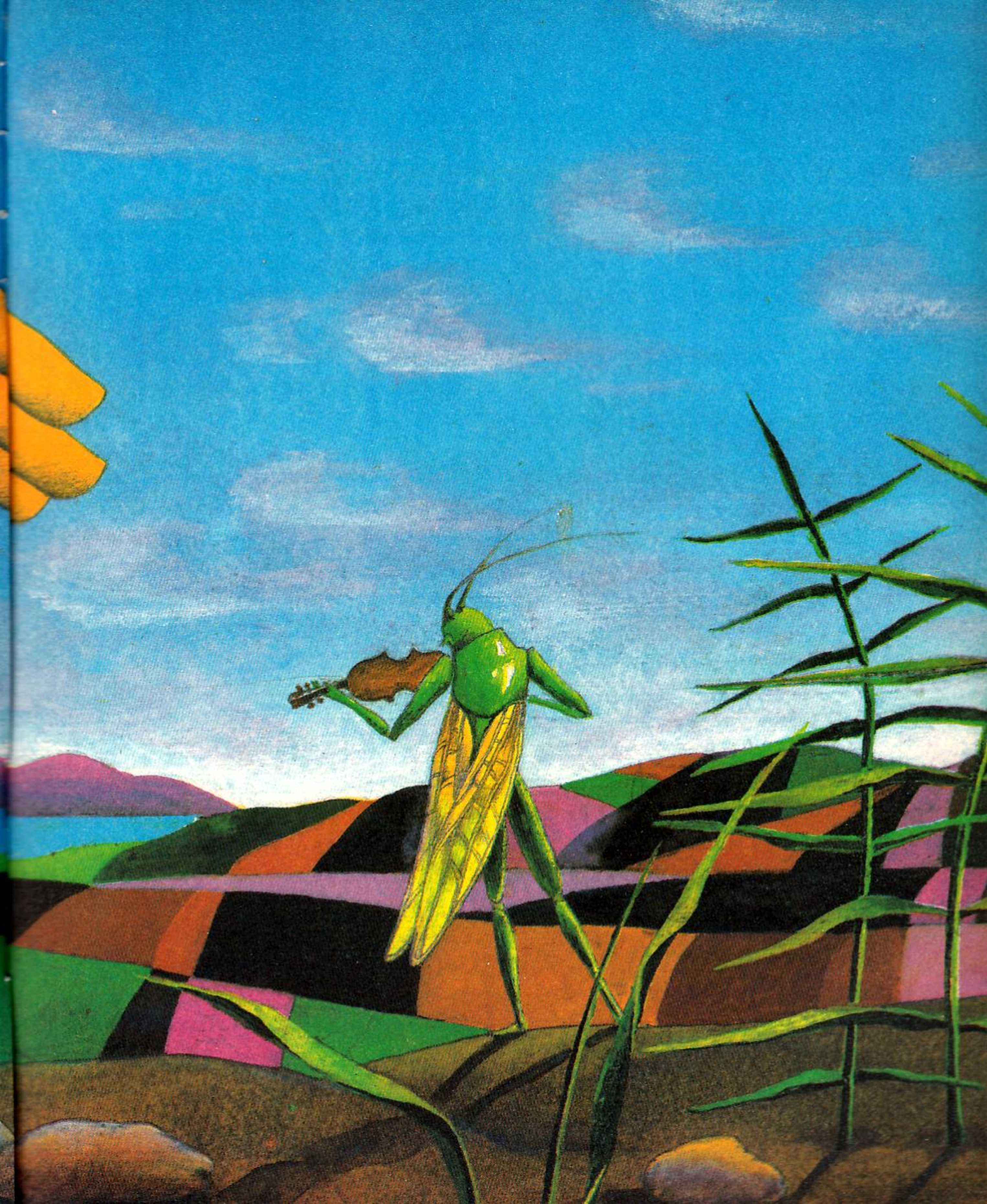
“आखिर यह कह क्या रहा है?” दूसरी मक्खियों ने उसकी बात नहीं सुनी, उन्होंने ज़रा उत्सुकता से पूछा, “अपना दुखड़ा रो रहा होगा?”

यह सुनते ही बड़े पेटवाली मक्खी ने दुर्भाविना से पूछा:

“शाबाश! एक टांग गंवाकर कहते हो सब ठीक है, सुख-चैन है। है न?”

“ओह मेरी टांग!” टिट्टे ने उपेक्षा से कहा। “अरे, खेल-खेल में मैंने खुद उसे मरोड़कर उखाड़





दिया। फिलहाल उसकी मरम्मत हो रही है। और मुझे यहां इस साफ़-सुथरे, रोशनीदार वार्ड में भर्ती कर दिया गया है, ताकि तरह-तरह की गन्दी मक्खियां मेरे जख्म पर न बैठ सकें। रोग के कीटाणु न फैला सकें!”

“यह तो बड़ा रोब मार रहा है!” मक्खियों ने मुंह फुला लिया। फिर भी उन्होंने उसका विश्वास किया। उन्हें टिड्डे के राजसी ठाट से ईर्ष्या हुई। वे एक साथ भनभनाई:

“बाप रे बाप! ज़रा इस रईस के ठाट तो देखो! खुद इस महल में रहता है और हम दर-दर की ठोकर खाते हैं। और तो और, उसकी टांग मरम्मत के लिए भी भेज दी गई। ऊपर से अकड़ता है, हमें गन्दा कहता है। बड़ा आया सफ़ाईवाला!”

मक्खियां क्रोध से गिलास पर थूकने ही वाली थीं, लेकिन यह संभव न हो सका, उनका सारा भुण्ड ऊपर उड़ा और भनभनाता हुआ जल्दी से बाहर निकल गया। मकड़ी जो दिख गई थी! एक मकड़ी मक्खियों की भनभनाती भीड़ देखकर वहां आ पहुंची, वह लम्बे मकड़धागे के सहारे छत से नीचे उतर आई।

मकड़ी बड़ी देर तक गहरे सोच में डूबी टिड्डे को घूरती रही। आखिर यह माजरा क्या है? और उधर टिड्डे ने मजे से अपनी वायलिन संभाली और एक नृत्य-धुन बजाने लगा।

“यह शोर क्यों मचा रहे हो? यह संगीत किसलिए?” मकड़ी ने आखिरकार पूछा। “कोई खुशी का अवसर है क्या?”

“बेशक, खुशियां ही खुशियां हैं,” टिड्डे ने बड़ी नम्रता से कहा। “मुझे आज कला-जगत ने सम्मानित किया है। मेरे कार्यों के लिए महान संगीतकार की उपाधि दी गई है और यह विशाल रंगमंचवाला पारदर्शी हॉल मुझे उपहार में मिला है। है न महान पर्व, खुशियां ही खुशियां हैं!”

“अच्छा, समझ गई, समझ गई!” मकड़ी ने व्याकुलता से कहा। “लेकिन तुम्हारी दाहिनी टांग को क्या हो गया है? वह थिरकती क्यों नहीं?”

“टांग? अब देखिये न,” टिड्डे ने धीरे से मुस्कराकर कहा, “जब मुझे महान संगीतकार का खिताब मिला, तो सैकड़ों संगीत प्रेमियों का मेरे यहां जमघट लग गया, भीड़ संभाले न संभल रही थी, सभी मुझे बधाई देने आए थे। उन्होंने हार्दिक बधाइयां देते हुए मेरे दाहिने पैर को बारी-बारी से इतना हिलाया कि मेरी टांग की शामत आ गई। और उसे तुरन्त अस्पताल भेजना पड़ा। अभी उसका इलाज चल रहा है। शीघ्र ही वह फुर्ती से काम करने लगेगी।”

“अच्छा! मैं समझ गई।” यह कहकर मकड़ी थोड़ा उठी और गेन्डीनुमा टांगों का सहारा लेकर फिर बैठ गई। “अब समझी! अगर मुझे भी इत्ता बड़ा, इसी तरह का, सर्वश्रेष्ठ बुनकरोवाला कोई इनाम मिला होता तो मैंने भी खुशी-खुशी अपनी एक क्या — दो-तीन टांगें ऐसे महान प्रशंसकों की ओर बढ़ा दी होतीं! लेकिन किसी ने आज तक मेरी अनोखी प्रतिभा को नहीं सराहा। न मुझे सम्मान के योग्य ही समझा गया!”

यह कहकर उदास मकड़ी अपने मकड़घागे के सहारे छत पर जा चढ़ी और बड़बड़ाते हुए नया घागा बुनने लगी।

उधर टिट्टा अपने शीश-महल में अकेला रह गया। लेकिन शीघ्र ही यह अकेलापन भी दूर हुआ। एक तितली खिड़की के दासे पर उड़कर बैठ गई। यह पत्तागोभी में रहनेवाली तितली थी। उसने जैसे ही कटी टांगवाले टिट्टे को कांच के गिलास में बन्द देखा, उसकी रूह कांप उठी। वह जोर से चीख पड़ी:

“हाय रे! कैसा भयानक है!” यह कहते हुए तितली ने अपनी आंखों को रुमाल से ढंक लिया, ताकि वह अपाहिज टिट्टे को न देख सके। “खौफनाक! भयंकर! बेचारा बदनसीब! अपूर्णनीय क्षति!”

“तुम्हें क्या हो गया है तितली रानी?” टिट्टे ने हैरानी का पुट देते हुए कहा। “आखिर इस तरह आहें क्यों ले रही हो? लगता है बहुत बीमार हो! देखो, कैसी पीली पड़ गई हो! तुम्हारे पंख पर ये काले-काले धब्बे...” टिट्टे ने तितली का मजाक उड़ाते हुए कहा।

“क्या मैं तुम्हें पीली दिखती हूं? सचमुच? ठीक है! मैं पीली तो पड़ गई हूं। शायद मुझे पीलिया हो गया है? हाय रे!”

“तुम्हारी तबियत खराब है!” टिट्टे ने हमदर्दी जताई। “बिल्कुल मुरभाई लगती हो!”

लेकिन तितली की मोटी अकल में टिट्टे का मजाक न धंस पाया। वह घबड़ा गई — उसका स्वास्थ्य जो खराब था।

“क्या मैं बीमार लगती हूं? सचमुच?” वह बुरी तरह डर गई। “हां, मेरा भी यही ख्याल है, मैं काफ़ी दिनों से अशक्त हो चली थी। पत्तागोभियों पर छिड़के जहरीले पाउडर ने तो मुझे मार ही डाला है। क्या यही आहार है? शायद मुझे सिरोसिस और एनीमिया है। भट से घर पहुंचकर कोई दवा लेनी होगी। आराम की जरूरत है। कैसी बदनसीब हूं मैं? कभी कोई परेशानी, तो कभी कोई बीमारी घेर ही लेती है।” उसने पुनः अपनी आंखों को रुमाल से ढंक लिया। “भाई, माफ़ करना! तुम्हारे साथ गपशप के लिए मेरे पास समय नहीं है। तुरन्त कोई डाक्टर तलाशना होगा।” इस तरह हाय-तोबा करती हुई तितली उड़ गई। जिन्दादिल टिट्टे ने अफ़सोस से सिर हिलाते हुए सोचा:

“ओह, ये तितलियां और मकड़ियां तो खुश रहना जानती ही नहीं हैं, जो उनके पास है, उस स्वास्थ्य और स्वतंत्रता का मूल्य तक नहीं समझतीं।” टिट्टे ने खिड़की के बाहर देखा। एक अबाबील ज़मीन के थोड़ा ऊपर हवा में तैर रही थी, दो नरटर्की अपनी लाल-लाल दाढ़ियां हिलाते, पंख फड़फड़ाते हुए जोर-आज़माइश कर रहे थे, करीब ही एक कनखजूरा खिड़की की सफ़ेद चौखट पर जल्दी-जल्दी दौड़ रहा था — उसकी फुर्तीली नन्ही-नन्ही टांगें कल-पुरजे-सी झलक रही थीं। अपाहिज टिट्टे को देखकर वह ठिठक गया। उसे अपनी आंखों पर यकीन न हुआ। उसने हमदर्दी से अपना सिर हिलाया।

उधर टिट्टा अपनी करुण मुस्कान बिखेरता रहा, उसकी नन्ही-नन्ही असंख्य स्वस्थ और फुर्तीली टांगों को टुकुर-टुकुर निहारता रहा। अचानक उसे लगा कि अब वह अपनी बदकिस्मती पर खुशहाली का मरहम

न लगाएगा, गढ़े हुए किस्से न सुनाएगा। बहुत हो चुका। उसकी नन्ही-नन्ही आंखों से आंसू ढुलकने लगे। ...

“ओ प्रकृति मां! कैसा अन्याय है तेरा! तू अपने एक बेटे को चालीस-चालीस टांगें देती है और दूसरे को इतनी कम कि वह एक टांग कटने पर अपाहिज हो जाता है। ...”

कनखजूरे ने अपनी पैनी आंखों से दुखी टिड्डे के मन की बात जान ली।

“भैया, मेरे चालीस पैर हैं तो क्या हुआ! मामूली मुर्गी दौड़ में मुझे हरा सकती है। यह सच है कि प्रकृति मां ने हम सभी को अलग-अलग संख्याओं में तरह-तरह की टांगें दी हैं। लेकिन सबके पास एक ही दिल है। वह दिल ही सबसे बड़ी दौलत है। और टिड्डे भाई, तुम्हारे दिल की हिम्मत और बहादुरी का मुकाबला तो हजार-हजार टांगें नहीं कर सकतीं! आखिर तुम्हें रंज किस बात का?”

“धन्यवाद, मेरे भाई। तुम्हारी नम्रता और सहानुभूति को मैं न भूल पाऊंगा।” भरे गले से हरे वायलिन वादक ने कृतज्ञता प्रगट की। “भाई, तुमने मेरा खोया हुआ विश्वास लौटाया है, मेरी कमजोर रगों में नए जीवन का संचार किया है।”

उसने डबडबाई हुई आंखें पोंछ डालीं और अपनी वायलिन उठाकर बजाने लगा। उसने एक नए गीत की रचना की। शीशे के उस पारदर्शी कैदखाने में वह गीत गूंज उठा:

“देखो मेरा शीशे का घर—
बिछा है नरम-नरम बिस्तर!
पास है मेरे नन्ही वायलिन,
बोलो: अब गम काहे का?!”

सुबह हुई तो सूरज आए,
पिघला सोना बह-बह जाए!
रात हुई तो चन्दा आए,
पिघले चांदी भर-भरभर!”

छत पर फंस गया बिल्ला

बारहमंजिली इमारत की सपाट छत पर टेलीविजन के एन्टेनों के बीच एक घुमक्कड़ बिल्ला बेचैनी से छटपटा रहा था। उसे किसी तरह विश्वास न हो पा रहा था कि वह फंस गया है। लोग उसे व्यर्थ ही घुमक्कड़ बिल्ला नहीं कहते थे। वह बेहद चालाक और खूब फुर्तीला था। सड़क पर दौड़ती मोटर गाड़ियों के बीच से निकल भागता था। कभी झपटकर पेड़ों पर चढ़ जाता, तो कभी एक बरामदे से दूसरे बरामदे में पहुंच जाता। लेकिन यहां इस छत पर...

यह घटना यूं घटी। लगभग एक घण्टे पहले घुमक्कड़ बिल्ला बारहवीं मंजिल की सीढ़ियों पर खरटि ले रहा था कि इसी बीच एक टी० वी० मैकेनिक लिफ्ट से ऊपर पहुंचा। वह लोहे की एक छोटी सीढ़ी के सहारे छत से सटे लौह द्वार तक आया और ताला खोलकर छत पर पहुंच गया। घुमक्कड़ बिल्ले ने कभी इतनी ऊंची छत पर घूमने का सुख न उठाया था। आखिर उसे जिज्ञासा तो थी ही? देखते ही देखते वह बिल्ला सीढ़ियों पर चढ़ा और छलांग लगाकर छत पर पहुंच गया। शायद टी० वी० मैकेनिक ने उसे नहीं

देखा, अगर देखा भी हो तो अपने काम में व्यस्त होने के कारण उसे भूल ही गया। इस बीच बिल्ला नीचे दूर-दूर तक फैले शहर को मंत्रमुग्ध होकर देखने लगा। “अहा, कितना सुन्दर दृश्य है! दुनिया कितनी बड़ी है! आखिर यह हुई न बात!” बिल्ले ने मन ही मन सोचा। जब तक कि बिल्ला आंखें फाड़कर शहर को देखता रहा, गटरगूं करते कबूतरों को उड़ाता, पंजे से अपनी मूंछें ऐंठता, म्याऊं-म्याऊं करता रहा, ताकि नीचे दौड़ता हुआ कुत्ता बाबिक उसे देख ले, इस बीच टी० वी० मैकेनिक अपना काम खत्म करके छत से बाहर निकला और दरवाजा भड़ाक से बन्द हो गया। उसके बन्द होते ही बिल्ला हड़बड़ाया, उस ओर दौड़ा, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।

इस तरह वह अस्फाल्ट से ठंके लम्बे-चौड़े मैदान-सी छत पर अकेला रह गया, जहां टी० वी० एन्टेनों की लम्बी कतार और चिमनियों के अलावा कुछ न था। सच है कि शुरू में बिल्ले को यह न अखरा, बल्कि वह खुश हुआ। उसे इस साहसिक अभियान पर गर्व था। यहां से वापस लौटकर वह अपने दोस्त बाबिक समेत सभी बिल्ले-बिल्लियों को इस अभियान के किस्से सुनाएगा! उसने खुद का धीरज बंधाया: “फ्रिक् न करो, यार! कहीं इससे बुरा हाल होता तो! अपने बूढ़े दादा जी फ्रिजूल तो नहीं कहते थे: तिकड़मी बिल्ला रास्ता ढूंढ़ लेता है!”

सूरज की किरणों में पर्याप्त गर्माहट थी। अस्फाल्ट से पिघले तारकोल की भीनी-भीनी गन्ध घुमक्कड़ बिल्ले के नथुने में समा गई और वह मजे से धूप में पसर गया। जल्द ही नींद आ गई। नींद में बिल्ले ने एक मोहक सपना देखा। ऐसा सपना उसने कभी न देखा था। शायद उसके बूढ़े दादा ने भी नहीं! उस तरह का सपना देखने के लिए तो सौवीं मंजिल पर ही चढ़ना होता है, बारहवीं मंजिल की बात क्या।

सपने में घुमक्कड़ बिल्ले को क्या दिखा? उसने देखा कि वह बादलों पर उड़ रहा है। वहां खूब मोटी मखमली कालीन बिछी है और वह भी ऐसी लम्बी कि उसका दूसरा छोर जमीन तक फैला हुआ है। इस मखमली कालीन पर ऊपर की ओर एक खूबसूरत बग्घी चली आ रही है, उसमें सोलह सफ़ेद चूहे जुते हैं। और गाड़ीवान की जगह एक भूमर चुहिया मजे से बग्घी हांक रही है। वह चाबुक की तरह अपनी लम्बी दुम को घुमा-घुमाकर बग्घी में जुते चूहों पर फटकार रही है और चूहे उसे पूरी शक्ति से उड़ाए लिए जा रहे हैं। देखते ही देखते वह बग्घी बादलों तक पहुंची और घुमक्कड़ बिल्ले के पास ठहर गई। चुहिया ने बग्घी का दरवाजा खोला और बग्घी में रखा हुआ शुतुरमुर्ग के पंखवाला हैट और मुलायम चमड़े का एक जोड़ा जूता निकाला—हबहू वैसा ही सुन्दर-सा, जैसा कि उस “बूटवाले बिल्ले” ने एक रंगीन तस्वीर में पहन रखा था। और ज़रा सोचिये कैसी-कैसी शानदार चीजें हमारे बिल्ले के लिए उपहार में आई थीं! चुहिया ने बड़े अदब के साथ उसे हैट भेंट किया, जूते पहनाए और फिर वह सुनहरे राजचिह्न वाली उस बग्घी पर बड़ी शान से बैठ गया! चुहिया ने सांय की आवाज़ के साथ अपनी चाबुकनुमा दुम को फटकारा और बग्घी चल पड़ी—कालीन-पथ पर, धरती की ओर!

बग्घी शान से चली जा रही थी। शहर के सभी बिल्लियों, कुत्तों, कौवों और गौरैयाओं ने उसे ईर्ष्या से देखा। गर्व से तना घुमक्कड़ बिल्ला खिड़की के बाहर भांक-भांककर मांस के टुकड़ों को मुट्ठी भर-भर बड़ी उदारता से लुटाने लगा। खूब छीना-भपटी होने लगी! यह सब ऐसा मजेदार था, इतना लुभावना था

कि बिल्ला नींद में मुस्करा उठा। और... उसकी नींद टूट गई। अलसाया हुआ घुमक्कड़ बिल्ला खुशी से पंजे उठाते हुए ज़रा और पसर गया। वह अपना थूथन धोने ही जा रहा था। पर उसे अचानक ख्याल आया कि वह कहां आ फंसा है। दूर क्षितिज पर सूरज डूब रहा था, छत ठण्डी हो चली थी। बिल्ले का दिल बैठ गया। वह छत के दरवाजे की ओर भागा—शायद वह खुल ही गया हो? लेकिन वह तो पूर्ववत् बन्द था। पर हाय रे, उसे तो खूब जोर से भूख लगी है और खाने की चीज़ें छत पर तो कोई रखता नहीं। वैसे वह किसी मोटे सुस्त कबूतर को दबोचने की कोशिश कर सकता था। लेकिन कबूतर इस नए खतरे से सतर्क थे, वे सब पड़ोस की छत पर बसेरा ले रहे थे। वहां उन्हें कोई खतरा न था। उनकी छत पर बिल्ला जो बैठा था। अब वे वहां बैठे हुए अभागे बिल्ले की हरकतें देख-समझ रहे थे।

मायूस बिल्ला छत के किनारे पहुंचा और उसने भांककर नीचे देखा। बाप रे, इत्ता ऊंचा है! उसका सिर चकराने लगा। नीचे काले धब्बे की तरह, सुनसान मैदान दिखाई दे रहा था। लेकिन बिल्ले को अच्छी तरह मालूम था कि पास ही छत के नीचे खिड़कियां और बाल्कनियां थीं। तो क्या वह छलांग लगाने की कोशिश करे? नहीं! इसका तो इरादा ही छोड़ दो। कूदकर रेलिंग को पकड़ पाना संभव न था। और चूकने का मतलब था गिरकर मर जाना।

“म्याऊं-म्याऊं-म्याऊं!” बिल्ले ने गला फाड़कर चिल्लाना शुरू किया। उसे उम्मीद थी कि कोई उसकी मदद के लिए आगे आएगा।

उसने दरवाज़ा खुलने की आहट सुनी, कोई बाल्कनी में आया।

“म्याऊं-म्याऊं-म्याऊं!” बिल्ले ने चीखने-चिल्लाने में पूरी शक्ति लगा दी।

“चुप रह! सत्यानाश हो तेरा!” बाल्कनी से एक गुस्सैल आवाज़ सुनाई दी और बिल्ले की उम्मीद पर पानी फिर गया।

बेचारा बिल्ला बस रोने को ही था। वह छत के किनारे से दूर हट गया और टी०वी० एन्टेनों की कतार को ज़रा गौर से देखने लगा। सहसा उसे एक युक्ति सूझी: “अगर किसी एक एन्टेना को गिरा दिया जाए तो बात बन सकती है। यानि कि टी०वी० खराब हो जाएगा और एन्टेने की मरम्मत के लिए फिर से मैकेनिक आएगा!” बिल्ला खूब जोर से दौड़ा और उसने एक भरपूर हमला एन्टेनेवाली लोहे की छड़ पर किया। एन्टेना टस से मस न हुआ, बल्कि उससे टकराते ही वह दर्द से कराह उठा। तब उसने एक और तरकीब सोची! इस बार उसने धीरे-धीरे एन्टेने को गिराने की कोशिश की लेकिन वह पहले की तरह हिला तक नहीं।

“लो, आ गई शामत!” उसने मानते हुए एक गहरी सांस ली।

रात हो चली। चांद निकल आया।

बिल्ले ने ठण्ड से ठिठुरते हुए किसी तरह रात बिताई। इस बार उसे स्वप्न से भी राहत न मिली। जब कभी वह आंखें मूंद लेता तो उसके सामने वे मांस के बड़े-बड़े टुकड़े नाचने लगते जिन्हें वह स्वप्न में बग्घी से लुटा रहा था।... इस तरह वह रात भर करवटें बदलता रहा। और अन्त में सुबह हो गई। बिल्ले की जान में जान आई। चमकते सूरज की गर्मी ने उसे नई शक्ति दी। वह फिर से छत के किनारे पहुंचा। इस

बार नीचे मैदान में उसका दोस्त — कुत्ता बाबिक दिखलाई दिया। वह दीवार के करीब रुका। फिर उसने ऊपर की ओर देखा, बिल्ला छत से नीचे भांक रहा था।

“अहाहा!” बाबिक ने हैरानी से पूछा। “यार, तुम छत पर हो? नीचे आओ! क्या वहां बहुत सारे चूहे हैं?”

“भाई, मैं यहां टी०वी० एन्टेनों की रखवाली करता हूं।” बिल्ले ने ज़रा वजनदारी से कहा। “तनख्वाह भी ठीक-ठाक है। रोज़ शाम को टर्की चिड़िया की एक टांग खाने को मिल जाती है!”

“क्या समूची टांग? लेकिन तुम इतने दुबले क्यों हो?” कुत्ते ने हैरानी से पूछा।

“अरे, तुम्हारी आंखें कमजोर हो गई हैं। चश्मा लगाओ, चश्मा।” बिल्ले ने रुखाई से कहा।

कुत्ते बाबिक ने कोई उत्तर न दिया, अन्दर से मुर्गी की हड्डी बाहर उठा लाया। और सुबह का नाश्ता करने लगा।

ऊपर छत पर खड़े बिल्ले को भी मुर्गी की महक लगी और हड्डी चबाने की कड़कड़ाहट सुनाई दी। बिल्ले के पेट में कहीं ज्यादा जोर-जोर से चूहे कूदने लगे, आंख के सामने अन्धेरा-सा छा गया।

“अभी मौका है, नीचे उतर आओ। थोड़ा तुम्हें भी मिल जाएगा।” बाबिक ने दोस्त बिल्ले से कहा।

“यार, तुम भी!” बिल्ले ने ज़रा रोब से कहा। “मैंने वचन दे रखा है, यहां से एक क्षण के लिए न हटूंगा। समझ गए न!”

उसने बाबिक को सच-सच बता दिया होता कि वह विपत्ति में फंस गया है। लेकिन कुत्ता उसकी मदद भी क्या कर पाता, बल्कि शहर भर के कुत्ते-बिल्लियों को घूम-घूमकर किस्से सुनाता कि घुमक्कड़ बिल्ला बारहमंजिले मकान की छत पर फंस गया है। तब तो सभी उसका मज़ाक उड़ाते। इसलिए बिल्ला वहां से हटा और छत की दूसरी ओर पहुंच गया, ताकि यहां मुर्गी की हड्डी की गंध उस तक न पहुंचे। लेकिन यहां छत से सटे बिजली के तार पर बैठी गौरैयां गपशप कर रही थीं। बिल्ले ने चिड़ियों से नज़र बचाई और वहां से हटकर चिमनी के पीछे छिप गया। लेकिन एक चिड़िया ने उसे देख लिया। वही हुआ, जिसका बिल्ले को भय था। चिड़िया ने जोर-जोर से चहकना शुरू किया:

“वाह! खूब, बहुत खूब! छत पर फंस गए बिल्ले मियां। हाय रे, बेचारा नीचे उतर ही नहीं पा रहा है।”

“फंस गए, फंस गए!” चिड़ियों ने चहकते हुए कहा। उनके फुदकने और भूम-भूमकर बतियाने से बिजली का तार हिलने लगा। उसी समय चिड़ियों के संगीत निदेशक ने अपने पंख लहराए और शौकिया कोरस गायकों ने बिल्ले को चिढ़ाते हुए गाना शुरू किया:

“हंसी आ रही — हा, हा, हा!

हाय बेचारा, हा, हा, हा!

गाज गिरी जब अक्ल के ऊपर!

बिल्ला फंस गया छत के ऊपर!

बोलो बेचारा अब क्या करे?
 ताला बन्द है भूखों मरे!
 उतर नहीं सकता वह भाई!
 बुद्ध राम की शामत आई!”

बिल्ले को चिढ़ानेवाला गीत सुनते ही उसके वफ़ादार दोस्त बाबिक को बुरा लगा, वह चिड़ियों पर जोर से गरजा:

“बकबक बन्द करो। मेरे दोस्त बिल्ले को पहरेदारी करने दो। वह कोई ऐरा-गैरा नहीं है। एन्टेना-रक्षक है, उसे तनख्वाह मिलती है। फिज़ूल की बातें मत करो।”

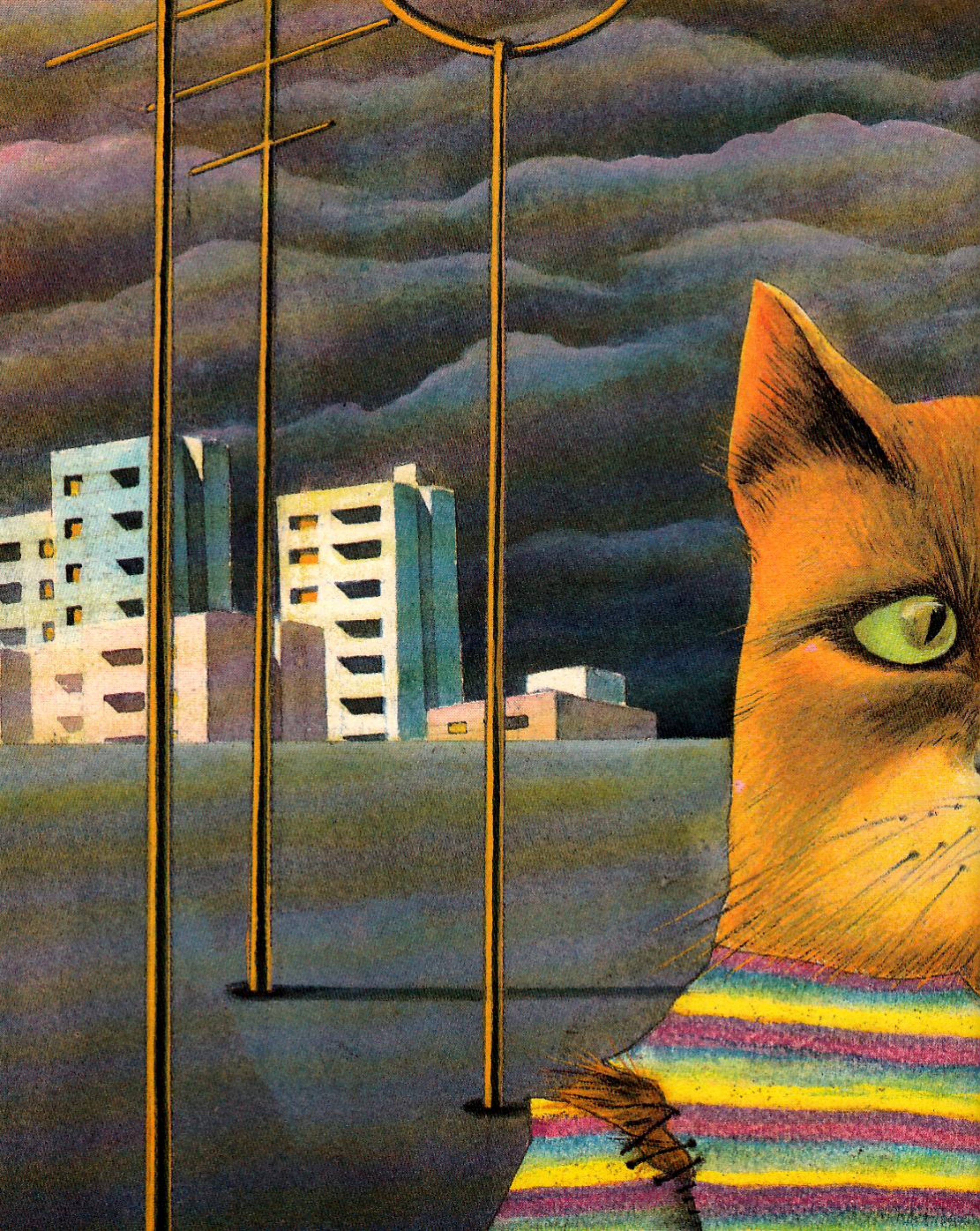
लेकिन चिड़ियां भला क्यों चुप रहतीं? गायकों ने और जोर-जोर से गाना शुरू किया:

“हंसी आ रही — हा, हा, हा!
 हाय बेचारा हा, हा, हा!
 एन्टेना-रक्षक बिल्ला प्यारा!
 दिखता है वह सबसे न्यारा!
 छत पर कांपे सारी रात!
 नहीं समझ में आती बात!
 एन्टेने सब उड़े जा रहे!
 घर से बुद्ध यहां आ रहे!”

इस तरह धुमक्कड़ बिल्ले का दूसरा दिन भी बड़ी परेशानी से बीता। इतना ही होता तो शायद गनीमत थी। लेकिन शाम हुई तो आसमान पर काले बादल घिर आए, बिजली चमकी, बादल गरजे और मूसलाधार बारिश होने लगी। आखिर बेचारा बिल्ला सिर कहां छिपाता। वह खुली छत पर एकदम लाचार-सा पड़ा रहा और पानी से तरबतर हो गया। बारिश खत्म हुई तो थरथर कांपता हुआ बिल्ला भीगे चीथड़ों का ढेर-सा बन गया। बेचारा मरा तो नहीं, पर सारे करम हो गए!

“बूढ़े दादा नाहक यह कहते थे — तिकड़मी बिल्ला रास्ता ढूँढ़ लेता है।” उसने मायूसी से सोचा। “मैं ज़रा देखता कि अगर वह आज मेरी जगह होते, तो कौन-सी राह ढूँढ़ निकालते! और वो सूट-बूटवाला बिल्ला! उसकी अक्ल भी जवाब दे जाती।”

सुबह आसमान साफ़ था! सूरज की तप्त किरणों ने भीगी छत को सुखा दिया। बिल्ले की भीगी खाल और रोएं सूख गए। लेकिन बिल्ला भूख से बेहाल था। कमजोरी के कारण बड़ी मुश्किल से पैर उठा पा रहा था। उसकी हालत रबड़ के उस गेंद की तरह थी, जिसकी हवा निकल गई हो! दोपहर में बाबिक ने भौंकना शुरू





किया। उसने भौंककर बिल्ले का हाल पूछा। यानि उसकी ड्यूटी का क्या हाल है और टर्की की टांग स्वादिष्ट है न? लेकिन बिल्ले ने उस ओर देखा तक नहीं। कौन शक्ति बरबाद करे? वैसे ही भूख के मारे जान निकली जा रही है। ... वह लेटा हुआ एक बड़े-से कौवे को बेमन से देख रहा था। कौवा अपनी चोंच साफ करने छत पर आया था। वह ख़ाया-पिया और सुस्त लग रहा था।

“काश, उसके पंख ही मिल जाते।” उदास मन से बिल्ले ने सोचा। और अचानक उसकी तीव्र बुद्धि काम कर गई।

वह अपने पंजे के बल बैठ गया, जो कमजोरी से कांप रहे थे। वह बनकर बैठा रहा जैसे उसे कौवे में कोई रुचि नहीं है। लेकिन चुपके-चुपके उस ओर खिसकने लगा। आलसी कौवे ने एक आंख से बिल्ले की ओर देखा और निश्चिन्त होकर अपनी चोंच साफ़ करता रहा। आखिर उससे डरना क्या? बिल्ला तो इतना मरियल है कि वह उसे एक चोंच में ही ठीक कर देगा।

बिल्ला काफ़ी करीब तक पहुंचकर छत के किनारे बैठ गया। उसने कौवे को न देखने का बहाना किया, लेकिन उसके सतर्क कान क्षण प्रति क्षण की आहट ले रहे थे: कौवे ने चोंच साफ़ की, अपने पंख फड़फड़ाए, पंजे पैंने किए और बस उड़ने ही वाला था। उसने धीरे से कांव कहा, बेशक उसने एक कौवे की कांव का उत्तर दिया था। उसने अपनी गर्दन तानी, पंख फैलाए और।...

इधर जैसे ही कौवा उड़ने के लिए उछला बिल्ले ने अपनी शेष शक्ति जुटाकर एक जोरदार छलांग लगाई और उड़ते ही कौवे की पीठ पर सवार हो गया। हैरान कौवा लड़खड़ाकर गिर ही पड़ा होता किन्तु हवा में अपना संतुलन बनाए रहा और नीचे की ओर मंथर गति से उड़ा। लेकिन बिल्ला पहले की तरह भारी-भरकम होता तो निश्चित ही वह कौवा पत्थर की तरह नीचे आ गिरा होता। तब कौवा और उसकी पीठ पर सवार मुसाफ़िर दोनों गिरकर दम तोड़ चुके होते। लेकिन दो दिन के निराहार जीवन ने बिल्ले का वज़न आधा कर दिया था। शायद इसीलिए वह कौवा बिल्ले को सुरक्षित नीचे उतार लाया, जब कि यह आसान काम न था। फिर क्या था? बिल्ला सिर पर पांव रखकर भागा। उसको डर था कि कहीं कौवा उसे मज़बूत चोंच के ताबड़तोड़ प्रहार से घायल न कर दे!

“बचाओ, बचाओ!” घबड़ाए हुए कौवे ने आवाज़ दी। और फिर “बचाओ, बचाओ!” की रट लगाने लगा। इसके अलावा कुछ बोल न सका!

दूसरे कौवे उड़कर नीचे आए:

“क्या हुआ रे? क्या बिल्ले ने हमला किया था?”

“नहीं, नहीं!” कौवे ने विरोध किया। वह अपने संबंधियों और दोस्तों के सामने शर्मिन्दा नहीं होना चाहता था। “दरअसल ऐसी कोई बात नहीं है!”

“फिर बताओ न, क्या हुआ?” सभी ने जोर देकर पूछा।

“भाइयो, कोई घबड़ाने की बात नहीं,” कौवे ने बात बनाते हुए कहा। “मैंने छत पर एक खूब मोटा-ताज़ा बिल्ला देखा। मेरा मन ललचाया और मैंने उसे मारने का फ़ैसला किया। बिल्ले का शिकार! क्या बढ़िया दावत होती? अपने दोस्तों को बुलाता और जैसा कि आप सब जानते हैं—आज मेरा जन्म-दिन

भी है। मैंने आव देखा न ताव, बस उसकी गरदन पकड़ ली और उसे नीचे लिए आ रहा था। पर ससुरा बहुत वजनी था। अफ़सोस! उसे छोड़ना पड़ा ...”

“वाह रे दिलेर!” कौवों ने उसकी तारीफ़ की। “बहुत खूब! शिकार और मोटू बिल्ले का! शाबाश, मेरे शेर।”

और बिल्ले मियां इस वक्त छत का सफ़र पूरा करके सीढ़ी के नीचे खाने में जुटे हुए थे। कुत्ते बाबिक ने उसे एक हड्डी उपहार में दी। भूखा बिल्ला जल्दी-जल्दी उसे चबाए जा रहा था।

“भाई, तुम्हारी छतवाली नौकरी समाप्त हो गई है?” बाबिक ने विनम्रता से पूछा। उसने भूखे दोस्त को हैरानी से देखा। “भाई, क्या टर्की चिड़िया का मांस जायकेदार होता था?”

“बेहद खराब। छोड़ो भी उसकी बात। सूखा और जला-भुना, ऊपर से ढेर सारा नमक-मिर्च डाल देते थे। बताओ, उसे कौन खाएगा। मैंने तो इन्कार कर दिया।” बिल्ले ने कुत्ते को समझाया। “सच, ऐसी चौकीदारी से बाज़ आया। क्या खूब? एन्टेनों की रखवाली। अब तुम्हीं बताओ: जब मेरे पास अपना टी० वी० सेट नहीं है, तो मैं पराए एन्टेनों की चौकीदारी क्यों करता फिरूँ? छत पर आखिर मेरी जागीर तो है नहीं! मैंने तुरन्त फ़ैसला किया और कौवे की पीठ पर बैठकर नीचे चला आया।”

“शाबाश, मेरे दोस्त!” कुत्ते ने हैरानी से कहा।

थोड़ी देर बाद घुमक्कड़ बिल्ले ने एक प्याला दूध पिया और सीढ़ी के कोने में बिछे बिस्तर पर आराम से लेटकर सोचने लगा:

“दादा जी ठीक ही कहते थे: तिकड़मी बिल्ला रास्ता ढूँढ़ ही लेता है।”

बछेड़े का बदला

सड़क के किनारे चरागाह में एक घोड़ी चर रही थी। थोड़ी दूर पर पतली टांगवाला एक बछेड़ा उछल-कूद कर रहा था।

सड़क को चीरती-सी ट्रकें, बसें और कारें बेतहाशा दौड़ती जा रही थीं। पीछे से धड़धड़ाती मोटरसाइकिलें हवा की चाल से उनके आगे निकल जाती थीं। सड़क के किनारे-किनारे साइकिल सवार जरा सावधानी से चल रहे थे।

घोड़ी उस गरजती सड़क से बेखबर रही। उसकी अगली टांगें बंधी हुई थीं ताकि वह दूर न जाए। वह घास के एक गुच्छे से दूसरे तक बेढंगी चाल से कूदती, नरम-नरम घास ढूँढ़ती चर रही थी। बीच-बीच में वह परेशान करती घुड़मक्खियों को भगाने के लिए दुम हिलाती जा रही थी। लेकिन सिर्फ एक माह पहले जन्मा उसका बछेड़ा गरजते यातायात के तूफ़ान को सुखद आश्चर्य से देख रहा था :

“अहाहा, क्या बढ़िया चीज़ है!” उसने नारंगी रंगवाली, नीली पट्टीदार मिनीबस को देखा। “बाप रे! यह कितनी बड़ी है!” वह आश्चर्य से मुंह बाएँ एक विशाल रजतवर्णी रेफ़ीजरेटर ट्रक को निहार रहा

था। “मम्मी, वो देखो! क्या मजे की चीज़!” वह रंगबिरंगे फीतों से सजी-संवरी ‘बोल्गा’ कार को देख रहा था, जिसके बोनट पर एक गुड़िया बैठी हुई थी। इस तरह की सजी-संवरी कारें नवब्याहता जोड़ों के लिए इस्तेमाल में लाई जाती हैं। एक बार वह अचानक ठहाका मारकर हंस पड़ा:

“मम्मी, वो देखो, कार पर तो चूड़ा बना है।”

लेकिन उसकी मां मोटर-गाड़ियों को देखना पसंद न करती थी। सच तो यह है कि वह सड़क की ओर जान-बूझकर पीठ करके चरा करती थी। इस तरह वह दिखाने की कोशिश करती थी कि मोटरकारों के प्रति उसका दोस्ताना अनुभव नहीं है। आम तौर पर मां और बेटे की रुचियों में बड़ा फर्क था। बेटे की नज़र में आकाश नीला और साफ़ था, पानी ठण्डा और मीठा और घास हरी और मजेदार थी। लेकिन उसकी मां को पानी की हर बूंद में डिटरजेंट की गन्ध महसूस होती थी, हवा में पेट्रोल और मोबिल आयल की भभक, और चरागाह की घास में तरह-तरह के रसायनिक तत्वों का स्वाद आता। और सड़क के बारे में क्या कहना! वह उसके स्थायी शोर-शराबे और गर्द-गुबार से तंग आ चुकी थी। कारों को तो वह दुर्गन्धवाला टीन का डिब्बा कहा करती थी।...

इसलिए बछेड़ा अपनी खुशियों और इन आविष्कारों के बारे में अपनी मां की अपेक्षा एक जवान भूरी बछिया को बताना ज्यादा पसंद करता था। वह नटखट भूरी बछिया अपने भुण्ड से ज़रा दूर भाग आती थी ताकि वह जिन्दादिल और चुस्त बछेड़े से गपशप कर सके।

वे दोनों आपस में बतियाते नई-नई कल्पनाएं करते:

“क्या मजे होते अगर उस बड़े चमकीले ट्रक में हम भी सवारी करते?” बछेड़े ने कल्पना की।

“मुझे तो डर लगता है,” बछिया ने अपनी पलकें झपकाते हुए कहा। “मैं तो वहां से गिर ही पड़ती।”

“डरो मत! मैं तुम्हें गिरने ही न देता, कसकर पकड़ लेता,” बछेड़े ने बहादुरी से अपनी छोटी अयाल को कंपकंपाते हुए कहा।

“मुझे इसमें कोई शंका नहीं,” बछिया ने आंखें झपकाते हुए कहा। “अभी भागकर अपनी मम्मी से कहूंगी कि तुम कितने बहादुर हो।”

भूरी बछिया अपने भुण्ड की ओर ठोलिया ढंग से टांगें फटकारती हुई दौड़ गई, उधर बछेड़ा भी अपनी मां के पास सरपट दौड़ चला। और फिर सड़क की ओर उत्सुकता से देखने लगा।

“देखो, देखो!” अचानक वह हैरानी से चिल्लाया। “लाल ट्रक पर सीढ़ी! यह सीढ़ी किसलिए है, मम्मी?”

“मैं नहीं जानती। और न जानना ही चाहती हूं।” घोड़ी उस अनोखे ट्रक को देखे बिना बड़बड़ाई।

“मम्मी,” बछेड़ा दुबारा चिल्लाया। “देखो, मैंने तो कभी भी ऐसी चीज़ नहीं देखी है!”

ऊंची जालीदार बाड़वाली एक ट्रक धीरे-धीरे चली जा रही थी। जालीदार बाड़ के पीछे घोड़े खड़े थे। वे उदास सिर झुकाए थे। उनकी आंखों में कोई भय समाया था। उनके सिर निराशा और बेचारगी से झुके हुए थे।

“शुभ यात्रा!” वह घोड़ों की ओर देखते हुए बोला। “खूब घूमो, मौज करो! काश, मैं भी तुम्हारी तरह घूमता!”

एक बूढ़ा घोड़ा सिर उठाकर हिनहिनाया, लेकिन बछेड़े को उसकी बात न सुनाई दी।

“शायद उसने मेरी शुभकामना का उत्तर दिया होगा,” उसने खुद से कहा। और वह उछलती-कूदती भूरी बछिया को देखकर दौड़ता हुआ उसके पास चला आया।

“अरे, सुना तुमने! हमारे भाई-बिरादर तो घूमने जा रहे हैं!” वह दौड़ते हुए ज़रा जोर से कह रहा था। “मैंने उन्हें शुभकामनाएं दी थीं और खुश होकर वे भी खूब हिनहिनाए थे। मुझे धन्यवाद दे रहे थे। बड़ा होकर मैं भी घूमने जाऊंगा।”

लेकिन इस बार बछिया ने उसकी बात नहीं मानी! और उसने पागुर करते हुए ज़रा तिरस्कार से उसे देखा।

“पर मेरी मम्मी कहती हैं कि ये घोड़े कसाईखाने जा रहे हैं, उन्हें वहां मार दिया जाएगा,” बछिया ने ज़हर उगला।

“तो उन्हें मार दिया जाएगा?” हैरानी से बछेड़े ने कहा। क्षण भर के लिए उसकी चमकीली आंखों में अन्धेरा-सा छा गया।

“हां, मार दिया जाएगा! मम्मी ने यह भी कहा कि धीरे-धीरे सभी घोड़ों को वहां पहुंचाया जाएगा।”

“तुम भूठी हो!” बछेड़े ने गुस्से से तमतमाकर कहा।

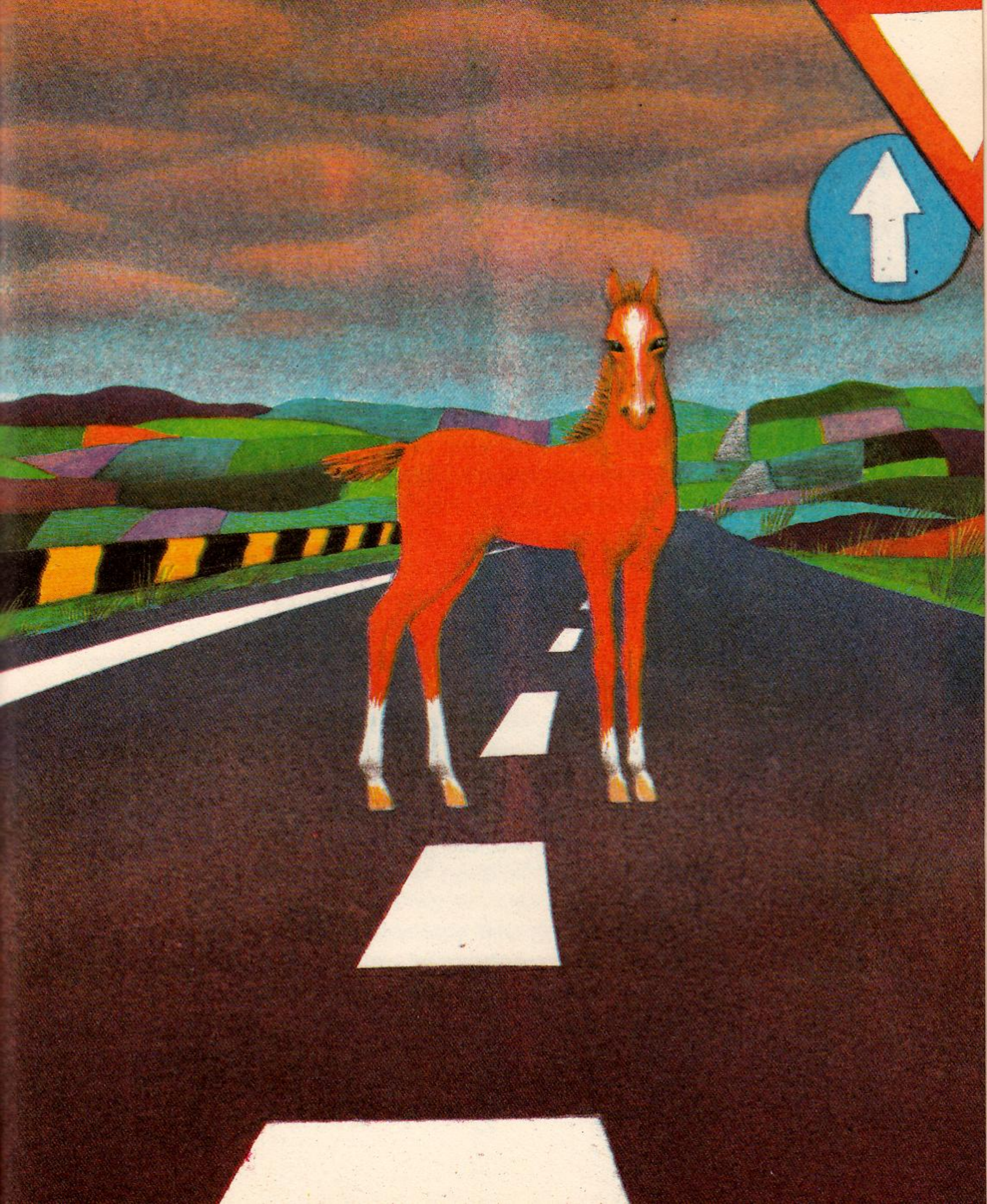
“पर मम्मी ने कहा है कि तुम घोड़ों की बिरादरी किस काम की, तुम्हें कोई पसंद ही नहीं करता और इसीलिए कसाईखाने में मार दिया जाता है। मेरी मम्मी ने तो यह भी कहा है कि घोड़ों का काम अब ट्रक और ट्रैक्टर करते हैं, जबकि हम गाएं मीठा-मीठा दूध देती हैं और हमारा यह काम कोई भी नहीं कर सकता। लेकिन तुम्हारे पास देने के लिए है ही क्या? उल्टे हमारी घास व्यर्थ ही हड़प जाते हो। बताओ न, आखिर किस काम के हो।”

सहेली की बातें सुनते ही बछेड़ा भौचक रह गया।

“इसलिए मम्मी ने मुझे तुम्हारी ओर देखने तक से मना किया है,” बछिया ने अपनी बात खत्म की और अपनी छोटी-छोटी सींगें ऊपर करके बड़े अहंकार से गायों के भुण्ड की ओर चल दी।

बछेड़े को गहरा सदमा पहुंचा। उसने खुद को बड़ा अपमानित महसूस किया। ज़रा संभला तो ताने मारते हुए खूब जोर से चिल्लाया:

“भूठी सिर पर लादे भूठ,
भूठ का सौदा: केक, पेस्ट्री, लेमनचूस,
देखे उसको नहीं खरीदे मक्खीचूस।”



लेकिन बछिया ने पीछे घूमकर नहीं देखा।

“भूठी सिर पर लादे भूठ...” बछेड़े ने फिर जल्दी-जल्दी दोहराया। लेकिन उसके शुद्ध और सहज विश्वसनीय हृदय को ठेस पहुंची थी। बछेड़ा दौड़कर अपनी मां के पास पहुंचा। उसने अपने थूथुन को मां की गर्म छाती से सटा दिया, ताकि उसे थोड़ी सांत्वना मिल सके।

“मम्मी, मम्मी! क्या घोड़े किसी काम के नहीं होते? क्या ट्रक और ट्रैक्टर हमारा ही काम करते हैं?” उसने धीरे से पूछा।

उसे उम्मीद थी कि मां हंसकर कहेगी कि यह सब सफ़ेद भूठ है!

लेकिन घोड़ी ने मायूसी से सिर हिलाकर कहा:

“हां, बेटे! यह सच है।”

“तो क्या सचमुच उन घोड़ों को कसाईखाने ले जा रहे थे?”

“तुम्हें किसने बताया?” घोड़ी ने सतर्क होकर पूछा।

“उसी भूरीवाली बछिया ने। उसने तो यह भी कहा है कि मैं भी किसी काम का नहीं हूं। और वह अब मेरे साथ नहीं खेलेगी,” बछेड़ा सुबक-सुबककर रोने लगा।

घोड़ी ने लंबी टांगोंवाले अपने बेटे को प्यार और करुणा से देखा। जीवन का यह कटु सत्य इस तरह अचानक उघड़ गया। नन्हे सुकुमार हृदय के लिए यह भारी बोझ था।

शाम को अस्तबल लौटने पर मां ने घोड़ों के शानदार अतीत का सारा किस्सा बेटे से कह सुनाया। उसने ऐसी अनोखी और आश्चर्ययुक्त कहानियां कह सुनाईं, जिनके कथा नायक उसके पराक्रमी पूर्वज ही थे।

मां की बात से बछेड़े का मन कुछ हलका हुआ, वह अगली सुबह सोकर उठा तो हमेशा की तरह प्रसन्न था। वह रेवड़ की ओर दौड़ा और चक्कर लगाता हुआ दुलकी चाल से नाचने लगा। इस तरह वह अहंकारी बछिया के आने तक नाचता रहा। और उसे देखते ही बौछार-सी करते हुए बोला:

“लो, अब तुम भी सुन लो! मेरी मम्मी कहती हैं कि हम घोड़ों का इतिहास बड़ा शानदार था। वैसा अतीत न किसी गाय का रहा है, न कभी होगा। मेरी मम्मी यह भी कहती हैं कि पुराने ज़माने में घोड़े बड़ी-बड़ी लड़ाइयों में हिस्सा लेते थे, बहादुरी दिखाने में बहुत से घोड़े शहीद भी हो गए। घोड़ों का नाम तो इतिहास में अमर है। हमारे पूर्वज हवा की तरह उड़ते हुए विजय की खबरें लाते थे। मम्मी ने यह भी बताया है कि राजघरानों में घोड़े सबसे कीमती उपहार माने जाते थे, वे किसानों के मित्र और रोज़ी-रोटी का साधन होते थे।

“मम्मी ने तो यह भी बताया है कि हमारी गर्दन में सोने की घण्टियां बंधी होती थीं और हमारी साजें कीमती चमड़ों की बनती थीं, जिन पर सोने की फूल-पत्तियां कढ़ी होती थीं। सफ़र के दौरान हम घोड़े मनुष्यों की रक्षा करते थे। खासकर जब हिंसक भेड़ियों का भुण्ड रास्ते में घोड़ागाड़ियों पर हमले करता था, तब हमारी फुर्तीली टांगें सरपट दौड़कर भेड़ियों से दूर निकल जाती थीं। मेरी मम्मी ने एक और मजेदार बात बताई है। वह कहती हैं कि रेस के चुस्त, फुर्तीले घोड़े आज भी कमाल दिखाते हैं, सारी

दुनिया उनकी जीत पर तालियां बजाती है। और हां, यह भी सुन लो: मम्मी का कहना है कि तुम्हारी गाएं सुस्त और बड़े पेटवाली होती हैं, जो रंभाने और पागुर करने के अलावा कुछ कर ही नहीं सकतीं। इतना ही नहीं, लोग तुम्हारे हिस्से का दूध तक दुह लेते हैं और तुम टापती रह जाती हो। तुम्हारा पुराना इतिहास तो बड़ा ऐसा-वैसा रहा है। कोई उपयोगी बात नज़र ही नहीं आती। वही अब भी है।”

क्षण भर के लिए भूरी बछिया हक्का-बक्का रह गई। यह सोच भी न पाई कि कहा क्या जाए। ज़रा संभली तो जोर से चिल्लाई:

“ठहरो ज़रा! अभी मम्मी से कहती हूं कि तुम कैसी उलटी-पुलटी बातें करते हो: गाएं सुस्त और बड़े पेटवाली होती हैं, वे रंभाने और पागुर करने के अलावा कुछ कर ही नहीं सकतीं। मम्मी बैल बाबा से कह देंगी और वह अपनी सींगों से तुम्हारी ऐसी खबर लेंगे, ऐसी खबर लेंगे कि, बच्चू, याद रखोगे!”

“चुगलखोर कहीं की!” बछेड़े ने तिरस्कार करते हुए कहा।

भूरी बछिया ने ज़रा अक्ल दौड़ाई और बोली:

“बहुत खूब! अपने इतिहास की डींग मत मारो! बात वही है। तुम्हारा काम अब मशीनें करती हैं, जबकि हमारी जगह मशीनें नहीं ले सकतीं। और घोड़े अगर लड़ाई के मैदान में इतने बड़े सूरमा होते थे, तो फिर तुम ट्रकों और ट्रैक्टरों से मुंह क्यों छिपाते हो, क्या तुम उनसे डरते हो! क्या उन्हें ललकार नहीं सकते!”

इस बार बछेड़ा कुछ न कह पाया। और खीजा हुआ ज़मीन पर सुम प्रहार करने लगा, दुम फटकारने लगा।

बछिया अपने भुण्ड में लौट आई और अपनी मां-गाय की बगल में सटकर खड़ी हो गई। वह तिरछी नज़र से बछेड़े को देख रही थी।

बछेड़ा भी घूमा और अपनी मां की ओर दुलकी चाल से कुछ सोचते हुए चल पड़ा। भूरी बछिया की व्यंग्यभरी बातें उसे बर्छी-सी चुभ रही थीं। वह जी भरकर भगड़ सकता था, नाराज़ हो सकता था—लेकिन उसकी बात में आंशिक सच्चाई तो थी ही! आखिर घोड़ों ने अब तक इन मशीनों का विरोध क्यों नहीं किया! वे एक बार भी उनके खिलाफ़ आवाज़ न उठा सके! यह तो अच्छा ही था कि उसकी मां दौड़ती कारों और ट्रकों को देखना तक पसन्द न करती थी, मुंह घुमाकर चरा करती थी—पर मोटरों को इसकी क्या परवाह?

बछेड़े का दिल तड़पने लगा: उसे लगा कि घोड़ों की बिरादरी और उसकी प्रतिष्ठा के लिए वही एकमात्र ज़िम्मेदार है। उसने इस बार बछिया की व्यंग्यभरी बातें मां से भी नहीं बतलाईं। उसे अब अहसास हो चुका था कि ऐसी भी बातें हैं, जिनका फ़ैसला हरेक को खुद ही करना चाहिए। वह सड़क पर उफनते यातायात को अब दूसरी ही नज़र से देखने लगा। वह गहरे सोच में डूबा रहा। उसकी नन्ही-सी अक्ल में एक विचार कौंधा। और भट से वह पक्की सड़क की ओर सरपट दौड़ पड़ा।

“कहां जा रहे हो?” मां ने चेतावनी देते हुए कहा। “वहां मत जाओ, खतरा है! चलो, वापस लौटो।”

लेकिन बछेड़े ने जैसे सुना ही नहीं। उसने छलांग लगाकर खड्ड को पार किया और सड़क पर पहुंच गया। वह सड़क के किनारे खड़ा होकर दौड़ती-भागती गाड़ियों को देखने लगा, मानो किसी का इन्तज़ार कर रहा हो। वह देर तक प्रतीक्षा करता रहा। तब तक उसे थोड़ी दूर पर मोटरों की रानी — रजतवर्णी रेफ़ीजरेटर ट्रक — दिखाई दी। वह खूब बड़ी थी! जब ट्रक बिल्कुल करीब आ गई, बछेड़ा कूदकर सड़क पर आया और उस ट्रक के सामने रास्ता रोककर खड़ा हो गया! उसकी पतली टांगें फैली हुई थीं और सीना चुनौतियां देता, तना हुआ था।

ड्राइवर ने देखा कि एक बछेड़ा न सिर्फ़ ट्रक के सामने खड़ा है पर उस पर हमला करने ही वाला है। ड्राइवर घबरा गया। उसने जोर से ब्रेक लगाया और स्टीयरिंग को तेज़ी से घुमा दिया। लेकिन ट्रक फ़िसली, खड्ड में जा घुसी और जोर से गरजती हुई पलट गई।

उसके बड़े-बड़े पहिये थोड़ी देर तक घुमते रहे और जब वे थमे तो सड़क पर एक मनहूस सन्नाटा छा गया। थोड़ी दूर पर घोड़ी जड़वत खड़ी थी। गायों के भुण्ड ने घास चरना छोड़ दिया। खुद बैल भी आंखें फाड़कर उलटे हुए ट्रक को देखने लगा, जो प्रचण्ड चक्रवात द्वारा सड़क पर फेंके गए घास-फूस की तरह लग रहा था।

बछेड़ा वहीं खड़ा रहा, उसकी चारों टांगें ज़रा दूर-दूर फैली हुई थीं। लेकिन अब वे घोड़े की दुम की तरह कांप रही थीं। उसने हैरानी से आंखें भपकाईं। उसे तो विश्वास ही न था कि इतना बड़ा हंगामा उसने ही खड़ा किया है। वह अपनी जगह पर देर तक अड़ा रहता, अगर दूसरी मोटरकारें उलटे हुए ट्रक के पास रुकने न लगतीं।

अचानक उसे लगा कि उसका हट जाना ही बेहतर है। वह सरपट चरागाह की ओर दौड़ा और अपनी मां से चिपककर खड़ा हो गया।

उन्होंने देखा कि लोगों ने बड़ी मुश्किल से ड्राइवर का केबिन खोला और ड्राइवर घिसटता हुआ बाहर निकला। बाप रे! वह गुस्से से तमतमाया हुआ था। यहां तक कि इस चरागाह में भी उसकी गुस्सैल आवाज़ गूंज रही थी। वह सभी घोड़ों को कोस रहा था — घोड़ों, घोड़ियों और उनके बछेड़ों तक को!

वह चौतरफ़ा नज़र दौड़ाकर उस शोख अपराधी को देखने लगा, उसे देखते ही उसने एक मोटा डण्डा उठाया और चरागाह की ओर भपट पड़ा।

“भागो! भागो! जल्दी!” घोड़ी ने बेटे से कहा और उसे अपने थूथन से ठेल दिया। बछेड़ा जान बचाकर भागा।

ड्राइवर थोड़ी देर तक उसका पीछा करता रहा, पर हवा से बातें करना उसके बूते के बाहर था। वह गालियां देते लौट पड़ा। जल्द ही वह एक कार में बैठकर पासवाले कस्बे की ओर चल दिया, ताकि तात्कालिक सहायता के लिए टेलीफ़ोन किया जा सके।

सिर से खतरा टल चुका था, बछेड़ा दौड़कर गायवाले भुण्ड की ओर पहुंचा। गाएं और बैल घास चरते हुए इस सड़क दुर्घटना पर बहस कर रहे थे। लेकिन भूरी बछिया बेचैन थी, बछेड़े की प्रतीक्षा में थी। उसे देखते ही वह तुरन्त दौड़ पड़ी।

“मम्मी कहती हैं...”

बछेड़े ने उसकी बातें मानो अनसुनी कर दी। वह दण्डित होने से बच गया था और उसकी कंपकंपाती टांगें अब स्थिर हो चुकी थीं। उसे आज खुद पर नाज़ था।

“मम्मी कहती हैं,” भूरी बछिया ने कहा, “तुमने यह मूर्खता की है। तुम मर जाते या ड्राइवर मर जाता तो...” थोड़ी देर खामोश रहने के बाद उसने आगे कहा: “लेकिन मेरे ख्याल से तो तुम दुनिया के सबसे पराक्रमी बछेड़े हो।”

बछेड़ा खामोश रहा। वह तो दूर आंखें गड़ाए देख रहा था—अतीत का एक भव्य चित्र! युद्ध-भूमि से सरपट दौड़ता हुआ एक चुस्त घोड़ा अपनी पीठ पर एक ज़रूमी योद्धा को लादे हुए है।... उसने देखा कि तीन घोड़ों की बग्गी चली आ रही है, भेड़ियों का झुण्ड उसका पीछा कर रहा है। उसने यह भी देखा कि रात का प्रहर है, घोड़े चरागाह में चर रहे हैं—अगले दिन के लिए, कठोर श्रम के लिए तैयार हो रहे हैं। उसने घुड़दौड़ का मैदान देखा, फुर्तीले घोड़ों की घुड़दौड़ देखी। और यह भी देखा कि एक खेतिहर घोड़ा एक भारी हल को खींच रहा है। उसे लगा कि वह घोड़ों के गौरवशाली अतीत को अपनी आंखों से देख रहा है।...

रोबट और तितली

रोबट प्रदर्शनी हॉल के बिल्कुल कोने में खड़ा था, लेकिन भीड़ उसे हमेशा घेरे रहती थी। यूं तो वहां वैज्ञानिक चमत्कार की बहुत-सी चीजें थीं। पर रोबट का एक प्रमुख आकर्षण था। सभी तरह के छोटे-बड़े दर्शक कई-कई बार उसे देखने आते। और उसके हिलते हुए भारी लौह हाथों, बड़े-से चौकोर सिर और उसकी आंख की मद्धिम नारंगी रोशनी को एकटक निहारते रहते थे।

रोबट अपने विशाल हाथों और सिर को घुमाने के अलावा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दे सकता था। लेकिन सभी तरह के प्रश्नों का उत्तर दे पाना उसके लिए संभव न था। वह केवल उन्हीं प्रश्नों के उत्तर देता था, जो प्रश्न-तालिका में एक निश्चित क्रम में लिखे हुए थे। वह प्रश्न-तालिका पास ही दीवार पर टंगी थी। दर्शक उन प्रश्नों को पढ़ते और बारी-बारी से रोबट से पूछते।

“तुम्हारा नाम क्या है?” यही पहला प्रश्न था।

“मेरा नाम दोनदोन है।”

“तुम्हारा जन्मस्थान?” दूसरा सवाल था।

“मेरा जन्म एक प्रयोगशाला में हुआ था।”

“अभी तुम क्या कर रहे हो?” तीसरा सवाल किया जाता।

“अभी मैं कुछ सीधे-सादे प्रश्नों के उत्तर दे रहा हूँ।”

यह कहकर रोबट धीरे से हंसता:

“हा, हा, हा।”

दर्शक भी इस लतीफेदार उत्तर को सुनकर हंसते और जी भरकर हंस लेने के बाद फिर पूछने लगते:

“कौन-सी चीज़ तुम्हें बहुत पसंद है और कौन-सी चीज़ विशेष नापसंद?”

“मशीन का तेल मुझे बहुत पसंद है और जैमवाली आइसक्रीम बिल्कुल नापसंद!”

दर्शक जोर का ठहाका लगाते और प्रश्न-तालिका को देखकर पांचवां प्रश्न पूछते:

“रोबटों का भविष्य कैसा है?”

“रोबटों का भविष्य बहुत उज्ज्वल है!”

“और तुम कौन-सा काम करते हो?”

“मैं उन सभी नियोजित कार्यों को पूरा करता हूँ, जो मुझे सौंपे जाते हैं।”

रोबट के लिए अन्तिम प्रश्न था:

“हम दर्शकों के लिए तुम्हारा सन्देश क्या है?”

“मेरी ओर से आपको बेहतर स्वास्थ्य और सफल जीवन की शुभकामनाएं।”

रोबट यह कहता हुआ अपना बायां पैर उठाता और फ़र्श पर पटक देता। लेकिन रोबट की इस खुशी से प्रदर्शनी हॉल का फ़र्श कांप उठता! और फिर आती नए जिज्ञासु दर्शकों की भीड़, पुनः उन्हीं प्रश्नों के उत्तर सुनाई देने लगते, जो क्रमवार प्रश्न-तालिका में शामिल थे। रोबट बिना थके उत्तर देता रहा, वह ज़रूरत पर हंसता था, पैर पटकता था या अपने हाथों को हिलाता था। और तो और, अपनी नारंगी आंख भी मजे से झपकाता था।

“शाबाश! बेहिचक अपना प्रोग्राम पूरा करता है। सचमुच रोबटों का भविष्य बहुत उज्ज्वल है।” बुजुर्ग प्रशंसा करते। बच्चे इतने खुश होते कि उसके पैरों के पास ही जमकर बैठ जाते थे और उठने का नाम तक न लेते थे।

“बच्चो, चलो, देर हो रही है!” मम्मी-पापा आवाज़ देते। “चलो, आइसक्रीम खरीदी जाए।”

“आइसक्रीम नहीं मशीन का तेल!” बच्चे रोबट की नकल करते और रोबट अपनी नारंगी आंख झपकाता और हाथ हिलाकर विदा का भाव प्रदर्शित करता था।

रात होते ही प्रदर्शनी हॉल में ऊब भरा सन्नाटा छा जाता और दोनदोन बिना हिले-डुले कोने में खड़ा रहता। दिन भर की धमा-चाकड़ी और दर्शकों द्वारा की गई अपनी वाहवाही को याद करता रहता था। उसका लौह-हृदय खुशी से फूला न समाता था। क्या यह उसकी शानदार सफलता न थी। वह नाक चढ़ाकर प्रदर्शनी की दूसरी वस्तुओं को देखता: इन मशीनों और स्वचालित यंत्रों ने तो कभी सपने में भी ऐसी प्रशंसा न सुनी होगी। वे सभी मिलकर मेरी बराबरी कर सकते हैं भला!

नया दिन आता, प्रदर्शनी हॉल का दरवाजा खुलता और हॉल में पहले की तरह भीड़ भर जाती थी। दर्शक क्रमवार वही-वही प्रश्न पूछने शुरू करते और फिर प्रशंसकों की तारीफ़ और कहकहे गूँजते रहते थे। इस तरह दिन-रात बीतते रहे। यह क्रम बखूबी चला करता, यदि एक रात खिड़की से उड़कर आई एक तितली ने काम न बिगाड़ा होता!

वह दोनदोन की नारंगी आंख की ओर आकर्षित हुई जो अन्धेरे में तेज़ी से चमक रही थी। तितली रोबट के कंधे पर बैठ गई, शीशे की आंख को अपने पंख से छूकर मायूसी से बोली:

“अहा, कितना शीतल प्रकाश है!”

“यह प्रकाश नहीं, मेरी आंख है, आंख,” रोबट कहना तो यही चाहता था। लेकिन वह सिर्फ़ पहले नम्बर का उत्तर दे पाया:

“मेरा नाम दोनदोन है!”

“हां?” तितली बड़ी खुश हुई कि इत्ता बड़ा और ऐसा ताकतवर प्राणी उस जैसी मामूली तितली से बातें कर रहा है। “और मैं एक तितली हूँ। लोग प्यार से मुझे नन्ही तितली कहते हैं। रात में नींद नहीं आई! बस, घूमने निकल पड़ी।”

“मेरा जन्म एक प्रयोगशाला में हुआ था,” रोबट ने दूसरे नम्बर का उत्तर ही दिया।

“प्रयोगशाला... यह तो कोई अच्छा-सा देश होगा,” नन्ही तितली ने अपने पंखों को झटकते हुए कहा। “लेकिन मेरा जन्म एक पुष्पित पांगुर के पेड़ पर हुआ था। क्या तुमने कभी पांगुर के वृक्ष देखे हैं?”

“अभी मैं कुछ सीधे-सादे प्रश्नों के उत्तर दे रहा हूँ! हा, हा, हा!” रोबट ने कहा।

नन्ही तितली ज़रा भेंप गई। उसके चमकीले पंख फीके पड़ गए।

“भाई, माफ़ करना!” वह धीरे से फुसफुसाई। “मैं अभी अक्ल की कच्ची हूँ। परसों ही तो मैंने आंखें खोली हैं, मेरी कोषावस्था थी न! मेरे बुजुर्गों ने मुझे अभी यही सिखाया है कि पक्षियों से बचकर रहना चाहिए और चमगादड़ों से तो खासकर।...”

दोनदोन ने अपने प्रोग्राम के अनुसार अगला उत्तर दिया:

“मशीन का तेल मुझे बहुत पसंद है और जैमवाली आइसक्रीम बिल्कुल नापसंद!”

“और मुझे पांगुर की नरम-नरम पत्तियां खाना बहुत अच्छा लगता है,” नन्ही तितली ने कहा।

“पर मशीन का तेल तो मैंने चखा नहीं है। क्या तुम पांगुर की पत्ती चखोगे? मैं उसे तुम्हारे लिए ले आऊंगी।...”

“हां, हां, ले आओ, खुशी से चखूंगा,” दोनदोन कहना तो यही चाहता था, लेकिन पांचवें नम्बर का उत्तर दे पाया:

“रोबटों का भविष्य बहुत उज्ज्वल है।”

यह सुनते ही नन्ही तितली का जी बैठ गया।

“तुम्हारी गोल-मोल बातें मेरे पल्ले नहीं पड़तीं,” तितली ने एक ठण्डी सांस ली। “भाई, मैंने तो पहले ही कहा कि मैं अपने कोष में बन्द थी, सारी दुनिया से बेखबर थी।”

“मैं उन सभी नियोजित कार्यों को पूरा करता हूँ जो मुझे सौंपे जाते हैं,” दोनदोन ने उत्तर दिया।

“भाई, माफ़ करना! अब मुझे जाना है,” नन्ही तितली ने कहा। “अलविदा, दोनदोन प्यारे!”

“मेरी ओर से आपको बेहतर स्वास्थ्य और सफल जीवन की शुभकामनाएं,” दोनदोन ने भारी आवाज़ में कहा और अपना इस्पाती पैर पटक दिया।

“धन्यवाद!” तितली ने कहा और रोबट के गालों को अपने नाजुक पंखों से थपथपा दिया। उसके बाद नन्ही तितली उड़ गई।

एकनेत्रीय रोबट खोया-खोया-सा उस ओर देर तक देखता रहा, जिधर नन्ही तितली उड़कर गई थी। वह बड़ी देर तक व्याकुल रहा, उन अजीब स्थानों में खोया रहा, जो इससे पहले कभी उसके लौह-मस्तिष्क में आए न थे।

“उसका स्वभाव मेरे दर्शकों से बिल्कुल भिन्न है,” उसने सोचा। “उसकी अक्ल ज़रा अजीब-सी है: विचित्र सवाल करती है, नियोजित प्रश्नों से कतराती है और मेरे उत्तरों का क्रम बिगाड़ती है। उसने तो एक बार भी मेरी तारीफ़ नहीं की।... पर कुछ भी हो उसके रेशमी पंखों में आकर्षण है और मीठी बोली में जादू। चलते समय उसने मुझे दोनदोन प्यारे भी कहा था।...”

वह इस मुलाकात के बारे में देर तक सोचता रहा कि सुबह हो गई। उसे तो यह भी पता न लग पाया कि कब प्रदर्शनी हॉल का दरवाज़ा खुला और दर्शकों का सैलाब उसकी ओर उमड़ पड़ा। वह शुरू के दो प्रश्नों के उत्तर देना ही भूल गया। किसी प्रकार तीसरे प्रश्न का जवाब ही दे पाया, लेकिन वह भी गलत क्रम के साथ:

“हा, हा, हा! अभी मैं कुछ सीधे-सादे प्रश्नों के उत्तर दे रहा हूँ!”

“यह तो हमारा मज़ाक उड़ा रहा है,” एक अत्यन्त सम्मानित दर्शक नाराज़ हो गया और भागकर गुस्ताख़ रोबट की शिकायत करने मुख्य अभियन्ता के पास पहुंचा।

लेकिन तब तक दोनदोन की तबियत ठीक हो चुकी थी और अब वह क्रम से सही-सही उत्तर देता जा रहा था। फिर उसे पहले की तरह जोर-शोर से सराहा जा रहा था।

“शाबाश, मेरे शेर! सारे उत्तर तो ठीक-ठीक मिल रहे हैं। उससे बड़ी उम्मीदें हैं।”

“अफ़सोस!” रोबट उदास हो गया। “काश, नन्ही तितली भी यह सब सुन पाती। इत्ती तारीफ़ पर तो निहाल हो उठती वह। और तब मेरी ख़ूब प्रशंसा करती।... काश! वह इस रात फिर आ जाती! और अगर... अगर वह किसी चमगादड़ का शिकार हो गई तो?” उसके बेचैन हृदय में एक ऐंठन-सी हुई—पर ऐसा तो कभी न हुआ था। अचानक तितली आ पहुंची।

“मुझे रात की सैर अच्छी लगती है! अब मैं तुम्हारे कंधे पर बैठकर आराम करूंगी। अहा, यहां कितना सुख-चैन है!” तितली फुसफुसाई।

रोबट के लौह-वक्ष पर सुकोमल स्पर्श की एक सिहरन-सी दौड़ गई।





“मेरा नाम दोनदोन है।”

“भाई, मुझे तुम्हारा नाम याद है,” तितली ने शिष्टता से कहा। “लेकिन तुम्हारे भाई-बहन तो हैं न?”

दोनदोन कहना चाहता था कि वह इस दुनिया में अकेला है, इस प्रदर्शनी हॉल और शहर तक में उसका कोई नहीं है! लेकिन वह दो नम्बर के उत्तर पर ठहर गया:

“मेरा जन्म प्रयोगशाला में हुआ था।”

“यह तो तुमने बताया ही था,” तितली ने याद दिलाते हुए कहा। “भाई, तुम बार-बार एक ही रट लगाते हो। क्या तुम थकते नहीं? अच्छा, अब मैं चली! मुझे जोर से भूख लगी है। सुबह से कुछ खाया-पिया नहीं। नमस्ते, प्यारे दोनदोन! फिर मिलेंगे।”

यह कहकर उसने अपने नाजुक पंखों से रोबट के गाल थपथपाए और खिड़की के बाहर उड़ गई। दोनदोन उसे देर तक देखता रहा, उसकी नारंगी आंख ऐसी अनोखी चमक के साथ कभी पहले न चमकी थी।

“वह शीघ्र ही आएगी,” उसका लौह-हृदय खुशी से भूम उठा। “उसे मेरी दोस्ती पसंद है। वह लौटकर प्यार से मेरे कंधे पर बैठ जाएगी। काश, यह रात कभी खत्म न होती! तब मैं शायद नए-नए शब्द बोलना सीख जाता, अपने प्रोग्राम के अलावा कुछ और कह पाता? तितली को धन्यवाद देता और कहता कि इस दुनिया में तेरे सिवा मेरा और कोई नहीं है।...”

दोनदोन की नारंगी आंख खिड़की पर टिकी रही। वह बड़ी बेसब्री से उसकी वापसी का इन्तज़ार करता रहा।

वह लौटी, लेकिन बदहवास-सी! वह दौड़ती हुई आई और रोबट के सीने पर भपट पड़ी।

“मुझे बचा लो!” नन्ही तितली जोर-जोर से हांफते हुए बोली। “वो मेरे पीछे पड़ा है।”

और सचमुच एक काली छाया खिड़की पर चमकी। भपटकर एक चमगादड़ प्रदर्शनी हॉल में घुस आया।

“मुझे उस राक्षस से बचाओ!” तितली रोबट के सीने से चिपक गई। “वह मुझे निगल जाएगा!”

रोबट ने बहादुरी से सीना तानकर कहना चाहा: “डरो नहीं! मैं यहां की सबसे शक्तिशाली मशीन हूं। क्या मजाल, जो कोई तुम्हें छू ले?”

लेकिन उत्तर बिल्कुल भिन्न था:

“मेरा नाम दोनदोन है।”

चमगादड़ ने रोबट का चक्कर लगाया और उसकी छाती से चिपकी हुई तितली को देख लिया।

“प्यारे दोनदोन, मुझे बचा लो!” तितली गिड़गिड़ाई।

“चल भाग यहां से!” रोबट चमगादड़ को डांटना चाहता था, लेकिन फिर वही नियोजित उत्तर सुनाई पड़ा:

“मेरा जन्म प्रयोगशाला में हुआ था।”

चमगादड़ तितली पर झपटा, और उसने अपने पैने दांत उसे गड़ा दिए। पर उसे निगल न पाया। नन्ही तितली रोबट के पैरों पर गिर पड़ी।

“हाय, मेरा पंख...” तितली का विलाप सुनाई दिया। कई बार रोबट का चक्कर लगाने और तितली को न पकड़ पाने के कारण चमगादड़ खिड़की से बाहर उड़ गया।

“उसने मेरा पंख नोच लिया है। पर तुमने मुझे बचाया क्यों नहीं? आह, दोनदोन!” तितली ने रोते हुए कहा।

“अभी मैं कुछ सीधे-सादे प्रश्नों के उत्तर दे रहा हूँ!” दोनदोन ने झट से यह उत्तर दिया और हंसने लगा: “हा, हा, हा!”

यह उत्तर सुनते ही रोबट की पीठ पर एक थरथराहट-सी हुई। पर दूसरा कोई उत्तर तो वह दे न सकता था।

असहाय तितली फर्श पर पड़ी तड़फड़ा रही थी, वह अपने पांगुर के वृक्ष तक उड़कर पहुंचना चाहती थी, लेकिन... लेकिन एक लट्टू की तरह सिर्फ एक ही जगह पर पड़ी नाचती, तड़फड़ाती रही।

“काश, तुम मेरे दर्द को जान पाते!” तितली धीरे से कराह उठी।

“मशीन का तेल मुझे बहुत पसंद है और जैमवाली आइसक्रीम बिल्कुल नापसंद।” रोबट ने जवाब दिया।

“क्या कहा?” तितली को अपने कान पर विश्वास न हुआ। “तो तुम्हें मेरे लिए जरा भी अफसोस नहीं है?”

“रोबटों का भविष्य बहुत उज्ज्वल है।” उसे उत्तर मिला।

“हाय, तुम कितने हृदयहीन और निर्दय हो!” मरणासन्न तितली ने क्षीण स्वर में कहा।

“मैं उन सभी नियोजित कार्यों को पूरा करता हूँ, जो मुझे सौंपे जाते हैं।”

लेकिन तितली दम तोड़ रही थी। उसने अन्तिम बार अपने एक बचे हुए पंख को ऊपर उठाया और धीरे से नीचे झुका लिया, ताकि उसे फिर कभी न उठाना पड़े।

“अलविदा, दोनदोन प्यारे...” उसने कंपकंपाती आवाज में कहा और मर गई।

“मेरी ओर से आपको बेहतर स्वास्थ्य और सफल जीवन की शुभकामनाएं।” और रोबट ने पहले की तरह झनझनाते हुए अपना पैर फर्श पर दे मारा।

प्रदर्शनी हॉल में गहरा सन्नाटा छा गया। तितली रोबट के पैर तले निर्जीव पड़ी थी। सुबह हो चुकी थी। प्रदर्शनी हॉल खुला। जिज्ञासु दर्शकों की भीड़ अन्दर घुस आई और रोबट को घेरकर खड़ी हो गई।

“तुम्हारा नाम क्या है?” पहला प्रश्न किया गया।

“उसने मुझे दोनदोन प्यारे कहा।...” रोबट तो तितली की यादों में खोया था। उसके लौह हृदय में एक टीस-सी उठी। “मुझे अब फिर कोई ‘दोनदोन प्यारे’ न कहेगा।”

“तुम्हारा जन्मस्थान?” दूसरा प्रश्न किया गया।

“वह पांगुर के वृक्ष पर जन्मी थी ... लेकिन मैंने तो न पांगुर के वृक्ष देखे हैं, न उनके फूल ही। ...”
रोबट की आंख डबडबा आई।

उसने तीसरे और यहां तक कि सभी प्रश्नों के उत्तर नहीं दिए। उस दिन न उसने हाथ उठाए न पैर पटके और न नारंगी आंख ही भपकी।

रोबट के मुख्य अभियन्ता को बुलाया गया। उसने दोनदोन का सीना ठकठकाया, हरेक पेच ठीक से कसा और सस्त आवाज में बोला:

“हां, तो बताओ, रोबटों का भविष्य कैसा है?”

“पां-गु-र...” रोबट बड़ी मुश्किल से बस इतना ही कह पाया कि उसके सीने में तेज कड़कड़ाहट हुई और कुछ टूट-सा गया।

मुख्य अभियन्ता का चेहरा उतर गया। उसने कहा:

“खेद है कि हमारा रोबट खराब हो गया। ... हमेशा ठीक-ठाक रहता था, उसके काम में कभी कोई गड़बड़ी न थी। फिलहाल उसकी मरम्मत की जाएगी। अगर ठीक न हुआ तो उसे कूड़े में डालना होगा।”

रोबट को एक बड़े-से सफ़ेद खोल से ढंक दिया गया और ऊपर एक तस्ती लटका दी गई: “मरम्मत के लिए।”

सफ़ेद आवरण के भीतर मौत का सन्नाटा छाया रहता था। लेकिन रात में जब पुष्पित पांगुर की खुशबू और पत्तियों की सरसराहटें खुली खिड़की से आते हवा के भोंकों के साथ प्रवेश करतीं तो लगता कि सफ़ेद आवरण के भीतर से बहुत धीरे-धीरे टूटे-बिखरे स्वर सुनाई पड़ रहे हैं। शायद कोई बोलना सीख रहा है:

“नन्ही ... ति ... त-ली ... पां ... गु-र ... द ... र्द ...”

प्यारे बच्चो, ये कथाएं आपको कैसी लगीं?
अच्छी हैं न? हमें अपनी राय लिखना। इसे जानकर
हमें बड़ी खुशी होगी और हम आपकी पसंद की
नयी-नयी किताबें छापेंगे।

हमारा पता है:

रादुगा प्रकाशन,

१७, जूबोव्स्की बुल्वार,

मास्को, सोवियत संघ

राहुगा प्रकाशन

वि० जिलिन्स्काइते

रीबट और तितली

